खुशहाल समाजों की रैंकिंग से भारत भ्रमित न हों

143 देशों के विश्व खुशहाली रैंकिंग में भारत 126वें स्थान पर रहा है जिसमें फिनलैंड ने लगातार छठीं बार सर्वोच्च स्थान पाया है। यह बात भी गौर करने की है कि भारत में दस अंकों का सुधार हुआ है, फिर भी भारत के लिये आश्चर्यकारी एवं विचारणीय है। फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश करार दिया गया है, पर गौर कीजिए, वहां आबादी सिर्फ 56 लाख है। मतलब, इस देश की चुनौतियां बहुत कम हैं। धार्मिक वातावरण ऐसा है कि विद्वेष की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। छोटा राष्ट्र होने की वजह से सरकारों के सामने समस्याएं कम है। अतः फिनलैंड की स्थिति अच्छी है, पर उसकी तुलना भारत जैसे 140 करोड़ आबादी वाले देश से कैसे हो सकती है? यह बहस का विषय है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित इस वार्षिक रिपोर्ट में नॉर्डिक देशों ने 10 सबसे खुशहाल देशों में अपना स्थान बनाए रखा है। फिनलैंड के बाद डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं। इन सभी देशों में समाज समस्यामुक्त एवं काफी सुलझा हुआ है और विविधता वहां ज्यादा समस्याएं पैदा नहीं करती है। देखने की बात है कि खुशहाली की रिपोर्ट विगत एक दशक से भी ज्यादा समय से जारी हो रही है और पहली बार अमेरिका और जर्मनी जैसे विकसित देशों को शीर्ष 20 देशों में स्थान नहीं मिला है। पाकिस्तान पिछली बार 108वें स्थान पर था, इस बार 122वें पर आ गया है, पर तब भी भारत से चार पायदान ऊपर है। जिस देश में खूब महंगाई है, जहां की जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है, जहां धार्मिक उन्माद व्यापक है, जो आतंकवाद को प्रोत्साहन देता है, वह देश भी अगर हमसे खुशहाल है, तो ऐसी खुशहाली मापने के तरीकों पर विचार होना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि खुशहाली को तय करने के पैमानों में अवश्य ही कोई पूर्वाग्रह या आग्रह है। क्योंकि ऋण की गुहार लगाता एवं त्राहिमाम करता पाकिस्तान को 122वें स्थान की रैंकिंग देना विडंबनापूर्ण एवं विसंगति मय हैं, जो इस सूचकांक के महत्व को घटा देती हैं। यह विडंबना ही है कि धार्मिक पाबंदियों वाला कुवैत दुनिया का 13वां सबसे खुशहाल देश है। ऐसी अतार्किक सूची देखकर अफसोस एवं आश्चर्य भी होता है और चिंता भी होती है। क्या खुशहाली को धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता के आधार पर ज्यादा नहीं देखा जाना चाहिए? खुशहाली को केवल आर्थिक समृद्धि और संसाधनों की अधिकता में घटाकर देखना सही नहीं है। खुशहाली की रैंकिंग को देखकर भारत को कतई भ्रमित नहीं होना चाहिए।

सिकुड़ता वसंत पारिस्थितिकी तंत्र के लिए चुनौती

दीपिका अरोड़ा

तापमान का निरंतर बढ़ना, धरती पर संकट के संदर्भ में एक स्पष्ट चेतावनी है। जीवाश्म ईंधन जलने से कार्बन डाइऑक्साइड का बढ़ता स्तर इसका प्रमुख कारण रहा। 2023 के मध्य 90 फीसदी से अधिक महासागरीय जल में कम से कम एक बार लू का अनुभव किया गया। गौरतलब है, 1950 के बाद से ग्लेशियरों में बर्फ रिकॉर्ड स्तर पर गायब हो रही है। अंटार्कटिका की समुद्री बर्फ घुलकर, अब तक के सबसे छोटे आकार में पहुंच गई है। इस वायुमंडलीय विक्षोभ के विषय में भारतवर्ष भी अपवाद नहीं। 1970 के बाद से ग्लोबल वार्मिंग को लेकर, अमेरिका स्थित क्लाइमेट सेंट्रल के शोधकर्ताओं द्वारा भारत के संदर्भ में किए गए विश्लेषण के मुताबिक, भारत में सर्दियों का मौसम तेजी से गर्म हो रहा है; वसंत ऋतु की अवधि लगातार सिमट रही है। देश के कई भागों में तो वसंत ऋतु जैसे गायब ही हो चुकी है। शोधकर्ताओं के अनुसार, सिकुड़ता वसंत भविष्य में पारिस्थितिकी तंत्र के लिए नई चुनौतियां उत्पन्न कर सकता है। जैसा कि इस वर्ष उत्तर भारत में जनवरी की ठंड के साथ कुछ दिन हल्की गर्मी भी महसूस की गई, वहीं फरवरी में बढ़ती गर्मी के साथ मार्च में रहने वाली गुलाबी ठंड गायब रही। कुछ दिन की हल्की ठंडक को छोड़कर मौसम सामान्यतः गर्म रहा, जिसका सीधा असर फरवरी-मार्च में फूल खिलने की प्रक्रिया पर पड़ा। गेंदा, कनेर, गुड़हल, गुलाब में तीव्र बदलाव देखने को मिले।

यह चिंता का विषय है कि मनुष्य की लिप्साओं ने वायुमंडलीय पर्यावरण को प्रदूषित करते हुए धरती को संकट के कगार पर ला छोड़ा है। विगत वर्षों से अनवरत बढ़ता वायुमंडलीय तापमान आज एक चिंताजनक मुद्दा बन चुका है। विगत वर्ष ग्रीन हाउस गैसों, भूमि व जलीय तापमान तथा ग्लेशियरों एवं समुद्री बर्फ के पिघलने में हुई रिकॉर्डतोड़ वृद्धि का उल्लेख करते हुए, हाल ही में संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने ह्यग्लोबल वार्मिंगह्ल के संबंध में रेड अलर्ट जारी किया। इसके तहत, वर्ष 2023 को अब तक का सर्वाधिक गर्म वर्ष घोषित किया गया।

विशेषज्ञों के मुताबिक, गत वर्ष ग्रीष्मकालीन अवधि अन्य वर्षों की अपेक्षा अधिक रही। ग्लेशियरों के स्वास्थ्य पर इसका प्रतिकूल प्रभाव देखने में आया, ध्रुवीय बर्फ पिघलने के समस्त रिकार्ड ध्वस्त होते दिखाई पड़े। विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने ह्यवैश्विक जलवायु की स्थितिह्ल रिपोर्ट पर चिंता जताते हुए, बहुप्रतीक्षित जलवायु लक्ष्य को खतरे में बताया।

यूरोपीय संघ की कॉपरनिकस क्लाइमेट सर्विस के अनुसार, मार्च 2023 से फरवरी 2024 तक, 12 माह की अवधि में तापमान 1.5 डिग्री सीमा से आगे निकल गया, जो औसतन 1.56 सेल्सियस (2.81 फॉरेनहाइट) रहा है। 2023 में वर्ष की रिकॉर्ड गर्म शुरूआत ने 12 महीने के औसत स्तर में वृद्धि कर दी।

तापमान का निरंतर बढ़ना, धरती पर संकट के संदर्भ में एक स्पष्ट चेतावनी है। जीवाश्म ईंधन जलने से कार्बन डाइऑक्साइड का बढ़ता स्तर इसका प्रमुख कारण रहा। 2023 के मध्य 90 फीसदी से अधिक महासागरीय जल में कम से कम एक बार लू का अनुभव किया गया। गौरतलब है, 1950 के बाद से ग्लेशियरों में बर्फ रिकॉर्ड स्तर पर गायब हो रही है। अंटार्कटिका की समुद्री बर्फ घुलकर, अब तक के सबसे छोटे आकार में पहुंच गई है।

इस वायुमंडलीय विक्षोभ के विषय में भारतवर्ष भी अपवाद नहीं। 1970 के बाद से ग्लोबल वार्मिंग को लेकर, अमेरिका स्थित क्लाइमेट सेंट्रल के शोधकर्ताओं द्वारा भारत के संदर्भ में किए गए विश्लेषण के मुताबिक, भारत में सर्दियों का मौसम तेजी से गर्म हो रहा है; वसंत ऋतु की अवधि लगातार सिमट रही है। देश के कई भागों में तो वसंत ऋतु जैसे गायब ही हो चुकी है। शोधकर्ताओं के अनुसार, सिकुड़ता वसंत भविष्य में पारिस्थितिकी तंत्र के लिए नई चुनौतियां उत्पन्न कर सकता है।

जैसा कि इस वर्ष उत्तर भारत में जनवरी की ठंड के साथ कुछ दिन हल्की गर्मी भी महसूस की गई, वहीं फरवरी में बढ़ती गर्मी के साथ मार्च में रहने वाली गुलाबी ठंड गायब रही। कुछ दिन की हल्की ठंडक को छोड़कर मौसम सामान्यतः गर्म रहा, जिसका सीधा असर फरवरी-मार्च में फूल खिलने की प्रक्रिया पर पड़ा। गेंदा, कनेर, गुड़हल, गुलाब में तीव्र बदलाव देखने को मिले।

अध्ययन के तहत, इस वर्ष राजस्थान में जनवरी-फरवरी के तापमान में 2.6 डिग्री सेल्सियस का अंतर रहा। केंद्रशासित प्रदेशों तथा कुल नौ राज्यों राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, लद्दाख, पंजाब, जम्मू-कश्मीर तथा उत्तराखंड में जनवरी-फरवरी के दौरान 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक का अंतर देखा गया। पूर्वोत्तर राज्यों, मणिपुर में यह 2.3 डिग्री व सिक्किम में 2.4 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसमी चक्र में यह बदलाव वसंत लुप्त होने की आशंकाओं का प्रतीक है।

अध्ययन के अनुसार, समस्त परिवर्तन ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही देखने को मिल रहे हैं। वर्ष 1850 के बाद से वैश्विक औसत तापमान 1.3 डिग्री सेल्सियस से अधिक बढ़ गया है, जिससे जलवायु प्रभावित हुई। तभी वर्ष 2023 रिकॉर्ड स्तर पर गर्म रहा।

संयुक्त राष्ट्र एजेंसी के महासचिव सेलेस्टे साउलो के अनुसार, पेरिस समझौते में सभी देशों द्वारा पृथ्वी के तापमान में वृद्धि को औद्योगीकरण के पूर्व के स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस (2.7 डिग्री फारेनहाइट) से अधिक नहीं होने देने पर सहमति जताने के बावजूद आज पृथ्वी 1.5 डिग्री सेल्सियस की निचली (लक्ष्मण रेखा) सीमा के समीप होना, निश्चय ही चिंताजनक है। यानी विनाशकारी प्रवृत्ति को उलटने हेतु किए गए प्रयास अपर्याप्त हैं।

निरंतर बढ़ता वायुमंडलीय तापमान पर्यावरणीय संतुलन के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। वर्ष पर्यंत जमे रहने वाले हिमखंड पिघलने से जहां जलीय आपदाओं में वृद्धि हुई है, वहीं आने वाले दिनों में जलसंकट उपस्थित होने की संभावनाएं भी बढ़ी हैं। पर्यावरणीय संतुलन पर गहराता संकट वास्तव में मानवीय स्वार्थ का ही परिणाम है, जिसका खामियाजा विभिन्न रूपों में समूची सृष्टि को चुकाना पड़ रहा है। हमारी अनंत लिप्साओं ने आज पृथ्वी ग्रह को विनाश के निकट पहुंचा दिया है। यदि अब भी हम प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता नहीं दिखाते अथवा वायुमंडलीय तापमान को गंभीरतापूर्वक नहीं लेते तो वह दिन दूर नहीं, जब धरती के अस्तित्व का संकट गहरा हो जाएगा!

अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी से उपजते सवाल

कमलेश पांडेय

आपको याद होगा कि अरविंद केजरीवाल और आप पार्टी का जन्म यूपीए सरकार के दूसरे कार्यकाल में चले एक भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन की कोख से ही हुआ है। ऐसे में आबकारी नीति घोटाले में आप मुखिया और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी अपने आप में एक यक्ष प्रश्न है। वह यह कि भारतीय सियासत वह काजल की कोठरी है, जहां से बेदाग निकलना नामुमकिन है। क्योंकि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पास तो कोई विभाग भी नहीं था, फिर भी वो फंस गए। इस बात में कोई दो राय नहीं कि भ्रष्टाचार के मामले में भारतीय प्रशासन द्वारा जो पीक एंड चूज कार्रवाई की जाती है, वह भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं है। चाहे न्यायपालिका हो या मीडिया, प्रशासनिक तिकड़म को समझने में प्रायः विफल प्रतीत हुए हैं! रही बात विधायिका की तो प्रशासनिक अधिकारियों को इस तरह की मनमानी करने की छूट देने के लिए सत्ता पक्ष के साथ-साथ विपक्ष भी कम जिम्मेदार नहीं है। क्योंकि जिन कानूनों के आधार पर ऐसी कार्रवाई की जाती है। उसे अंतिम रूप तो आखिर संसद या विधान मंडलों में ही दी जाती है। सच कहूं तो देश में भ्रष्टाचार 'हरि अनंत, हरि कथा अनंता' की तरह सर्वव्यापी है। प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों की समझदारी या मिलीभगत से सही को गलत और गलत को सही ठहराने के बहुतेरे उदाहरण हर किसी को उसके आसपास में ही मिल जाएंगे। बावजूद इसके भ्रष्टाचार रोकने के लिए प्रशासनिक तिकड़म जारी रहती है। उसने अरविंद केजरीवाल को भ्रष्टाचारियों की कतार में खड़ा करके इस बात के संकेत दे दिए हैं कि 'भ्रष्टाचार' को 'शिष्टाचार' के इतर तरह तरह से परिभाषित करने का खेल न कभी चला है और न ही चलने दिया जाएगा। इसकी सूची में बलि का बकरा अक्सर राजनेता बनेंगे, जबकि उनसे जुड़े अधिकारियों की भी गिरफ्तारी साथ साथ होनी चाहिए। क्योंकि 'पवित्र पाप' यानी भ्रष्टाचार कोई भी राजनेता अकेला नहीं कर सकता, जब तक कि अधिकारियों का एक सलाहकार वर्ग या जिम्मेदार वर्ग उनसे मिला हुआ न हो।

यह ठीक है कि आप नेता अरविंद केजरीवाल को अब प्रमुख विपक्षी दलों का साथ मिल गया है, जिससे उनकी परेशानी कुछ कम होगी। लेकिन केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को इससे लेने के देने भी पड़ सकते हैं। क्योंकि अरविंद केजरीवाल का आजतक का इतिहास यही रहा है कि अपने विरुद्ध पैदा किए हुए हर मुद्दे का सियासी लाभ अंततोगत्वा उन्होंने ही उठाया है। इस बार भी वो यही करेंगे! हो सकता है कि दो राज्यों में अपनी सरकार बनाने वाली पहली विपक्षी पार्टी आप, जिसे अब राष्ट्रीय पार्टी का भी दर्जा मिल चुका है, अपने मिशन 2024 के तहत अपना देशव्यापी विस्तार कर ले और अपने सांसदों की संख्या 2 अंकों में लेते आये। यदि ऐसा होता है तो यह उसकी बड़ी उपलब्धि होगी।

आपको पता होना चाहिए कि अरविंद केजरीवाल एकदम हठी राजनेता है। वो गिरफ्तार हो गए, लेकिन त्यागपत्र नहीं दिया। इससे मुख्यमंत्री रहते हुए गिरफ्तार होने वाले वो पहले राजनेता बन गए। आगे भी वो कोई बड़ा गुल अवश्य खिलाएंगे। आप नेता सत्येंद्र जैन, मनीष सिसोदिया, संजय सिंह के बाद अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी से इस बात को बल मिलता है कि 'आप' नेताओं की अग्रिम पंक्ति को ईडी ने लगभग खाली कर दिया। हालांकि, उसकी दूसरी पंक्ति के नेता आपस में कितना सामंजस्य बिठाकर अगली रणनीति बनाएंगे, सारी भावी सफलता इस बात पर ही निर्भर करेगी।

सत्ता पक्ष के साथ-साथ विपक्ष भी कम जिम्मेदार नहीं है। क्योंकि जिन कानूनों के आधार पर ऐसी कार्रवाई की जाती है। उसे अंतिम रूप तो आखिर संसद या विधान मंडलों में ही दी जाती है। सच कहूं तो देश में भ्रष्टाचार 'हरि अनंत, हरि कथा अनंता' की तरह सर्वव्यापी है। प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों की समझदारी या मिलीभगत से सही को गलत और गलत को सही ठहराने के बहुतेरे उदाहरण हर किसी को उसके आसपास में ही मिल जाएंगे। बावजूद इसके भ्रष्टाचार रोकने के लिए प्रशासनिक तिकड़म जारी रहती है। उसने अरविंद केजरीवाल को भ्रष्टाचारियों की कतार में खड़ा करके इस बात के संकेत दे दिए हैं कि 'भ्रष्टाचार' को 'शिष्टाचार' के इतर तरह तरह से परिभाषित करने का खेल न कभी चला है और न ही चलने दिया जाएगा।

मेरा स्पष्ट मानना है कि इस घटनाक्रम से आप पार्टी और इंडी गठबंधन को भारी क्षति के विपरीत काफी लाभ भी हो सकता है, बशर्ते कि पूरे घटनाक्रम का प्रस्तुतीकरण जनमानस में सही तरीके से किया जाए और सत्ता पक्ष को लाभ पहुंचाने की फितरत से हुई इस प्रशासनिक कार्रवाई के विरुद्ध हर गली-कूची के भ्रष्टाचार की फोटो और उसकी आधिकारिक अनदेखी के विरुद्ध पम्पलेट वितरण अभियान शुरू किया जाए।

वहीं, जगह जगह सक्षम माननीय न्यायालय को पत्र भेजकर उसकी प्रतिलिपि सोशल मीडिया पर पोस्ट की जाए और स्थानीय मीडिया को भेजी जाए, ताकि भ्रष्टाचार विरोधी जनजागृति पैदा हो सके। वैसे तो लोकल मीडिया में ऐसे प्रकरण हमेशा प्रकाश में आते रहते हैं, लेकिन उन पर प्रशासनिक खामोशी के खिलाफ न्यायालय जाने के कम ही मामले प्रकाश में आते हैं। शायद इसलिए कि भ्रष्टाचार के हमाम में कहीं न कहीं हर कोई नंगा है। अमूमन विपक्षी दल भी ऐसे मामलों में धरना-प्रदर्शन के अलावा ज्यादा दूरदर्शी रवैये नहीं अपनाते, जिसके चलते ठोस कार्रवाई नहीं हो पाती। इससे जनता अक्सर परेशान रहा करती है। इसलिए भ्रष्टाचार का पुरजोर विरोध करना जरूरी है ताकि सत्ता पक्ष के इशारे पर पक्षपात पूर्ण कार्रवाई करने वाले भारतीय प्रशासन को चुनावों में बेनकाब करते हुए जनादेश मांगा जाए।

आपको याद होगा कि अरविंद केजरीवाल और आप पार्टी का जन्म यूपीए सरकार के दूसरे कार्यकाल में चले एक भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन की कोख से ही हुआ है। ऐसे में आबकारी नीति घोटाले में आप मुखिया और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी अपने आप में एक यक्ष प्रश्न है। वह यह कि भारतीय सियासत वह काजल की कोठरी है, जहां से बेदाग निकलना नामुमकिन है। क्योंकि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पास तो कोई विभाग भी नहीं था, फिर भी वो फंस गए।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि भ्रष्टाचार के मामले में भारतीय प्रशासन द्वारा जो पीक एंड चूज कार्रवाई की जाती है, वह भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं है। चाहे न्यायपालिका हो या मीडिया, प्रशासनिक तिकड़म को समझने में प्रायः विफल प्रतीत हुए हैं! रही बात विधायिका की तो प्रशासनिक अधिकारियों को इस तरह की मनमानी करने की छूट देने के लिए सत्ता पक्ष के साथ-साथ विपक्ष भी कम जिम्मेदार नहीं है। क्योंकि जिन कानूनों के आधार पर ऐसी कार्रवाई की जाती है। उसे अंतिम रूप तो आखिर संसद या विधान मंडलों में ही दी जाती है।

सच कहूं तो देश में भ्रष्टाचार 'हरि अनंत, हरि कथा अनंता' की तरह सर्वव्यापी है। प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों की समझदारी या मिलीभगत से सही को गलत और गलत को सही ठहराने के बहुतेरे उदाहरण हर किसी को उसके आसपास में ही मिल जाएंगे। बावजूद इसके भ्रष्टाचार रोकने के लिए प्रशासनिक तिकड़म जारी रहती है। उसने अरविंद केजरीवाल को भ्रष्टाचारियों की कतार में खड़ा करके इस बात के संकेत दे दिए हैं कि 'भ्रष्टाचार' को 'शिष्टाचार' के इतर तरह तरह से परिभाषित करने का खेल न कभी चला है और न ही चलने दिया जाएगा। इसकी सूची में बलि का बकरा अक्सर राजनेता बनेंगे, जबकि उनसे जुड़े अधिकारियों की भी गिरफ्तारी साथ साथ होनी चाहिए। क्योंकि 'पवित्र पाप' यानी भ्रष्टाचार कोई भी राजनेता अकेला नहीं कर सकता, जब तक कि अधिकारियों का एक सलाहकार वर्ग या जिम्मेदार वर्ग उनसे मिला हुआ न हो।

यह ठीक है कि आप नेता अरविंद केजरीवाल को अब प्रमुख विपक्षी दलों का साथ मिल गया है, जिससे उनकी परेशानी कुछ कम होगी। लेकिन केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को इससे लेने के देने भी पड़ सकते हैं। क्योंकि अरविंद केजरीवाल का आजतक का इतिहास यही रहा है कि अपने विरुद्ध पैदा किए हुए हर मुद्दे का सियासी लाभ अंततोगत्वा उन्होंने ही उठाया है। इस बार भी वो यही करेंगे! हो सकता है कि दो राज्यों में अपनी सरकार बनाने वाली पहली विपक्षी पार्टी आप, जिसे अब राष्ट्रीय पार्टी का भी दर्जा मिल चुका है, अपने मिशन 2024 के तहत अपना देशव्यापी विस्तार कर ले और अपने सांसदों की संख्या 2 अंकों में लेते आये। यदि ऐसा होता है तो यह उसकी बड़ी उपलब्धि होगी।

आपको पता होना चाहिए कि अरविंद केजरीवाल एकदम हठी राजनेता है। वो गिरफ्तार हो गए, लेकिन त्यागपत्र नहीं दिया। इससे मुख्यमंत्री रहते हुए गिरफ्तार होने वाले वो पहले राजनेता बन गए। आगे भी वो कोई बड़ा गुल अवश्य खिलाएंगे। आप नेता सत्येंद्र जैन, मनीष सिसोदिया, संजय सिंह के बाद अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी से इस बात को बल मिलता है कि 'आप' नेताओं की अग्रिम पंक्ति को ईडी ने लगभग खाली कर दिया। हालांकि, उसकी दूसरी पंक्ति के नेता आपस में कितना सामंजस्य बिठाकर अगली रणनीति बनाएंगे, सारी भावी सफलता इस बात पर ही निर्भर करेगी।

https://t.me/AllNewsPaper

अफगान-पाक टकराव के निहितार्थ

पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने धमकाया है कि यदि काबुल किसी तरह की सैन्य कार्रवाई करता है, तो हम उस कॉरीडोर को बंद कर देंगे, जिसके बजरिये भारत, अफगानिस्तान से व्यापार करता है। इंडिया से अफगानिस्तान तक माल पहुंचाने का एक रूट चाबहार पोर्ट है, जो पाकिस्तान की सरहद को नहीं छूता। जब तक ईरान से अफगानिस्तान के बेहतर रिश्ते हैं, यह मार्ग महफूज है। इस मार्ग को चाबहार-हाजीगाक कॉरीडोर कहते हैं। दूसरा, हवाई मार्ग है, जो 2016 से काबुल और कंधहार को भारत से जोड़ता रहा है। तो क्या पाकिस्तान इस तरह का बयान देकर भारत को इन्वॉल्व करना चाहता है? 16 मार्च 2024 को उत्तरी वजीरिस्तान में एक पाकिस्तानी चौकी पर आत्मघाती हमले में दो अधिकारियों समेत सात सैनिकों की जान चली गई। इसकी जिम्मेदारी तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के ह्यबहादुर समूहह्य ने ली थी। जवाब में पाकिस्तान ने 18 मार्च 2024 को अफगानिस्तान के अंदर ह्यबहादुर समूहह्य के ठिकानों को निशाना बनाया। इस सर्जिकल स्ट्राइक ने काबुल-इस्लामबाद के संबंधों को और अधिक तनावपूर्ण बना दिया है। इससे क्षेत्रीय अस्थिरता की आशंका बढ़ गई है। लोगों को इसका डर है कि पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच फुल स्केल वॉर न छिड़ जाए।

तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के साथ-साथ, बहादुर समूह से जुड़े आतंकवादियों ने पाकिस्तानी सुरक्षा बलों पर कई हाई-प्रोफाइल हमले किये थे, जिनमें दा गज्यानो कारवां, दा सुफियानो कारवां और जैश फुरसान मुहम्मद शामिल हैं। समूह की पहुंच उत्तरी वजीरिस्तान से आगे तक फैली हुई है, जो बन्नू, लक्की मारवात, डेरा इस्माइल खान और टैंक जैसे निकटवर्ती जिलों में सुरक्षा बलों के लिए संवेदनशील है। इससे पहले, 5 फरवरी 2024 को खैबर पख़्तूनख्वा (केपी) के डेरा इस्माइल खान के छोड़वान पुलिस स्टेशन पर एक हमले में पाक सुरक्षाबलों के 10 लोग मारे गये थे। 2023 से अब तक के आतंकी हमले में 991 लोग मारे जा चुके हैं। अलग-अलग घटनाओं को जोड़ दें, तो घायलों की संख्या 1500 पार है। इसमें 16 मार्च 2024 को उत्तरी वजीरिस्तान में आत्मघाती बम विस्फोट, 26 नवंबर 2023 को बन्नू के बकाकेहल क्षेत्र में आत्मघाती बम विस्फोट और 31 अगस्त 2023 को बन्नू के जानी खेल क्षेत्र में एक सैन्य काफिले पर आत्मघाती हमला भी शामिल है। फिलहाल पैदा तनाव की वजह हाफिज गुल बहादुर ही है। वह अफगानिस्तान की सीमा से लगे उत्तरी वजीरिस्तान में उस्मानजई वजीर जनजाति के माडा खेल कबीले से आता है। हाफिज गुल बहादुर के पूर्वज 1930 और 1940 के दशक में ब्रिटिश कब्जे के खिलाफ प्रतिरोध के लिए जाने जाने जाते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि हाफिज गुल बहादुर जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम फजल (जेयूआई-एफ) की छात्र शाखा से जुड़े थे। 2001 के अंत में अफगानिस्तान में अमेरिका के नेतृत्व वाले हस्तक्षेप के बाद, ये आतंकवादी सीमा पार उत्तरी वजीरिस्तान सहित पाकिस्तान के कबिलाई इलाकों में भूमिगत हो गए। यही लोग कालांतर में पाकिस्तान के लिए सिरदर्द साबित हुए। राष्ट्रपति मुशर्रफ पर हत्या के दो प्रयासों और अमेरिका के बढ़ते दबाव के बाद, पाकिस्तान ने 2004 में इस क्षेत्र में अभियान शुरू किया। 2004 में स्थानीय तालिबान नेता, नेक मुहम्मद की हत्या के बाद ऑपरेशन का विस्तार हुआ। हालांकि, 2006 के मध्य तक, हाफिज गुल बहादुर ने अपना रुख बदल दिया और सरकार के साथ शांति समझौता कर लिया। बहादुर की पाकिस्तान से दोस्ती से कुछ विदेशी आतंकवादी नाराज हो गए, जैसे कि इस्लामिक मूवमेंट ऑफ उज्बेकिस्तान (आईएमयू) के आतंकवादी, जिन्होंने उन पर पाकिस्तान का पक्ष लेने का आरोप लगाया। इस बीच, हाफिज गुल बहादुर ने उस इलाके में वर्चस्व के लिए कर वसूली और सजा के मकसद से एक शूरा परिषद की स्थापना की। हालांकि, पाक सरकार से समझौते के बावजूद

हिंदी साहित्य में होली के रंग

आरती कुमारी

अकस्मात कुछ सखियां मिलकर श्रीकृष्ण को घेर लेती हैं और स्वर्णघट में भरा सुगंधित रंग उनके सिर पर उंडेल देती हैं। कुछ सखियां उन पर कुमकुम केसर छिडक देती हैं। इस प्रकार ऊपर से नीचे तक रंग, अबीर गुलाल से रंगे हुए श्रीकृष्ण ऐसे लग रहे हैं जैसे सांझ के समय आकाश में बादल छा गए हों। फाग के रंगों से दसों दिशाएं परिपूर्ण हो गई हैं। आकाश से देवतागण अपना विचरण भूलकर श्याम सुन्दर का फाग विनोद देखने के लिए रुक गए हैं तथा आनंदित हो रहे हैं।

मीराबाई श्रीकृष्ण को अपना स्वामी मानती थीं। उन्होंने होली और श्रीकृष्ण के बारे में अनेक रचनाएं लिखी हैं। उनकी रचनाओं में आध्यात्मिक संदेश भी मिलता है। वे कहती हैं-

फागुन के दिन चार होली खेल मना रे।।

बिन करताल पखावज बाजै अणहदकी झणकार रे।

बिन सुर राग छतीसूं गावै रोम रोम रणकार रे।।

सील संतोखकी केसर घोली प्रेम प्रीत पिचकार रे।

उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे।।

घटके सब पट खोल दिये हैं लोकलाज सब डार रे।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरणकंवल बलिहार रे।।

इस पद में मीराबाई ने होली एवं फागुन के माध्यम से समाधि का उल्लेख किया है। वे कहती हैं कि फागुन मास में होली खेलने के चार दिन ही होते हैं अर्थात बहुत अल्प समय होता है।

होली कवियों का प्रिय त्योहार है। यह त्योहार उस समय आता है जब चारों दिशाओं में प्रकृति अपने सौन्दर्य के चरम पर होती है। उपवनों में रंग-बिरंगे पुष्प खिले हुए होते हैं। होली प्रेम का त्योहार माना जाता है, क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण और राधा को होली अत्यंत प्रिय थी। भक्त कवियों एवं कवयित्रियों ने होली पर असंख्य रचनाएं लिखी हैं। कृष्ण भक्त कवि रसखान ने ब्रज की होली पर अत्यंत सुंदर रचनाएं लिखी हैं। इनमें श्रीकृष्ण की राधा के साथ खेली जाने वाली होली प्रमुख है। वे कहते हैं-

मिली खेलत फाग बढयो अनुराग सुराग सनी सुख की रमकै।
कर कुंकुम लै करि कंजमुखि प्रिय के दृग लावन को धमकै।।
रसखानि गुलाल की धुंधर में ब्रजबालन की दुति यौं दमकै।
मनौ सावन सांझ ललाई के मांझ चहुं दिस तें चपला चमकै।।

अर्थात श्रीकृष्ण राधा और गोपियों के साथ होली खेल रहे हैं। इस खेल के साथ-साथ उनमें प्रेम बढ़ रहा है। कमल के पुष्प के समान सुंदर मुख वाली राधा श्रीकृष्ण के मुख पर कुमकुम लगाने की चेष्टा कर रही है। वह गुलाल फेंकने का अवसर खोज रही है। चहुंओर गुलाल ही गुलाल दिखाई दे रहा है। इस गुलाल के कारण ब्रजबालाओं की देहयष्टि इस प्रकार दमक रही है जैसे सावन मास के सायंकाल में सूर्यास्त से लाल हुए आकाश में चारों ओर बिजली चमकती रही हो।

कृष्ण भक्त सूरदास ने भी श्रीकृष्ण और राधा की होली पर असंख्य रचनाएं लिखी हैं। होली उनकी रासलीलाओं में महत्वूर्ण स्थान रखती है। वे कहते हैं-

हरि संग खेलति है सब फाग।
इहिं मिस करति प्रगट गोपी, उर अंतर कौ अनुराग।।
सारी पहिरि सुरंग, कसि कचुकि, काजर दै दै नैन।
बनि बनि निकसि निकसि भई ठाढ़ी, सुनि माधौ के बैन।।
डफ, बांसुरी रुंज अरु महुअरि, बाजत ताल मृदंग।
अति आनंद मनोहर बानी, गावत उठति तरंग।।
एक कोध गोविंद ग्वाल सब, एक कोध ब्रज नारि।
छांड़ि सकुच सब देति परस्पर, अपनी भाई गारि।।
मिलि दस पांच अली कृष्नहिं, गहि लावतिं अचकाइ।
भरि अरगजा अबीर कनकघट, देति सीस तै नाइ।।
छिरकतिं सखी कुमकुमा केसरि, भुरकतिं बदनधूरि।
सोभित है तन सांझ-समै-घन, आए है मनु पूरि।।
दसहूं दिसा भयौ परिपूरन, ह्यसूरह्न सुरंग प्रमोद।
सुर विमान कौतूहल भूले, निरखत स्याम विनोद।

अर्थात श्रीकृष्ण के साथ सब होली खेल रहे हैं। फागुन के रंगों के माध्यम से गोपियां अपने हृदय का प्रेम प्रकट कर रही हैं। वे अति सुन्दर साड़ी एवं चित्ताकर्षक चोली पहन कर तथा आंखों में काजल लगाकर श्रीकृष्ण की पुकार सुनकर होली खेलने के लिए अपने घरों से बाहर आ गईं हैं। डफ, बांसुरी, रुंज, ढोल एवं मृदंग बजने लगे हैं। सब लोग आनंदित होकर मधुर स्वरों में गा रहे हैं। एक ओर श्रीकृष्ण और ग्वाल बाल डटे हुए हैं तो दूसरी ओर समस्त ब्रज की महिलाएं संकोच छोड़कर एक दूसरे को मीठी गालियां दे रहे हैं तथा छेड़छाड़ चल रही है। अकस्मात कुछ सखियां मिलकर श्रीकृष्ण को घेर लेती हैं और स्वर्णघट में भरा सुगंधित रंग उनके सिर पर उंडेल देती हैं। कुछ सखियां उन पर कुमकुम केसर छिडक देती हैं। इस प्रकार ऊपर से नीचे तक रंग, अबीर गुलाल से रंगे हुए श्रीकृष्ण ऐसे लग रहे हैं जैसे सांझ के समय आकाश में बादल छा गए हों। फाग के रंगों से दसों दिशाएं परिपूर्ण हो गई हैं। आकाश

से देवतागण अपना विचरण भूलकर श्याम सुन्दर का फाग विनोद देखने के लिए रुक गए हैं तथा आनंदित हो रहे हैं।

मीराबाई श्रीकृष्ण को अपना स्वामी मानती थीं। उन्होंने होली और श्रीकृष्ण के बारे में अनेक रचनाएं लिखी हैं। उनकी रचनाओं में आध्यात्मिक संदेश भी मिलता है। वे कहती हैं-

फागुन के दिन चार होली खेल मना रे।।
बिन करताल पखावज बाजै अणहदकी झणकार रे।
बिन सुर राग छतीसूं गावै रोम रोम रणकार रे।।
सील संतोखकी केसर घोली प्रेम प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे।।
घटके सब पट खोल दिये हैं लोकलाज सब डार रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरणकंवल बलिहार रे।।

इस पद में मीराबाई ने होली एवं फागुन के माध्यम से समाधि का उल्लेख किया है। वे कहती हैं कि फागुन मास में होली खेलने के चार दिन ही होते हैं अर्थात बहुत अल्प समय होता है। इसलिए मन होली खेल ले अर्थात श्रीकृष्ण से प्रेम कर ले। करताल एवं पखावाज के बिना ही अनहद की झंकार हो रही है। मेरा मन बिना सुर एवं राग के आलाप कर रहा है। इस प्रकार रोम-रोम श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन है। मैंने अपने प्रिय से होली खेलने के लिए शील एवं संतोष रूपी केसर का रंग घोल लिया है। मेरा प्रिय प्रेम ही मेरी पिचकारी है। गुलाल के उड़ने के कारण संपूर्ण आकाश लाल हो गया है। मैंने अपने हृदय के द्वार खोल दिए हैं, क्योंकि अब मुझे लोक लाज का कोई तनिक भी भय नहीं है। मेरे स्वामी गोवर्धन पर्वत को अपनी अंगुली पर उठाने वाले भगवान श्रीकृष्ण हैं। मैंने उनके चरणों में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है।

श्रृंगार रस के विख्यात कवि बिहारीलाल को भी होली का त्योहार बहुत प्रिय था। उन्होंने भी होली को लेकर अनेक रचनाएं लिखी हैं। वे कहते हैं-

उड़ि गुलाल घूंघर भई तनि रह्यो लाल बितान।
चौरी चारु निकुंजनमें ब्याह फाग सुखदान।।
फूलन के सिर सेहरा, फाग रंग रंगे बेस।
भांवरहीमें दौड़ते, लै गति सुलभ सुदेस।।
भीण्यो केसर रंगसूं लगे अरुन पट पीत।
डालै चांचा चौकमें गहि बहियां दोउ मीत।।
रच्यौ रंगीली रैनमें, होरीके बिच ब्याह।
बनी बिहारन रसमयी रसिक बिहारी नाह।।

रीतिकालीन कवि पद्माकर ने भी होली का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। उन्होंने श्रीकृष्ण की राधा और गोपियों के साथ होली खेलने को लेकर अनेक सुन्दर रचनाएं लिखी हैं। वे कहते हैं-

फागु की भीर, अभीरिन ने गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी
भाय करी मन की पद्माकर उपर नाई अबीर की झोरी
छीने पीतांबर कम्मर तें सु बिदा कई दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाय कही मुसकाय ह्नलला फिर आइयो खेलन होरी।

अर्थात श्रीकृष्ण गोपियों के साथ होली खेल रहे हैं। पद्माकर कहते हैं कि राधा होली खेल रही भीड़ में से श्रीकृष्ण का हाथ पकड़कर भीतर ले जाती है। फिर वह अपने मन की करते हुए श्रीकृष्ण पर अबीर की झोली उलट देती है तथा उनकी कमर से पीतांबर छीन लेती है। वह श्रीकृष्ण को यूं ही नहीं छोड़ती, अपितु जाते हुए उनके गालों पर गुलाल लगाती है। वह उन्हें निहारते एवं मुस्कराते हुए कहती है कि लला फिर से आना होली खेलने।

हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाने वाले सूर्यकांत त्रिपाठी ह्यनिरालाह्न भी होली के रंगों से अछूते नहीं रहे। उन्होंने भी होली के रंगीले त्योहार पर कई कविताएं लिखी हैं। वे कहते हैं-

होली है भाई होली है
मौज मस्ती की होली है
रंगो से भरा ये त्यौहार
बच्चो की टोली रंग लगाने आयी है
बुरा ना मानो होली है

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी होली पर बहुत सी कविताएं लिखी हैं। वे खड़ी बोली के प्रथम कवि माने जाते हैं। उनकी होली की कविताएं बहुत ही सुन्दर एवं लुभावनी हैं। वे कहते हैं-

जो कुछ होनी थी, सब होली
धूल उड़ी या रंग उड़ा है
हाथ रही अब कोरी झोली
आंखों में सरसों फूली है
सजी टेसुओं की है टोली
पीली पड़ी अपत, भारत-भू,
फिर भी नहीं तनिक तू डोली

उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवि हरिवंश राय बच्चन की होली पर लिखी कविताएं बहुत ही सुन्दर हैं। इनमें प्रेम एवं विरह आदि के अनेक रंग हैं। वे कहते हैं-

तुम अपने रंग में रंग लो तो होली है
देखी मैंने बहुत दिनों तक
दुनिया की रंगीनी
किंतु रही कोरी की कोरी
मेरी चादर झीनी
तन के तार छूए बहुतों ने
मन का तार न भीगा
तुम अपने रंग में रंग लो तो होली है

https://t.me/AllNewsPaperPaid

चुनावी बांड पर विपक्षी दलों का शोर कितना उचित?

राकेश कुमार आर्य

इस समय इलेक्ट्रोल बॉन्ड को लेकर देश की राजनीति गरमा गई है। जिन राजनीतिक दलों को चंदा वसूली की इस प्रक्रिया से कोई लाभ नहीं हुआ है, वे उन राजनीतिक दलों पर आक्रामक दिखाई दे रहे हैं जिन्हें इस प्रकार की प्रक्रिया से पर्याप्त लाभ मिला है। आकंठ भ्रष्टाचार में डूबी कांग्रेस को इस समय बीजेपी पर हमला करने का अच्छा अवसर उपलब्ध हो गया है। कांग्रेस इस समय चुनाव के लिए कोई मुद्दा ढूंढ रही थी । इलेक्ट्रोल बॉन्ड पर मचे शोर ने उसे तात्कालिक आधार पर बीजेपी पर आक्रमण करने के लिए एक मुद्दा अवश्य दे दिया है । जिससे कांग्रेस के लिए डूबते हुए को तिनके का सहारा वाली कहावत चरितार्थ हो गई है। हम सभी यह भली प्रकार जानते हैं कि हमारे देश में सैकड़ों छोटे-बड़े राजनीतिक दल काम कर रहे हैं। जिस किसी के भी सिर में महत्वाकांक्षा या नेतागीरी की खुजली होती है वही एक नया राजनीतिक दल लेकर आ जाता है। यह माना जा सकता है कि लोकतंत्र में बहुदलीय व्यवस्था के लिए स्थान होता है, पर वह इतना भी नहीं होता कि सारे स्थान को राजनीतिक दल ही ग्रहण कर लें । यह भी एक सर्वमान्य सत्य है कि इन सैकड़ों राजनीतिक दलों में से कुछ राजनीतिक दल ही ऐसे होते हैं जिन्हें देश की जनता सत्ता के शीर्ष तक पहुंचाती है। अधिकांश राजनीतिक दल उनके राष्ट्रीय अध्यक्षों की एक ऐसी फौज होते हैं जिन्हें उनका राष्ट्रीय अध्यक्ष और कुछ अन्य पदाधिकारी लोगों से पैसा ऐंठने और अपनी नेतागिरी चमकाने के लिए प्रयोग करते हैं। भारत निर्वाचन आयोग की अधिसूचना दिनांक 15 मई 2023 के अनुसार देश के 26 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों में कुल 58 दलों को राज्य पार्टी का दर्जा प्राप्त है। जबकि 2500 से अधिक राजनीतिक दल पंजीकृत हैं। भारत में इलेक्ट्रोल बॉन्ड को लाने का उद्देश्य यही था कि इतनी बड़ी संख्या में कुकुरमुत्तों की तरह फैल

गये ये राजनीतिक दल और उनके नेता देश की जनता की जेब पर डाका न डाल सकें। उद्देश्य था कि देश की राजनीति और चुनावी प्रक्रिया पारदर्शी बने। चुनावी बॉन्ड की इस प्रक्रिया से निश्चित रूप से लोगों की जेब पर डाका डालने वाले कुछ राजनीतिक दलों की गतिविधियों पर नकेल लगाने में सफलता भी मिली। चुनावी बांड की इस प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि चुनावी फंडिंग केवल वही पार्टियां प्राप्त कर सकती हैं जिन्हें आम चुनाव में कम से कम एक प्रतिशत वोट प्राप्त हुआ हो। यदि कोई राजनीतिक दल एक प्रतिशत से कम वोट लेता है तो उसे चुनावी फंडिंग लेने का अधिकार नहीं होगा। निश्चित रूप से जिन राजनीतिक दलों का केवल कागजों में अस्तित्व है वे तो अब चुनावी फंडिंग लेने की प्रक्रिया में दूर-दूर तक भी नहीं आते हैं। इस प्रकार के प्राविधानों से यह स्पष्ट हो जाता है कि चुनावी बांड के माध्यम से चुनावी फंडिंग को पूरी तरह सुरक्षित और डिजिटल बनाने में सहायता मिली है। केंद्र की मोदी सरकार का यह एक लक्ष्य भी रहा है कि सारी चीजें सुरक्षित और डिजिटल हो जाएं। अब यह अनिवार्य कर दिया गया है कि कोई व्यक्ति ?2000 से अधिक का कोई दान चुनावी बांड और चेक के रूप में नहीं दे सकता। इसके बावजूद भी यदि वह ऐसा करता है तो यह कार्य गैर कानूनी होगा। यही कारण है कि चुनावी बांड के सभी लेन-देन चेक या डिजिटल माध्यम से किए जाते हैं। हम सभी जानते हैं कि इंदिरा गांधी के जमाने में जब सीताराम केसरी पार्टी के कोषाध्यक्ष हुआ करते थे तो स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को भी यह पता नहीं होता था कि पार्टी के खाते में कितने रुपए हैं ? उस समय सारी प्रक्रिया बड़ी गोपनीय रहती थी सीताराम केसरी को इंदिरा गांधी ने उनके पद से हटाने का भी प्रयास किया था। पर वह ऐसा कर नहीं पाई थीं। क्योंकि सीता राम केसरी ने सारा हिसाब किताब बहुत गोपनीय रखा हुआ था जिसे बिना बताए हुए पार्टी के कोषाध्यक्ष पद से जाने की धमकी दे दिया करते थे। उस समय कांग्रेस में यह चर्चा आम तौर पर रहती थी कि खाता ना बही, जो चाचा ने कही, वही ह्र सही। निश्चित रूप से वह स्थिति अच्छी नहीं थी। आज बहुत हद तक यह पारदर्शिता है कि किसी भी राजनीतिक दल के खाते में पैसा कहां से आ रहा है और कितना आ रहा है ? कुछ लोगों की यह मान्यता रही है कि चुनावी बांड की इस प्रक्रिया को केंद्र की मोदी सरकार ने विपक्षी दलों को मिलने वाली चुनावी फंडिंग को रोकने के उद्देश्य से प्रेरित होकर लागू किया है। लोकतंत्र में आलोचना करने का सभी को अधिकार होता है। वैसे भी हमारा संविधान भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता है। परंतु इसके उपरांत भी हम यह कहना चाहेंगे कि केंद्र की मोदी सरकार ने यदि विपक्षी दलों की चुनावी फंडिंग की पड़ताल करने के लिए ही यह कदम उठाया है तो उसने अपने अपनी पार्टी अर्थात भाजपा को भी इसके दायरे से बाहर नहीं रखा है। जहां लोकतंत्र में आलोचना के साथ-साथ भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोगों को प्राप्त होती है , वहीं सरकार को ह्यराष्ट्रप्रथमह्न की पवित्र भावना को विकसित करने और उस पवित्र भावना को लागू करने में आने वाली बाधाओं को भी समीक्षित, निरीक्षित और परीक्षित करने का अधिकार होता है। जिस समय चाचा केसरी की राजनीतिक संस्कृति देश में काम कर रही थी, उस समय चुनावी फंडिंग की गोपनीयता लोगों के राइट टू इनफार्मेशन का उल्लंघन कर रही थी। पर आज उसे केंद्र की मोदी सरकार ने सबके लिए सहज सुलभ करवा दिया। इसे उचित ही कहा जाना चाहिए। इस नई प्रक्रिया के बारे में हम सब यह भी जानते हैं कि चुनावी बांड आर्थिक रूप से स्थिर कंपनियों को किसी भी तरह से खतरा नहीं पहुंचाते हैं। इन कंपनियों का लक्ष्य एक राजनीतिक दल को दूसरे राजनीतिक दल की तुलना में अधिक वित्तपोषित करना है। विशेषज्ञों की मान्यता है कि किसी राजनीतिक दल को कंपनी के वार्षिक लाभ का 7.5% दान करने की सीमा समाप्त होने से इसे और बढ़ावा मिला है। इसमें दो मत नहीं हैं कि जिन राजनीतिक दलों के हाथों में देश की या किसी प्रदेश की बागडोर होती है, लोग उसे अधिक चंदा देते हैं। इसके चलते इस समय सबसे अधिक चंदा भाजपा को प्राप्त हुआ है। जिससे उसके विरोधियों का दिन का चैन और रात की नींद हराम हो गई है। इसलिए ऐसे राजनीतिक दलों का भाजपा के विरुद्ध मुखर हो जाना समझ में आ सकता है, पर इस सब के उपरांत भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि चुनावी बॉन्ड की जिस प्रक्रिया को वर्तमान में लागू किया गया है वह पहले वाली चुनावी फंडिंग की प्रक्रिया से बहुत अधिक पारदर्शी है। यदि इसमें कहीं कुछ खामियां हैं (जिनका रह जाना स्वाभाविक होता है) तो उन्हें दूर किया जा सकता है। चुनाव सुधार की ओर चुनावी फंडिंग की यह प्रक्रिया पहला कदम है, अंतिम नहीं। इसे अंतिम और सुव्यवस्थित बनाने के लिए यदि सभी राजनीतिक दल स्वच्छ राजनीति करते हुए स्वच्छ और स्वस्थ मानसिकता का परिचय दें तो देश के लिए और भी अच्छा हो सकता है।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 33

वैश्विक व्यापार और आशावाद

संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (अंकटाड) की वैश्विक व्यापार रिपोर्ट का मार्च संस्करण पिछले सप्ताह जारी किया गया। उसमें अनुमान जताया गया कि वर्ष 2023 में जहां वैश्विक व्यापार में एक लाख करोड़ डॉलर की कमी आई, वहीं यह भी कहा गया कि 2024 में यह रुझान बदल जाएगा। अंकटाड ने इस दावे का समर्थन करते हुए कहा कि चालू कैलेंडर वर्ष की पहली तिमाही में वस्तु एवं सेवा व्यापार में मामूली बढ़ोतरी देखने को मिली है। इस वृद्धि के कारकों में वैश्विक मुद्रास्फीति में कमी और वैश्विक वृद्धि की मजबूती शामिल हैं। भारत के लिए यह अच्छी खबर है। घरेलू वृद्धि में व्यापार की हिस्सेदारी बढ़ाने की आवश्यकता है। कई निर्यात आधारित क्षेत्र बाहरी वृद्धि के रुझानों को लेकर खासे संवेदनशील हैं और आने वाले दिनों में बेहतर ऑर्डर बुक देखने को मिल सकती हैं। गोल्डमैन सैक्स के एक हालिया विश्लेषण में कहा गया कि भारत से संचालित सूचना प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी समर्थित सेवा कंपनियों के राजस्व में वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान 9 से 10 फीसदी की वृद्धि देखने को मिल सकती है। ऐसा दबी हुई मांग और जेनरेटिव आर्टिफिशल इंटेलिजेंस जैसे तकनीकी नवाचारों की बदौलत हो सकता है।

वैश्विक व्यापार के समक्ष मौजूदा व्यापक जोखिमों को भी कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। अंकटाड कई जोखिमों को चिह्नित करता है, उनमें से कुछ पर भारतीय नीति निर्माताओं को सावधानीपूर्वक नजर रखनी चाहिए। 2024 के दौरान कुछ समय तक नौवहन मार्गों के बाधित बने रहने की आशंका है। यमन में स्थित हूती विद्रोहियों द्वारा पोतों पर हुए हमलों में ज्यादा जानें भले नहीं गईं लेकिन उन्होंने लाल सागर से गुजरने वाले मार्ग का जोखिम और बीमा राशि दोनों में इजाफा कर दिया है जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र से भूमध्यसागर की ओर होने वाले समुद्री व्यापार को प्रभावित कर रहा है। अंकटाड ने जिंस कीमतों में अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव को भी एक संभावित समस्या के रूप में पेश किया। दो वर्ष पहले रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण ने ईंधन बाजार में उथलपुथल मचा दी थी। इसने कई जिंसों की आपूर्ति श्रृंखला के लिए भी दिक्कत पैदा कर दी थी जिसमें कृषि जिंस शामिल थीं। युद्ध कच्चे माल की लागत और व्यापार को प्रभावित कर रहा है और इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है। निश्चित तौर पर गत सप्ताह यह खबर भी थी कि अमेरिका ने रूसी तेल पहुंचाने वालों पर नए सिरे से प्रतिबंध लगाए हैं। इस बात ने भी भारतीय रिफाइनरी तक तेल की आपूर्ति में देरी की। इस तथा अन्य संघर्षों ने व्यापार नेटवर्क को प्रभावित किया है और इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है।

आखिर में अंकटाड ने भू-आर्थिकी को लेकर भी कुछ चिंताएं जताई हैं जो मोटे तौर पर आपस में जुड़ी हुई हैं। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में चीन के दबदबे की चिंताओं के वशीभूत कंपनियां और सरकारें दोनों अलग-अलग स्तर पर कदम उठा रही हैं। रिपोर्ट बताती है कि आपूर्ति श्रृंखलाएं लंबी हो रही हैं। एक ओर यह बात उन्हें गैर किफायती बना रही है और लागत बढ़ा रही है तो वहीं दूसरी ओर इससे भारत समेत कुछ देशों के लिए यह अवसर भी उत्पन्न हुआ है कि वे मूल्य श्रृंखला में अधिक प्रभावशाली बन सकें। निश्चित तौर पर भारत सरकार के सेमीकंडक्टर, मोबाइल फोन और इलेक्ट्रिक वाहनों से जुड़े कदमों के पीछे यही वजह है। परंतु अहम खनिजों पर व्यापार प्रतिबंधों जैसे संबद्ध विषयों से भी निपटना होगा। आखिर में कई देशों में घरेलू सब्सिडी सही मायनों में एकदम गंभीर स्थिति निर्मित कर रही है। इन हालात में भारत प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाएगा। ऐसे में यह अहम है कि हम अमेरिका और यूरोपीय संघ जैसी अर्थव्यवस्थाओं के साथ करीबी आर्थिक एकीकरण स्थापित करें ताकि इनके असर को कम किया जा सके।

'आप'-भाजपा की लड़ाई और कांग्रेस का संघर्ष

केजरीवाल की राजनीति जिस 'विचार' के इर्दगिर्द विकसित हुई थी वह था भ्रष्टाचार के विरुद्ध बिना रोकटोक की लड़ाई। अब मोदी सरकार ने उन पर और उनकी पूरी पार्टी पर भ्रष्टाचार का वही दाग लगा दिया है

राष्ट्र की बात

शेखर गुप्ता

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद पहली प्रतिक्रिया देते हुए आम आदमी पार्टी की नेता और दिल्ली सरकार की एक प्रमुख मंत्री आतिशी ने कहा कि अरविंद केजरीवाल केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचार हैं। यानी उनका कहने का अर्थ यह था कि केजरीवाल की गिरफ्तारी या उन्हें अस्थायी रूप से कुर्सी से हटाया जाना उनकी राजनीति, पार्टी या सरकार को कोई बड़ी क्षति नहीं पहुंचाएगा।

यह अच्छा और दिलचस्प बिंदु है। आइए यहीं से शुरुआत करते हैं। अगले कुछ दिनों में हमें पता लग जाएगा कि आप और दिल्ली तथा पंजाब की उसकी सरकारों पर क्या असर होगा। इससे भी अधिक अहम चर्चा यह है कि इसका राष्ट्रीय राजनीति पर क्या असर होगा।

सैद्धांतिक तौर पर देखें तो आम आदमी पार्टी इस झटके को झेलने में सक्षम है और केजरीवाल की रिहाई तक पार्टी और मजबूत बनकर उभर सकती है। तब केजरीवाल एक ऐसे नेता के रूप में उभर सकते हैं जिसका करिश्मा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जेल में और मजबूत हुआ हो। अगर आपकी बुनियादी विश्वसनीयता बरकरार रहती है और आपका आधार आपके विरुद्ध लगे भ्रष्टाचार के आरोपों से सुरक्षित रहता है तो विरोधी सरकार की जेल में कुछ समय बिताना भारतीय राजनेताओं को कभी नुकसान नहीं पहुंचाता। दूसरी ओर अगर आपकी अनुपस्थिति में आपकी सरकार लड़खड़ा जाती है और नेता उसे छोड़कर जाने लगते हैं (जिसका प्रयास भाजपा करेगी) तो आपकी राजनीति को निर्णायक झटका लगता है। पार्टी फिलहाल ऐसे ही मोड़ पर खड़ी है। अगर आज केजरीवाल एक विचार हैं तो वह और उनकी राजनीति जिस विचार के इर्दगिर्द खड़ी हुई वह था भ्रष्टाचार के विरुद्ध दो टूक लड़ाई। यही कारण है कि अब मोदी सरकार ने उन्हें, उनकी पूरी पार्टी और सरकार को भ्रष्टाचार के आरोपों में ही उलझा दिया है। उनके निशाने पर कोई व्यक्ति नहीं है बल्कि वे एक विचार के पीछे हैं जो कभी केजरीवाल का पर्याय था। सार्वजनिक जीवन और बहसों में हर व्यक्ति, चाहे वह राजनीति हो, निगम हो, मीडिया हो, न्यायाधीश हो या कोई और, वह भ्रष्ट है। या फिर जैसा कि इंडिया अगेंस्ट करप्शन (आईएसी) के दौर में कहा जा रहा था: सब चोर हैं और सब मिले हुए हैं। इसके बाद कहा जाता था कि केवल एक व्यक्ति जिसने इसे सच्ची लड़ाई लड़ रहा है और वह केजरीवाल हैं। इस प्रकार वह एक विचार में तब्दील हुए जिसे मोदी अब भ्रष्टाचार के आरोप के साथ नष्ट करना चाहते हैं। मानो वह कहना चाहते हों कि देखो, देखो इतने वर्षों तक कौन यह सब बोल रहा था। बीते एक दशक के दौरान भाजपा ने देखा कि कैसे केजरीवाल के विचार ने लोकप्रियता हासिल की। उनकी पार्टी को पंजाब में जीत हासिल हुई और गोवा में भी वोट मिले लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि आप ने गुजरात में पांच सीटों पर जीत हासिल की। मोदी-शाह के गढ़ में उसने 13 फीसदी के करीब वोट हासिल किए। उसने नगर निकायों के चुनावों में भी कुछ प्रगति की और खतरे की घंटी बजा दी। वर्तमान भाजपा अतीत की समस्याओं पर राजनीति कर सकती है लेकिन वह आज की लड़ाइयां आज नहीं लड़ती। किसी भी अन्य महाशक्ति की तरह वह आने वाले कल की लड़ाइयों से आज निपटती है और वह ऐसा अपने क्षेत्र से दूर रहकर करती है। 2022 के राज्य चुनावों ने दिखाया कि आप भाजपा के सबसे गहरे प्रभाव वाले क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। उसी वक्त पार्टी ने तय कर लिया कि आप भविष्य की प्रतिद्वंद्वी है जिससे आज ही निपटना होगा। अगर भाजपा कामयाब होती है और केजरीवाल के विचार का पतन होने लगता है तो यह राष्ट्रीय राजनीति में एक व्यापक रुझान की पुष्टि होगी और वह यह कि लोकप्रिय शक्तिशाली और महत्त्वाकांक्षी नेताओं द्वारा अपने राजनीतिक प्रभाव वाले भूभाग का विस्तार करने की कोशिश विफल रही है। बीते तीन सालों में हमने देखा कि ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस ने गोवा, त्रिपुरा और मेघालय में समय, ऊर्जा और पूंजी लगाई लेकिन वह राष्ट्रीय छाप छोड़ने में नाकाम रही। इसी तरह तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव (केसीआर) ने अपने दल के नाम में से तेलंगाना हटाकर भारत जोड़ने का जो निर्णय लिया वह भी एक गलत कदम साबित हुआ। अन्य राज्यस्तरीय दलों में से कोई अपनी क्षेत्रीय सीमाओं से परे विस्तार करने के बारे में सपने नहीं देख सकता। वाम दल जो एक समय इकलौती देशव्यापी शक्ति थे वे केवल एक राज्य में सिमट गए। आप इकलौता ऐसा दल बना जो अपना विस्तार करने में कामयाब रहा और भाजपा और कांग्रेस के अलावा इकलौता ऐसा दल बना जो एक से अधिक राज्यों में शासन कर रहा था। यही वजह है कि भाजपा ने उसके पर कतरने का निर्णय लिया। वह भविष्य की लड़ाई लड़ रही है। केजरीवाल की गिरफ्तारी के कारण राजनीतिक परिदृश्य में आए बदलाव को समझने के लिए हमें उस राजनीतिक दल पर नजर डालनी होगी जो उनके और उनके दल के बचाव में सबसे अधिक मुखर ढंग से सामने आया है। वह दल है कांग्रेस, यानी वह पार्टी जिसे केजरीवाल और 2010-14 के उनके भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन ने बहुत अधिक क्षति पहुंचाई। आप लगातार उसके वरिष्ठ मंत्रियों की गिरफ्तारी की मांग करती रही। ऐसे में कांग्रेस केजरीवाल के बचाव में इतनी मुखर और सक्रिय क्यों है? दिल्ली और गुजरात में आंशिक गठजोड़ के अलावा दो अन्य कारण इसके पीछे हैं। पहला, किसी भी अन्य भाजपा विरोधी दल की तरह कांग्रेस भी जानती है कि जो आप के साथ हो रहा है वह कल उसके साथ भी हो सकता है। कर्नाटक, तेलंगाना और हिमाचल प्रदेश में उसके मुख्यमंत्री इस पर बहुत गहरी नजर रखे हुए हैं। उनका इस बात पर खास ध्यान है कि उनकी अपनी पार्टी, खासकर उसकी विधि से जुड़ी प्रतिभाएं किस तरह की चुनौती सामने रख पा रही हैं?

दूसरा कारक यह है कि अब कांग्रेस को पता है कि तमाम कमजोरियों के बावजूद वह इकलौती शक्ति है जो भाजपा और भारत के एकदलीय गणराज्य बनने के बीच खड़ी है। क्योंकि एक बार अगर वह रास्ते से हट गई तो भाजपा अन्य क्षेत्रीय दलों में से कुछ को अपने साथ मिला लेगी और अन्य को समाप्त कर देगी। ऐसे में कांग्रेस जानती है कि अगला नंबर उसका ही होगा।

अहम बात यह है कि आप पर हमले ने देश को दो राजनीतिक शक्तियों वाला देश बना दिया है एक भाजपा और दूसरा कांग्रेस। भले ही दोनों की ताकत में भारी अंतर मौजूद हो। अब यह कहना सुरक्षित है कि आने वाले वर्षों में या कम से कम 2029 तक कांग्रेस पार्टी ही भाजपा की इकलौती राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्वी होगी, भले ही वह कमजोर हो। लगातार हारों के बावजूद पार्टी अभी भी करीब 20 फीसदी मत प्रतिशत रखती है। कम से कम 2019 के चुनावों के बाद से ऐसा ही था। तमाम नाकामियों और जीत तथा सत्ता में वापसी की शून्य उम्मीद के बावजूद अगर पांच में से एक भारतीय आपके लिए वोट कर रहा है तो आप मुकाबले में बने हुए हैं। अगर यह मत प्रतिशत बढ़कर 25 प्रतिशत हो जाए तो भी खेल बदल सकता है। अगर आप कांग्रेस से हों तो कह सकते हैं कि यह अच्छा बिंदु है और एक पल के लिए आपके चेहरे पर मुस्कान भी आ सकती है। परंतु हकीकत से सामना अभी बाकी है। पहला कदम होगा खुद को आने वाले महीनों में भाजपा के ऐसे ही हमलों से बचाना। उसके लिए, जैसा कि भाजपा कर रही है, कांग्रेस को भी भविष्य की लड़ाइयां आज ही लड़नी होंगी। यही वजह है कि कांग्रेस इतनी गहनता से आप के बचाव में उतरी है। वह अपना अस्तित्व बचाने के लिए लड़ रही है ताकि वह मुकाबले में बनी रहे सके और दो दलीय प्रणाली की अनिवार्यता कायम रहे।

विलय के जरिये मीडिया क्षेत्र में नया प्रयोग

मीडिया मंत्र

वनिता कोहली-खांडेकर

रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) जब भी मीडिया कारोबार से जुड़े कोई नए कदम उठाती है तब हर किसी को हैरानी होती है कि आखिर ऐसा क्यों किया जा रहा है? वर्ष 2012 में उसने नेटवर्क 18 (जिसके पास वायकॉम 18 का भी स्वामित्व है) के इनाडु के साथ विलय की फंडिंग की जबकि वह उससे पहले से ही जुड़ी थी। वर्ष 2014 तक उसने विलय वाली कंपनी का प्रबंधन नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। वर्ष 2022 में उसने जेम्स मर्डोक और उदय शंकर के स्वामित्व वाली बोधि ट्री को वायकॉम 18 में एक निवेशक के रूप में जोड़ा और इस पूरे पैकेज में जियो सिनेमा शामिल हो गया। पिछले साल उसने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के डिजिटल अधिकार खरीदे और एचबीओ के प्रीमियम प्रोग्रामिंग का लाइसेंस भी लिया। इस साल फरवरी के अंत में आरआईएल और बोधि ट्री के स्वामित्व वाली वायकॉम 18 और डिज्नी के स्वामित्व वाली स्टार इंडिया के विलय की घोषणा हुई। हाल ही में उसने वायकॉम 18 में मूल साझेदार पैरामाउंट की शेष हिस्सेदारी खरीद ली। अब इस नई विलय वाली इकाई का पूरा नियंत्रण आरआईएल और बोधि ट्री के पास है।

सवाल यह है कि आखिर ऐसा क्यों किया गया? क्या इस तरह के कदम इसलिए उठाए गए कि मीडिया एक अच्छा निवेश है? ऐसा लगता नहीं है। निश्चित रूप से करीब 2.3 लाख करोड़ रुपये (लगभग 28 अरब डॉलर) का भारतीय मीडिया एवं मनोरंजन कारोबार एक मुश्किल जगह है। इस उद्योग में मीडिया सामग्री की तादाद ज्यादा है लेकिन इसकी प्रत्येक इकाई से होने वाली आय कम होती है। इसके कम मार्जिन को देखते हुए इसके लिए बहुत प्रयास और धैर्य की आवश्यकता होती है। स्टार इंडिया को 1990 के दशक में सफल होने में लगभग एक दशक लग गया। वहीं केवल में शत-प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति मिलने के आठ साल से भी अधिक समय बाद एक भी कंपनी सामने नहीं आई है। ऐसे कई उदाहरण हैं।

मीडिया पार्टनर्स एशिया के कार्यकारी निदेशक और सह-संस्थापक विवेक कूटो कहते हैं, 'हाल के वर्षों में गूगल, मेटा, नेटफ्लिक्स, एमेजॉन द्वारा रचनात्मक अर्थव्यवस्था और वितरण में किए गए निवेश को छोड़कर, भारतीय मीडिया एवं मनोरंजन क्षेत्र में कोई बड़ा पूंजी निवेश नहीं हुआ है। रिलायंस इंडस्ट्रीज (आरआईएल) ने पिछले कुछ वर्षों में 2.4 अरब डॉलर का निवेश किया है और इसने प्रमुख समूहों के साथ भागीदारी की है।'

वर्ष मार्च 2023 में समाप्त हुए वर्ष में लगभग 9.8 लाख करोड़ रुपये (लगभग 119 अरब डॉलर) की कमाई के साथ ही रिलायंस इंडस्ट्रीज भारत की सबसे बड़ी निजी क्षेत्र की कंपनी बन गई है। यह हाइड्रोकार्बन की खोज के साथ-साथ पेट्रोकेमिकल्स, पेट्रोलियम रिफाइनिंग जैसे क्षेत्रों में काम करती है जहां व्यापक दायरे के साथ-साथ परियोजना प्रबंधन क्षमता महत्त्वपूर्ण हैं। वायकॉम 18 के डिज्नी-स्टार (जो बड़ी इकाई है) के साथ विलय से एक ऐसी कंपनी बनेगी जिसकी संयुक्त कमाई 23,321 करोड़ रुपये होगी (जैसा कि मार्च 2023 को समाप्त वर्ष में दर्ज किया गया था)। यह गूगल के बाद भारत की दूसरी सबसे बड़ी मीडिया कंपनी होगी। इसके बाद भी यह आरआईएल की कमाई का सिर्फ 2 प्रतिशत ही होगा। विलय वाली इकाई का मूल्यांकन (8.5 अरब डॉलर) आरआईएल के वर्तमान बाजार पूंजीकरण का लगभग 3.5 प्रतिशत है।

अगर यह निवेश आरआईएल समूह के लिए मामूली है तो फिर इस पर चर्चा क्यों करनी है?

क्या यह किसी विशेष लाभ या प्रभाव से जुड़ा हो सकता है? अगर आरआईएल समूह के आकार और प्रभाव को देखें तो इसे इसके लिए मीडिया की आवश्यकता नहीं है। सबूत के तौर पर आप इस महीने की शुरुआत में आरआईएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी के प्री-वेडिंग समारोह में सुपरस्टार शाहरुख खान और मशहूर गायिका रिहाना से लेकर सॉफ्टवेयर क्षेत्र के दिग्गज अरबपति बिल गेट्स और स्टील क्षेत्र के बड़े उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल तक सभी के वीडियो को देखें जिसमें वे इस आयोजन का लुत्फ उठाते हुए देखे जा सकते हैं। भारत और देश से बाहर के कुछ बड़े राजनेता इस कार्यक्रम में शामिल हुए। दुनिया के जाने-माने लोगों के बीच इतना दबदबा रखने वाले परिवार को किसी भी तरह के प्रभाव के लिए ही भला रिलायंस को एक छोटी मीडिया कंपनी की आवश्यकता क्यों होगी?

एक सूत्र का कहना है कि रिलायंस समूह काफी समय से मीडिया में दिलचस्पी लेता रहा है। उन्होंने 1990 में लॉन्च होने के 10 साल बाद बंद कर दिए गए 'द बिजनेस ऐंड पॉलिटिकल ऑब्जर्वर' का उदाहरण दिया। यह समूह के उन दुर्लभ व्यवसायों में से एक है जिसे रिलायंस समूह ने छोड़ दिया।

उस वक्त से ही इसका मीडिया रिकॉर्ड मिला-जुला रहा है। वितरण के क्षेत्र की बात करें तो केबल में इसने जहां हैथवे, डेन, जीटीपीएल जैसी कंपनियों का स्वामित्व अपने पास रखा है या उनमें हिस्सेदारी रखी है और इस तरह रिलायंस का इस कारोबार पर भी अच्छा नियंत्रण है। हालांकि उपभोक्ता पक्ष की बात करें तो तस्वीर धुंधली है। नेटवर्क 18 और वायकॉम 18 के पास कलर्स, निक जैसे चैनल और मनीकंट्रोल और सीएनबीसी जैसे ब्रांड हैं। इसके ऐप, वूट ने उस श्रेणी पर अपना पूर्ण दबदबा कायम रखा जिसमें अधिकांश प्रसारकों और ओटीटी को संघर्ष करना पड़ता है, वह है बच्चों की श्रेणी। कुछ समय से अब तक, इनमें से ज्यादातर ब्रांड आरआईएल में गुम हो गए हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। रिलायंस जैसे बड़े समूह में कोई छोटा कारोबार जो समूह की बुनियाद से नहीं जुड़ा है और शानदार रिटर्न भी नहीं देता है तब भी वरिष्ठ प्रबंधनकर्ता उस पर पर्याप्त समय देते हैं और उसकी बेहतरी का प्रयास करते हैं।

शुरुआत के 1990 के दशक से लेकर 2018 में डिज्नी को बेचे जाने तक स्टार, रूपर्ट मर्डोक की कंपनी फॉक्स का एक हिस्सा था। वर्ष 1994 में भारत का पहला म्यूजिक चैनल, चैनल वी और 1998 में इसका पहला समाचार चैनल, स्टार न्यूज और वर्ष 2000 में कौन बनेगा करोड़पति (केबीसी) शो को लॉन्च करने से लेकर, स्टार उस बाजार के बलबूते बढ़ा है जिसे उसने खुद बनाया है। इसने प्रबंधन की सोच का स्थानीकरण किया है और इस क्षेत्र में बढ़ने के लिए आक्रामक रूप से निवेश किया है। जब डिज्नी जैसी बड़ी अमेरिकी कंपनी ने स्टार को 89 अरब डॉलर में अपना हिस्सा बना लिया तब डिज्नी की जटिल कार्यप्रणाली और अमेरिकी बाजार पर ध्यान के चलते स्टार का जादू फीका पड़ गया। जल्द ही, डिज्नी ने अपने भारतीय चैनल को बेचने के बारे में सोचना शुरू कर दिया ताकि वह पैसा जुटा सके। जब यह सौदा रिलायंस के पास आया तब अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक समूह ने इसे अपने 'अधूरे कारोबार' के लिए एक अवसर देखा। इसने अब उस कारोबार में एक बड़ा दांव लगा दिया है जिसमें पहले इसकी मामूली स्थिति थी। लेकिन अब इसने यह भी सुनिश्चित कर लिया है कि वह उदय शंकर को इससे जोड़ें जो बोधि ट्री में एक निवेशक भी हैं।

स्टार इंडिया के मुख्य कार्याधिकारी के रूप में वर्ष 2007 से 2020 तक के कार्यकाल में शंकर ने कंपनी की कमाई को 1,600 करोड़ रुपये से वर्ष 2020 में 18,000 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंचा दिया। उन्होंने मनोरंजन कारोबार को इस मुकाम तक पहुंचाया कि यह पैसा बनाने वाली मशीन बन गई। उन्होंने स्टार का दायरा खेल क्षेत्र (आईपीएल, कबड्डी) और डिजिटल (2015 में हॉटस्टार) में बढ़ाया। विलय वाली इकाई के वाइस चेयरपर्सन के रूप में, वे परिचालन नहीं संभालेंगे, लेकिन यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि वह पूरी रणनीति तय करेंगे।

मर्डोक परिवार ने शंकर को काफी छूट दी थी। क्या कोई बड़ा भारतीय समूह जोखिम लेने और निवेश करने के लिए इतनी छूट दे पाएगा? एक सूत्र का कहना है, 'अगर शंकर अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो उन्हें स्वतंत्र रूप से काम करने की छूट मिलेगी और अगर वह लगातार अच्छा प्रदर्शन करते रहते हैं तब यह स्वतंत्रता और बढ़ती जाएगी।' योजना यह है कि इस कंपनी को लगभग पांच वर्षों में उसके वर्तमान मूल्य से दोगुने या उससे अधिक पर सूचीबद्ध कराया जाए।

शायद शुरुआत में हमने जो 'क्यों' पूछा था उसका जवाब तब तक मिल जाएगा।

आपका पक्ष

एआई के उपयोग में सावधानी जरूरी

वैश्विक स्तर पर नौकरी और रोजगार के मामले में इस समय सबसे बड़ा परिवर्तन मशीन लर्निंग और आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (एआई) के मोर्चे पर देखने को मिल रहा है। हाल के समय में एआई ने ऊंची छलांग लगाई है। इस तकनीकी नवाचार ने पूरे परिदृश्य को ही बदल दिया है। एआई की उपयोगिता ने दुनिया भर में एक नई बहस छेड़ दी है। एआई के उपयोग से उत्पादन की प्रक्रियाओं और ज्ञान के संचय को स्वचालित करना संभव हुआ है। एआई के इसी बढ़ते चलन का परिणाम है कि दिग्गज वैश्विक सलाहकार संस्था मैकिंजी ग्लोबल इंस्टीट्यूट का अनुमान है कि वर्ष 2030 तक दुनिया भर में ऑटोमेशन यानी स्वचालन से 80 करोड़ श्रमिक विस्थापित हो जाएंगे। गोल्डमैन सैक्स ने भविष्यवाणी की है कि बीते दिनों चर्चा में आए चैटजीपीटी जैसे एआई प्लेटफॉर्म के कारण बहुत कम समय में ही

एक रिपोर्ट के अनुसार एआई प्लेटफॉर्म के कारण बहुत कम समय में 30 करोड़ से अधिक नौकरियां खतरे में पड़ सकती हैं

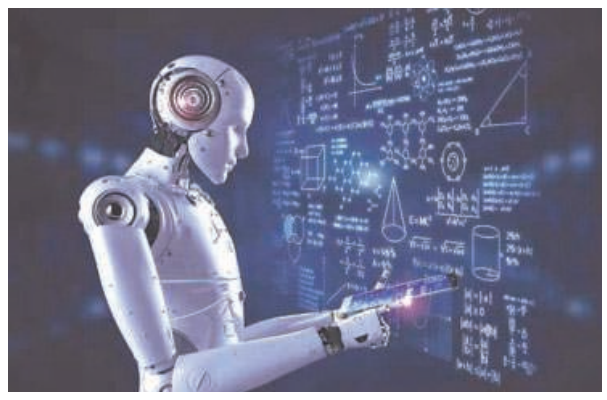

30 करोड़ से अधिक नौकरियां खतरे में पड़ सकती हैं। भारत के 80 प्रतिशत से अधिक श्रमिक अकुशल हैं। भूटान को छोड़ दें तो दक्षिण एशिया के सभी देशों में अकुशल श्रमिकों की संख्या हमारे देश में सबसे अधिक है। इनमें लाखों निजी सुरक्षाकर्मी, दिहाड़ी मजदूर, ड्राइवर और ऐसे श्रमिक शामिल हैं जो अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्र में काम करते हैं।

सुधीर कुमार सोमानी, देवास

ग्लोबल वार्मिंग पर हो चिंतन

ग्लोबल वार्मिंग प्राणी जाति के साथ देश की आर्थिक व्यवस्था के लिए बेहद हानिकारक है क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग से फसलों को जो नुकसान होता है, बीमारियों का जो कारण ग्लोबल वार्मिंग से बनता है उसके लिए सरकारों को भारी खर्च करना पड़ता है। गर्मियों का मौसम आने वाला है। लेकिन मार्च में देश के कुछ राज्यों का तापमान जितना बढ़ा है उतना नहीं बढ़ना चाहिए। तापमान बढ़ना पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग से ग्लेशियर पिघलने लगे हैं। आज किसी एक ग्लेशियर ही नहीं बल्कि सभी ग्लेशियरों की देखभाल के लिए चिंता करना जरूरी है। इसके अलावा लोगों को खाली जगहों पर पेड़ लगाने चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

वैश्विक सूची में निचला स्थान देना संदेहजनक

हैपीनेस इंडेक्स की ताजा सूची में फिर से भारत को नेपाल और पाकिस्तान से नीचे की श्रेणी में रखा गया है। भारत को 126 वां स्थान दिया गया है जबकि नेपाल 99वें और पाकिस्तान 108वें स्थान पर है। श्रीलंका भारत से मात्र दो पायदान नीचे 128वें स्थान पर है। इससे एक बार फिर यह साबित हुआ है कि विश्व रेटिंग एजेंसियां भारत के प्रति किस तरह का पूर्वग्रह रखती हैं। विदेशी निवेश के तहत वैश्विक रेटिंग्स एजेंसी स्टैंडर्ड ऐंड पूअर्स एवं फिच ने भारतीय अर्थव्यवस्था को ऋणात्मक ट्रिपल बी एवं मूडीज ने 'बीबीबी3'की श्रेणी में रखा है जो कि निवेश के हिसाब से सबसे निचली रेटिंग मानी जाती है। हंगर इंडेक्स में भी भारत की स्थिति दयनीय ही बताई जाती है। पश्चिमी मीडिया हो या पश्चिमी रेटिंग एजेंसियां इनका छिपा हुआ एजेंडा भारत की छवि को बिगाड़ना है।

विमलेश पगारिया, धार

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिजनेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो – पीटीआई

रूस की राजधानी मॉस्को स्थित क्रोकस सिटी हॉल में हुए आतंकी हमले में मारे गए लोगों की याद में मोमबत्ती जलाते लोग। इस समारोह स्थल में शुक्रवार रात को आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलियां चलाईं तथा आग लगा दी। इस हमले में 100 से अधिक लोगों की मौत हो गई तथा 150 से अधिक लोग घायल हो गए थे। इस हमले की जिम्मेदारी इस्लामिक स्टेट आतंकवादी समूह ने ली है।

बढ़ती नौसैनिक सक्रियता

भारतीय नौसेना ने हिंद महासागर में 35 युद्धपोतों और 11 पनडुब्बियों को तैनात किया है. इनके अलावा पांच हवाई जहाज भी गश्त लगा रहे हैं. यह नौसेना की अब तक की सबसे बड़ी तैनाती है. कुछ समय से लाल सागर में यमन के हूथी विद्रोहियों की कार्रवाई तथा समुद्री लुटेरों की गतिविधियां बढ़ने से भारत के पश्चिम में फैले विशाल समुद्री क्षेत्र में व्यापारिक जहाजों के आवागमन में मुश्किलें बढ़ गयी हैं. इसके अलावा, हिंद महासागर में चीन भी अपनी उपस्थिति बढ़ाने में जुटा हुआ है. इन चुनौतियों को देखते हुए भारत ने बड़ी संख्या में युद्धपोतों और पनडुब्बियों को उतारने का निर्णय लिया है. इनमें से 10 युद्धपोत उत्तरी अरब सागर, लाल सागर, अदन की खाड़ी और सोमालिया के पूर्वी तटीय इलाके में उतारे गये हैं. इन जहाजों को समुद्री डाकुओं से निपटने तथा मिसाइलों एवं ड्रोनों का शिकार बने व्यापारिक जहाजों की मदद के लिए तैनात किया गया है. शेष युद्धपोत बंगाल की खाड़ी और दक्षिणी हिंद महासागर में सक्रिय हैं. वर्तमान में भारतीय नौसेना के दोनों बेड़े- पूर्वी एवं पश्चिमी- पूरी तरह तैनात और सक्रिय हैं. पश्चिमी समुद्री हिस्से में नौसेना के अभियान के सौ दिन पूरे होने के अवसर पर नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने कहा है कि जब तक इस समुद्री क्षेत्र में व्यावसायिक जहाजों के आवागमन सुरक्षित नहीं हो जाता, यह अभियान जारी रहेगा. लाल सागर संकट के कारण जहाजों का यातायात और बीमा खर्च बहुत बढ़ गया है. ऐसे में हमारी नौसेना की सक्रियता वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भी एक संबल बन रही है. समुद्री लुटेरों के आतंक को समाप्त करने के लिए भारत ने 2022 में एक नया कानून बनाया था. हाल ही में नौसेना ने एक बड़े अभियान के बाद एक अपहृत जहाज को छुड़ाया है और 40 सोमालियाई लुटेरों को पकड़ा है. नये कानून के तहत मुंबई में इन पर मुकदमा चलाया जायेगा. भू-राजनीतिक संकटों और समुद्री लुटेरों के साथ-साथ चीनी नौसेना की बढ़ती गतिविधियों से भी हिंद महासागर की सुरक्षा एवं स्थायित्व को लेकर चिंताएं बढ़ी हैं. कुछ दिन पहले भारत के रक्षा प्रमुख (सीडीएस) जेनरल अनिल चौहान ने रेखांकित किया था कि चीन हमारी मुख्य रक्षा चुनौती है. उन्होंने यह भी कहा था कि पाकिस्तान भले ही गंभीर आर्थिक मुश्किलों से घिरा हुआ है, पर उसकी सैनिक क्षमता में कमी नहीं आयी है. इन दिनों हिंद महासागर में चीन के 13 जहाज गश्त लगा रहे हैं. इनमें छह सैनिक पोत हैं और एक सैटेलाइट ट्रैकिंग जहाज है. इस क्षेत्र में चीनी पनडुब्बियों के अलावा कम से कम छह से आठ नौसैनिक जहाज हमेशा घूमते रहते हैं. ऐसे में भारतीय युद्धपोतों और पनडुब्बियों की तैनाती एक जरूरी कदम है.

वर्तमान में भारतीय नौसेना के दोनों बेड़े- पूर्वी एवं पश्चिमी- पूरी तरह तैनात और सक्रिय हैं.

मोदी की यात्रा और भारत-भूटान संबंध

राजन कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, जेएनयू
rajan75jnu@gmail.com

लोकसभा चुनाव के समय में प्रधानमंत्री मोदी का भूटान दौरा यह दर्शाता है कि भारत भूटान को कितना महत्व देता है. प्रधानमंत्री मोदी को भूटान ने 'ऑर्डर ऑफ द डुक ग्यालपो' पुरस्कार से सम्मानित किया है. यह पहली बार है कि किसी विदेशी नागरिक को यह पुरस्कार दिया गया है. प्रधानमंत्री मोदी ने सकल राष्ट्रीय खुशहाली परियोजना को लोकप्रिय बनाने में भूटान के योगदान और 'माइंडफुलनेस सिटी' विकसित करने की उसकी भावी योजना की सराहना की.

भूटान एक अनोखा देश है- केवल आठ लाख की आबादी वाला एक संवैधानिक राजतंत्र, जो अपनी बौद्ध परंपरा और पहचान को सर्वोच्च मानता है तथा राज्य की नीति के रूप में 'नागरिकों की खुशी' को अपनाता है. भूटान के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध भारत की पड़ोस प्रथम नीति की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है. यह रिश्ता निरंतरता, आपसी विश्वास और सद्भावना पर आधारित है. दक्षिण एशिया में किसी भी अन्य देश के साथ भारत इस स्तर के भरोसे का दावा नहीं कर सकता है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दो दिवसीय यात्रा भूटान को आश्वस्त करने का एक प्रयास है कि भारत उसकी सुरक्षा और भलाई के लिए प्रतिबद्ध है. दो विशिष्ट कारणों से भूटान भारत के विश्व दृष्टिकोण में एक विशेष स्थान रखता है- दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध तथा चीन से निकटता के कारण भूटान का रणनीतिक महत्व. भारत का ऐतिहासिक संबंध आठवीं सदी की शुरुआत से है, जब पद्मसंभव ने भूटान में बौद्ध धर्म की शुरुआत की थी. बौद्ध धर्म भूटान का राजकीय धर्म है और इसकी 75 प्रतिशत आबादी बौद्ध है. द्विपक्षीय संबंधों की नींव प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और भूटान के राजा जिग्मे दोरजी वांगचुक ने 1949 की भारत-भूटान संधि द्वारा रखी थी. संधि के अनुच्छेद दो में एक विशेष प्रावधान था, जिसमें कहा गया था कि 'भारत भूटान के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा, जबकि भूटान बाहरी मामलों में भारत की सलाह लेगा'. इस संधि को 2007 में नवीनीकृत किया गया और नये अनुच्छेद में केवल यह कहा गया है कि दोनों राज्य अपने राष्ट्रीय हितों से संबंधित मुद्दों पर निकटता से सहयोग करेंगे और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरनाक गतिविधियों के लिए अपने क्षेत्रों के उपयोग की अनुमति नहीं देंगे.

अपनी भौगोलिक स्थिति और चीन से निकटता के कारण भूटान रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है. साल 1950 में चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा और भूटान सीमा के पास चीनी सैनिकों की मौजूदगी ने भूटान को चिंतित कर दिया. चीनी कब्जे के डर से भूटान ने अपनी अलगाववादी विदेश नीति को त्याग दिया और भारत के साथ मजबूत संबंध बनाये. वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद भारत ने संचार की लाइनें खोलीं और भूटान से मजबूत राजनयिक संबंध विकसित किये. थिम्पू में भारतीय दूतावास का उद्घाटन 1968 में किया गया और भारत ने 1971 में संयुक्त राष्ट्र में भूटान की सदस्यता का समर्थन किया. जब चीन ने 2014 में अपनी बेल्ट एंड रोड (बीआरआई) शुरू की, तो भारत ने इसे एक भू-रणनीतिक और सुरक्षा उपकरण के रूप में देखा और इससे भारत में चिंताएं पैदा हुईं. सौभाग्य से, भारत के अलावा भूटान दक्षिण एशिया का अकेला देश है, जिसने बीआरआई में शामिल होने से इनकार कर दिया है. प्रधानमंत्री मोदी की थिम्पू यात्रा ऐसे समय में हुई है, जब भूटान चीन से सीमा विवाद का शीघ्र समाधान चाह रहा है. भारत की नजर इस बातचीत पर है क्योंकि इसका भारत के सुरक्षा हितों, खासकर डोकलाम ट्राई-जंक्शन पर, प्रभाव पड़ सकता है.

डोकलाम लगभग 100 वर्ग किलोमीटर वाला भारत, भूटान और चीन के बीच एक क्षेत्र है, जिसमें एक पठार और एक घाटी शामिल है. यह सिलीगुड़ी कॉरिडोर के करीब स्थित है, जो भारत की मुख्य भूमि को उसके उत्तर-पूर्वी क्षेत्र से जोड़ता है. यह गलियारा, जिसे चिकन नेक भी कहा जाता है, भारत के लिए एक संवेदनशील बिंदु है. चीन और भूटान के बीच कई दौर की बातचीत के बावजूद विवाद का समाधान नहीं निकल पाया है. डोकलाम गतिरोध 2017 में हुआ, जब चीन ने इस क्षेत्र में सड़क निर्माण शुरू किया और भारत ने भूटान के समर्थन में अपने सैनिक भेजे. लद्दाख में झड़प के बाद भारत भूटान और अरुणाचल प्रदेश में चीनी गतिविधियों को लेकर और अधिक सतर्क हो गया है. लोकसभा चुनाव के समय में प्रधानमंत्री मोदी का भूटान दौरा यह दर्शाता है कि भारत भूटान को कितना महत्व देता है. प्रधानमंत्री मोदी को भूटान ने 'ऑर्डर ऑफ द डुक ग्यालपो' पुरस्कार से सम्मानित किया है. यह पहली बार है कि किसी विदेशी नागरिक को यह पुरस्कार दिया गया है. प्रधानमंत्री मोदी ने सकल राष्ट्रीय खुशहाली परियोजना को लोकप्रिय बनाने में भूटान के योगदान और 'माइंडफुलनेस सिटी' विकसित करने की उसकी भावी योजना की सराहना की. उन्होंने यह घोषणा भी की कि भारत अगले पांच वर्षों में भूटान को 10 हजार करोड़ रुपये की सहायता देगा. भूटान की 12वीं पंचवर्षीय योजना के लिए भारत का योगदान 45 सौ करोड़ रुपये था. यह राशि 13वीं योजना में दोगुनी से अधिक हो गयी है.

भूटान के बजट में भारत प्रमुख योगदानकर्ता रहा है. प्रधानमंत्री मोदी ने अगस्त 2019 में हुई यात्रा में चार प्रमुख द्विपक्षीय परियोजनाओं की घोषणा की थी: 720 मेगावाट के मंगदेचू हाइड्रोप्रोजेक्ट, इसरो का ग्राउंड अर्थ स्टेशन, रुपे कार्ड और भारत के राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क और भूटान के अनुसंधान और शिक्षा नेटवर्क के बीच इंटरकनेक्शन. इन परियोजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति हुई है. जल-विद्युत सहयोग द्विपक्षीय सहयोग का एक प्रमुख स्तंभ है. कुल 2,136 मेगावाट की चार पनबिजली परियोजनाएं भारत को बिजली की आपूर्ति कर रही हैं. अगस्त 2019 में 720 मेगावाट की मांगदेछू परियोजना को चालू किया गया था. पुनात्सांगछू के दो प्रोजेक्ट कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं. भारत भूटान का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है. व्यापार, वाणिज्य और पारगमन पर 1972 में समझौते हुए थे, जिसे 2016 में संशोधित किया गया. यह एक मुक्त व्यापार व्यवस्था स्थापित करता है और तीसरे देशों में भूटानी निर्यात के शुल्क मुक्त पारगमन का प्रावधान करता है. भारतीय विदेश मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, बिजली को छोड़कर, भारत का व्यापारिक व्यापार 2022-23 में 1,606 मिलियन डॉलर पहुंच गया, जो भूटान के कुल व्यापार का लगभग 73 प्रतिशत है. भारत 1,000 से अधिक भूटानी छात्रों को छात्रवृत्ति देता है. भूटानी तीर्थयात्री भारत के बौद्ध स्थलों की यात्रा करते हैं.

दक्षिण एशिया के अशांत क्षेत्र में भूटान ने खुद को शांति, समृद्धि और विकास के द्वीप के रूप में स्थापित किया है. भूटान ने भारत के सद्भावना संकेतों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है और इसके विकास में भागीदार बनने की इच्छा जतायी है. अन्य दक्षिण एशियाई देशों की तरह उसने भारत के खिलाफ चीन का इस्तेमाल करने की कोशिश नहीं की है. इसलिए, यह भारत का दायित्व है कि वह अपने छोटे पड़ोसी की राष्ट्रीय संप्रभुता की रक्षा करे और उसके विकास में पूरी सहायता दे.

(ये लेखक के निजी विचार हैं.)

होली मनाएं सबके साथ

क्षमा शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार
kshamasharma1@gmail.com

मिल कर उत्सव मनाना हमें बहुत सी चिंताओं से मुक्त करता है. आनंद की भावना जगाता है. जो लोग बहुत दिनों से नहीं मिले, उनसे भी मिलने को प्रेरित करता है. इसलिए इस भावना को बनाये रखने की सख्त जरूरत है. सवाल यही है कि तकनीक को भगवान मानने वाले युग में जब आदमी अपने में और घर में बंद हो गया है, इस भावना को कैसे जीवित किया जाए.

दो-तीन दिन पहले घर के सामने के स्कूल से गुजर रही थी. बच्चों की छुट्टी हो गयी थी, मगर उससे पहले उन्होंने इतनी होली खेली थी कि सब तरह-तरह के रंगों से रंगे हुए थे. होली का अर्थ ही है रंग- जीवन के, पेड़-पौधों के, फूलों के, नवान्न और फसलों के. धूप कुछ बढ़ गयी है, तो फूल मुरझाने लगे हैं, मगर सेमल अभी खिला दिखता है. सरसों के पीले फूलों से खेत भरे हैं. गेहूं की हरी बालियां लहरा रही हैं. बचपन में जब गांव में रहती थी, तो होली का त्योहार महीने भर पहले यानी फागुन की दस्तक के साथ शुरू हो जाता था. कच्चे आंगन को लीप कर हर रोज आटे का चौक पूरा जाता था. उस पर सत्यानाशी के पीले फूलों से सजावट की जाती थी और गाना-बजाना होता था. जलाने वाली होली के एक दिन पहले सब अपनी चारपाइयों को घर के अंदर रख देते थे, वर्ना उन्हें भी होली को भेंट कर दिया जाता था. घरों में खूब गुझिया, मीठे, नमकीन सेब, कांजी बनायी जाती थी. बने पकवानों से जहां जलाने के लिए होली सजती थी, वहां पूजा होती थी. घरों में गोबर से गूलरियां बनायी जाती थीं और हर घर में इनकी छोटी होली जलायी जाती थी. अड़ोस-पड़ोस के सब लोग हाथों में गेहूं की बालियां लेकर घर आते थे और एक-दूसरे को बिना कहे शुभकामनाएं देते थे. होली को दुश्मनी मिटाने का त्योहार भी माना जाता था और जिसके घर में शोक हुआ, शोक उठाने का भी.

लेकिन इन दिनों रास्ता चलती लड़कियों की काफी आफत आ जाती थी. उनकी मांग में गुलाल भरने के लिए बहुत से लड़के आतुर रहते थे. यही नहीं, कालेज में पढ़ने वाली लड़कियों का नाम किसी के साथ भी जोड़ कर उनके पर्चे निकाले जाते थे, जो बेहद अश्लील भाषा में होते थे. जो ऐसा करते थे, उनसे कोई कुछ नहीं कहता था, लेकिन लड़कियों को बेकार की बदनामी झेलनी पड़ती थी. खेलने वाली होली के दिन सवेरे से ही गले में ढोलक लटका कर लोग निकल पड़ते थे और हर घर के सामने जाकर खूब रंग लगाते थे, नाचते-गाते थे. औरतों की कोड़ा मार होली भी होती थी. लोग औरतों को जबर्दस्ती रंग लगाने की कोशिश करते थे और बदले में कोड़े खाते थे. शाम के वक्त होली मिलन समारोह होता था. सब एक-दूसरे के घर जाकर पकवानों का आनंद लेते थे. आज शायद वक्त बदल गया है. पैंतीस साल पहले जब दिल्ली के इस इलाके में रहने आयी थी, तो पास में ही एक झुग्गी बस्ती थी. वहां रहते लोग रात में खूब ढोलक बजाते थे. मधुर सुर में गाते थे. फाग भी शायद अब आसपास कहीं सुनाई नहीं देता. गांव में क्या हालत है, कह नहीं सकती, लेकिन शहरों में तो अब लोग होली खेलना भी भूले जा रहे हैं. मध्य वर्ग की होली का मतलब है किसी होटल में जाकर खा लेना, रेडियो, टीवी और यूट्यूब पर होली के गीत सुन लेना. किसी भी त्योहार से जो मेल-जोल की भावना बढ़ती है, वह अब खत्म सी होती जा रही है. गांवों में भी अब समुदाय की भावना लुप्त सी हो गयी है.

इसके अलावा, लोग गुलाल और रंग लगाने से भी डरते हैं, क्योंकि क्या पता किस रंग और किस गुलाल में क्या मिलावट हो. घर में बनने वाले पकवान भी अब बाजार के हवाले हैं. कम से कम शहरों में तो यही हालत दिखाई देती है. उसका बड़ा कारण यह है कि लोगों के पास समय नहीं बचा. फिर जो महिलाएं हफ्तों पहले से घरों में पकवान बनाती थीं, वे अब दफ्तरों में या कहीं और काम करती हैं. ऐसे में कैसे पकवान बनाएं! पहले ये पकवान बाजारों में मिलते भी नहीं थे, मगर अब तो बाजार जाने की जरूरत भी नहीं है. सब कुछ ऑनलाइन मंगाया जा सकता है. पहले तो गांव में जिस घर में गुझिया बनती थीं, वहां मोहल्ले भर की औरतें इकट्ठी हो जाती थीं. वे अपना चकला-बेलन साथ लाती थीं और कुछ ही घंटों में सब तैयार हो जाता था. यह क्रम चलता ही रहता था, आज इसके घर, कल उसके घर. औरतों की यह सामूहिकता की भावना हर जगह देखी जाती थी, लेकिन अब अकेले-अकेले रहने का जमाना है. इसे ही आदर्श की तरह मान लिया गया है, जबकि अकेलेपन की अपनी मुश्किलें भी कोई कम नहीं होतीं. हम नारों में भले ही सामूहिकता की भावना की बातें करें, लेकिन समाज और परिवार से यह लुप्त होती जा रही है. होली और अन्य त्योहार भी इसके शिकार हुए हैं.

यह कोई अच्छी बात नहीं है. मिल कर उत्सव मनाना हमें बहुत-सी चिंताओं से मुक्त करता है. आनंद की भावना जगाता है. जो लोग बहुत दिनों से नहीं मिले, उनसे भी मिलने को प्रेरित करता है. इसलिए इस भावना को बनाये रखने की सख्त जरूरत है. सवाल यही है कि तकनीक को भगवान मानने वाले युग में जब आदमी अपने में और घर में बंद हो गया है, इस भावना को कैसे जीवित किया जाए. क्यों न आज से ही ऐसा कर लें, खुद होली मनायें और दूसरों के साथ इसका आनंद लें. आज बिरज में होली है रे रसिया खूब गायें, नाचें और ढोलक बजाएं.

(ये लेखिका के निजी विचार हैं.)

https://t.me/AllNewsPaperPaid

देश दुनिया

औकुस में शामिल होंगे जापान और कनाडा

एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अपना आधिपत्य बनाये रखने के लिए अमेरिका औकुस के विस्तार पर तत्काल जोर दे रहा है. अमेरिकी डिजिटल समाचार पत्र कंपनी 'पॉलिटिको' की मानें, तो अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया अगले 14 महीनों में तीनों देशों में होने वाले चुनावों से पहले अपने त्रिपक्षीय औकुस रक्षा साझेदारी को अन्य सहयोगी देशों तक विस्तारित करने का प्रयास कर रहे हैं. जापान और कनाडा औकुस में शामिल होने की कतार में हैं. इनके 2024 के अंत या 2025 की शुरुआत तक व्यापक सैन्य प्रौद्योगिकी सहयोग पर हस्ताक्षर करने की संभावना है. वर्तमान स्थिति में, औकुस में शामिल होने की संभावना को लेकर दोनों देशों के अपने-अपने हिसाब-किताब हैं. कनाडा मान सकता है कि इस संगठन में शामिल होने से अमेरिका की हिंद-प्रशांत रणनीति में उसकी हाशिये वाली स्थिति में कुछ हद तक बदलाव आ सकता है. हालांकि, ऐसा करने के नुकसान निश्चित रूप से उन लाभों से अधिक हैं, जिसे यह देश पाना चाहता है. यदि कनाडा औकुस में सम्मिलित होता है, तो अवश्यंभावी है कि यह एशिया-प्रशांत क्षेत्र के सुरक्षा मामलों के साथ ताइवान और दक्षिण चीन सागर मुद्दे में भी शामिल हो जायेगा- जिसमें उसने पहले से ही हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया है. इससे चीन-कनाडा संबंधों में तनाव बढ़ेगा. जापान की बात करें, तो वह लंबे समय से अपने सैन्य प्रतिबंधों को बदलने का प्रयास कर रहा है. उसने औकुस में शामिल होने में बहुत रुचि दिखाई है. विशेषज्ञ का मानना है कि यदि ऐसा हो जाता है, तो यह सैन्य उपकरणों के मामले में अमेरिका और जापान के बीच सहयोग को गहरा कर सकता है. औकुस के जरिये जापान के साथ सहयोग मजबूत करना और जापान को ऐसी उपलब्धियां हासिल करने में मदद करना मूर्खतापूर्ण नीति है, जो एशिया में तबाही लायेगी.

GLOBAL TIMES
DISCOVER CHINA, DISCOVER THE WORLD

बोधि वृक्ष

जैसे विचार वैसी चेतना

हम कितने भाग्यशाली हैं, जो हमें विचार रूपी पंख मिले हैं, जिससे हम जहां चाहें, जब चाहें, तुरंत पहुंच सकते हैं. जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसा हमारा आचार रहता है. हमारे विचार बीज की तरह होते हैं, जो सकारात्मक या नकारात्मक हो सकते. तत्पश्चात हमारे मूड, व्यवहार और चरित्र के आधार पर हमारी भावनाएं और दृष्टिकोण बनते हैं और इन सभी के संयोजन को चेतना कहा जाता है. मानव चेतना मनुष्य के सोचने, महसूस करने और व्यक्त करने की ऐसी अद्भुत क्षमता है, जिसका बीज है केवल एक संकल्प. हमारे विचारों से हमारी चेतना बनती है, अतः यदि हम अपने विचारों का कुशल प्रबंधन करना सीख लें, तो हम सर्वोच्च मानव चेतना को प्राप्त कर सकते हैं, परंतु उसके पहले हमें यह जांच करनी होगी कि क्या हम कभी अपने विचारों का निरीक्षण करना बंद कर देते हैं? या हम कभी हमारे विचारों के ऊपर पूर्ण विराम लगाने की योजना बनाते हैं? अनुभव से यह देखा गया है कि हममें से अधिकांश लोग अपने विचारों को हमारे मन के हर कोने में भटकने और यहा-वहां बिखरने के लिए खुला छोड़ देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हमें अनेक प्रकार की तकलीफें सहनी पड़ती है. डॉक्टर के अनुसार, ज्यादा सोचना बहुत ज्यादा खाने के समान है, जिससे हमारा मन भारी हो जाता है और हम खुद को हल्का महसूस कर पाने में असमर्थ हो जाते हैं. अतः हमारे मन के भीतर वापस शांति लाने के लिए हमें अंदर की ओर यात्रा करने की आवश्यकता है जिससे हम अपने भीतर संतुलन बना सकें और अपनी अमूल्य ऊर्जा बर्बाद होने से रोक सकें. हमारे विचार और हमारे शब्द एक-दूसरे से बड़ी बारीकी से जुड़े हैं. अतः जो हम सोचेंगे अंततः वही हमारे मुख से निकलेगा. इसलिए यदि हम अपने विचारों पर पहले से ही चुस्त नियंत्रण बनाये रखेंगे, तो अपने जीवन में आने वाली अनेक समस्याओं से खुद को बचा पायेंगे. हमें इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि जैसे हमारे विचार होंगे, वैसी हमारी चेतना होगी और जैसी हमारी चेतना होगी, वैसा हमारा जीवन बनेगा.

-ब्रह्माकुमार निकुंज जी

कुछ अलग

खसम तुम्हारे बड़े निखट्टू

डॉ सुरेश पंत
भाषाविद
drsureshpant@gmail.com

लोक में प्रचलित जनपदीय शब्दों की व्यंजना अद्भुत होती है. दैनंदिन विविध लोक व्यवहार में आने वाले ऐसे हजारों शब्द हैं. इनका संग्रह और अध्ययन किया जाना चाहिए. विद्यानिवास मिश्र (हिंदी की शब्द संपदा) तथा कुछ अन्य विद्वानों ने जनपदीय शब्दों पर कुछ महत्वपूर्ण कार्य किए हैं, किंतु अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है. होली के इस मौसम में एक जनपदीय शब्द याद आया- 'निखट्टू'. ब्रज की एक प्रसिद्ध होली है, 'रंग में होली कैसे खेलूं री मैं सांवरिया के संग.' इसकी लोकप्रियता संपूर्ण उत्तरी भारत में है. सच तो यह है कि भारत या बाहर, जहां भी होली मनायी जाती है, इसे अवश्य गाया जाता है- 'रंग में होली कैसे खेलूं री मैं सांवरिया के संग/ कोरे-कोरे कलश भराये, जा में घोरौ रंग/ भर पिचकारी सन्मुख मारी, चोली है गयी तंग/ लहंगा तेरौ घूम घुमारौ, चोली है पचरंग/ खसम तुम्हारे बड़े निखट्टू, चलौ हमारे संग.' 'निखट्टू' न केवल ब्रज, बल्कि हिंदी की सभी उपभाषाओं, बोलियों में है.

रचना की दृष्टि से निषेध वाचक उपसर्ग नि+खट्टू (न खटने वाला), कोई काम न करने वाला व्यक्ति निखट्टू है. हिंदी शब्द सागर के अनुसार निखट्टू का अर्थ है- अपनी कुचाल के कारण कहीं न टिकने वाला, जिसका कहीं ठिकाना न लगे, इधर-उधर मारा-मारा फिरनेवाला, जम कर कोई काम धंधा न करनेवाला. स्त्रियां अपने निठल्ले पति के लिए कहती हैं- 'निखट्टू आवै लड़ता, कमाऊ आवै डरता.' लोक में निखट्टू की महिमा न्यारी बतायी गयी है. निखट्टू से कोई काम ढंग से नहीं होता. बुवाई के मौसम में मटर का बीज लेने भेजो तो फलियां खाने के मौसम में लौटे. ऐसा बौड़म कि फूल मंगाओ, गोभी ले आए. 'निखट्टू गये हाट/ मंगायी तराजू, ले आए बाट.' निखट्टू दिन भर इधर-उधर आवारागर्दी करने के बाद रात को दुबकता-छिपता घर लौटता है. द्वार से आने की हिम्मत नहीं होती, तो बांस की खपच्चियों से बने टट्टर से आना चाहता है. घर की औरतें व्यंग्य करती हैं- 'टट्टर खोलो निखट्टू आए/ पैसा एक न पूंजी लाए.'

सोचिए, ऐसे निखट्टू से ब्याह दिये जाने पर नवविवाहिता की क्या हालत होगी. ब्याह ठहराने वाले नाई और लगन ठहराने वाले बामन भी उसके व्यंग्यों से नहीं बचते- 'नारायण तेरे घर न्याय नईं रे/ ऐसे अनाड़ी के ब्याह दई रे/ का जाने मूरख कामिनि को रस/ बेर खवइया को दाख दई रे/ जरि जा रे नउवा, मरि जा रे बांमना/ जिन ऐसे लगन धरी रे/ ऐसे अनाड़ी के ब्याह दई रे. किसी गोपी के अनाड़ी निखट्टू पति के ऐसे ही रंग-ढंग देखकर होली में एक ढीठ रसिया सीधे ही कह देता है- 'खसम तुम्हारे बड़े निखट्टू/ चलौ हमारे संग.' होली की शुभकामनाएं...

आपके पत्र

होली पर्व के मूल संदेश को समझें

होली रंगों का त्योहार है. यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है. होलिका के प्रतीकात्मक दहन का संदेश है कि हम अपने अंदर की सारी बुराइयों को जला दें. लेकिन, समय के साथ होली मनाने का रूप बदलता जा रहा है. अबीर-गुलाल के स्थान पर रासायनिक रंगों, डीजल, मोबिल आदि का इस्तेमाल किया जाने लगा है, जो नुकसानदेह है. फूहड़ता का बोलबाला हो गया है, जो होली जैसे सामाजिक त्योहार की मिठास को कम कर रहे हैं. हमें चाहिए कि होली के मूल संदेश को समझें और उसका प्रचार-प्रसार करें.

जफर अहमद, मधेपुरा

समय से परीक्षा नहीं होने से परेशानी

प्रदेश में प्राइवेट से मेडिकल, फार्मेसी, इंजीनियरिंग व पारा मेडिकल की पढ़ाई कर रहे हजारों छात्रों का भविष्य संकट में है. क्योंकि विश्वविद्यालय की ओर से समय पर परीक्षा नहीं ली जा रही है, जिसके कारण छात्रों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है. चार साल की पढ़ाई पांच-छह साल में पूरी हो रही है. इससे छात्रों का आत्मविश्वास कमजोर होता है और हजारों छात्रों का साल खराब होता है. इसके लिए सरकार और विश्वविद्यालय के कुलपति को इस समस्या पर विचार करने की जरूरत है.

सुधाकर ठाकुर, कटिहार

पोस्ट करें : प्रभात खबर, प्लॉट संख्या डी-9-10, पाटलिपुत्र इंडस्ट्रियल एरिया, पटना (बिहार) - 800013, ■ मेल करें : patna @prabhatkhabar .in पर ■ ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो. लिपि रोमन भी हो सकती है.

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • सोमवार • 25 मार्च • 2024
www.rashtriyasahara.com

मास्को हमले की प्रवृत्ति

रूस की राजधानी मास्को के एक संगीत सभागार में हुए भीषण आतंकवादी हमले की प्रकृति अन्य आतंकी हमलों से सर्वथा अलग है। वैश्विक दृष्टि से इसके नतीजे बहुत दूरगामी हो सकते हैं। इस हमले में सौ से अधिक लोग मारे गये हैं और भारी संख्या में घायल हुए हैं। ग्यारह संदिग्ध आतंकवादियों को हिरासत में लिया गया है। रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन का पांचवीं बार भारी मतों से चुनाव जीतने के कुछ ही दिन बाद यह हमला हुआ है। जाहिर है पुतिन और उनके समर्थकों को जीत की खुशी को ज्यादा दिनों तक मनाने का अवसर नहीं मिला। राष्ट्रपति पुतिन को सुरक्षा एजेंसियों ने बताया है कि हमलावर तुर्की से आए थे तथा वारदात के बाद यूक्रेन

भागने की फिराक में थे। यदि मास्को के इस भीषण हमले में यूक्रेन का हाथ होने के पुख्ता सबूत मिलते हैं तो रूस-यूक्रेन संघर्ष भयावह रूप ले सकता है और परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता। हालांकि यूक्रेन ने इस हमले में अपनी किसी भी तरह की संलिप्तता की खबरों का खंडन किया है। अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के प्रवक्ता एड्रियन वॉरसन ने बताया कि रूस में आतंकी हमले की जानकारी इस महीने की शुरूआत में ही दे दी गई थी। साथ ही यहां तक कहा गया था कि आतंकी एक बड़े समारोह को निशाना बना सकते हैं। हकीकत क्या है और इस हमले का मास्टर माइंड कौन है यह तो जांच के बाद ही पता चल पाएगा, लेकिन इस भीषण आतंकी हमले की जिम्मेदारी इस्लामिक स्टेट(खुरासान) ने ली है जो भारत को इस्लामी खलीफाशाही का खुरासान सूबा बनाना चाहता है। वस्तुतः भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में राजनीतिक गतिविधियां और विरोध की आड़ में इस्लामिक (खुरासान) अपना खूनी खेल खेलना चाहती है। जाहिर है भारत को सचेत रहने की जरूरत है। इसी बीच यूक्रेन के विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा इस महीने के अंत में भारत की यात्रा पर आने वाले हैं। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि विदेशी मंत्री कुलेबा प्रस्तावित शांति वार्ता में भारत का समर्थन जुटाने के लिए नई दिल्ली आ रहे हैं। भारत के लिए यह उचित होगा कि वह फिलहाल मास्को में हुए भीषण हमले से जुड़ी घटनाओं पर अपनी नजर रखे। इस हमले के बाद रूस-यूक्रेन को लेकर ज्यादा आशंकित है। जाहिर है ऐसे संदेह और अनिश्चितता के वातावरण में भारत के लिए यह अच्छा होगा कि वह किसी प्रस्तावित शांति वार्ता से अपने को अलग रखे।

शांत पड़ोसी की दरकार

भारत आतंकवाद की समस्या को नजरंदाज करने के कतई पक्ष में नहीं है। विदेश मंत्री डॉक्टर जयशंकर ने सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान में कहा। अपनी पुस्तक वाई भारत मैटर्स पर व्याख्यान सत्र के बाद आयोजित सवाल-जवाब के सत्र के दौरान ये विचार रखे। पाकिस्तान के साथ भारत के संबंधों पर उन्होंने कहा हर देश स्थिर पड़ोसी चाहता है, और कुछ नहीं तो कम-से-कम आप शांत पड़ोस तो चाहते ही हैं। दुर्भाग्य से भारत के साथ ऐसा नहीं है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि भारत के खिलाफ पाकिस्तान आतंकवाद को प्रायोजित कर रहा है। ऐसे पड़ोसी से आप कैसे निपटेंगे, जो खुलेआम स्वीकारता है कि आतंकवाद को शासन के

साधन के रूप में इस्तेमाल करता है। उन्होंने सख्ती से कहा कि मेरे पास अब कोई त्वरित समाधान नहीं है, लेकिन भारत अब इन समस्याओं को नजरंदाज नहीं करेगा। अरुणाचल प्रदेश पर चीन के दावे को भी उन्होंने खारिज करते हुए कहा कि यह दावा शुरू से ही बेतुका है। विदेश मंत्री पहले भी विभिन्न मौकों पर वैश्विक मंचों से पाकिस्तान को उसकी हरकतों के कारण लताड़ लगाते रहे हैं। कुछ दिन पहले उन्होंने पाकिस्तना को चेतावनी देते हुए कहा था कि कोई भी देश कभी मुश्किल स्थिति से बाहर नहीं निकल सकता। जब तक समृद्ध शक्ति न बन जाए। स्पष्ट है कि पड़ोसी देशों के प्रति सरकार का दृष्टिकोण बदला है। जयशंकर ने विभिन्न चुनौतियों का बेहतर ढंग से निपटारा कर सरकार का रुख दुनिया के समक्ष पेश किया है। राजनेता न होने के बावजूद उन्होंने अपने फैसलों व बयानों से पाकिस्तान को विभिन्न मंचों से सख्त चेतावनी देने में कभी संकोच नहीं किया। वे बार-बार सलाह देते रहे हैं कि गंभीर आर्थिक संकट से निकलने के लिए नीतिगत विकल्प खोजने चाहिए। जयशंकर दूसरे बड़बोले नेताओं की तरह नहीं हैं। उनकी छवि धीर-गंभीर व सख्त लहजे में अपना मत रखने वालों की है। उनके रवैये को इसी से समझा जा सकता है कि वे अपनी सरकार द्वारा विकल्प देने व समर्थन के लिए राजी रहने की बात करते हैं। मगर इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि सारी मशक्कत के बावजूद देश पाक व चीन से सीमा विवाद को लेकर किसी नतीजे में नहीं पहुंचा है। न ही आतंकवादी गतिविधियों पर लगाम ही कसी जा सकी है। यह मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं।

अतीत का पन्ना/ के. विक्रम राव

सियासत में सेक्स, संसद में बोसा

आमूमन हर चुनाव की ऐन बेला पर किसी न किसी राजनेता का यौन प्रकरण उछलता ही रहता है। इस बार तृणमूल सांसद लावण्यवती महुआ मोइत्रा की संसदीय घटना खूब प्रचारित हुई। मगर वह आर्थिक अपराध वाली थी। हालांकि उनकी पार्टी के ही कद्दावर नेता माफिया डॉन मियां शाहजहां शेख का नाम खूब चल रहा है। उस पर महिला यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप हैं। सरसरी तौर पर एक उदगार याद आया 87-वर्षीय सांसद मियां मुहम्मद फारूक अब्दुल्ला का 2021 वाला। जम्मू के एक पुस्तक विमोचन समारोह (17 जनवरी) में वे बोलेः 'जब से यह महामारी (कोविड) आई है, मैं अपने शरीके-हयात (जीवन संगिनी) का बोसा नहीं ले पाया हूं। आलिंगन तो दूर की बात है।' सभागार ठहाकों से गूंज उठा।

अनायास याद आ गई राज्य सभा के चुम्बन पर चली एक पुरानी रोचक बहस (शुक्रवार, 27 फरवरी, 1970)। चौवन वर्ष हुए। इसमें तब साठ साल पार कर चुके सांसदों ने चुस्कियां लेते हुए चुंबन पर विचारों का दिनभर आदान-प्रदान किया था। सदन में विषय था : 'क्या चित्रपट पर चुम्बन का दृश्य हो?' न्यायमूर्ति जीडी खोसला आयोग की रपट मेज पर रखी गई थी। फिल्म सेंसर बोर्ड के गठन की आवश्यकता पर बहस हो रही थी। इसमें कम्युनिस्ट, प्रजा सोशलिस्ट, संगठन कांग्रेस आदि के सांसद वक्ताओं में थे। अध्यक्षता उपराष्ट्रपति न्यायमूर्ति (रिटायर्ड) गोपाल स्वरूप पाठक कर रहे थे। इलाहाबाद में नेहरू परिवार के वकील रहे। चर्चा खुलकर हो रही थी। तभी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के बांका बिहारी दास ने सुझाया कि पचास वर्ष से ऊपर अर्थात अधेड़ सदस्य, प्रश्न न पूछें। उनको प्रतिबंधित कर दिया जाए। इस पर संगठन (एस. निजलिंगप्पा की अध्यक्षता वाली) कांग्रेस ने विरोध दर्ज किया। उनका सुविचारित सुझाव था कि रुमानियत हेतु कोई आयु सीमा नहीं होती। इस पर फुर्ती से 68-वर्षीय (1902 में जन्मे) अजित प्रसाद जैन (चन्दौसी) ने रहस्योद्घाटन किया कि साठ के पश्चात ही तो रंगीला मिजाज उपजता है। बुजुर्गियता की यह नूतन परिभाषा लगी। जैन साहब यूपी में खाद्य मंत्री रह चुके थे तथा कर्नाटक के राज्यपाल भी थे। इतनी देर तक गुदगुदाती परिचर्चा को सुनकर भाकपा सांसद कामरेड भूपेश गुप्ता (पश्चिम बंगाल) क्यों बगले झांकते? क्यों पिछड़ते? उनकी राय थी कि, 'हम उम्रदराज सांसदों को युवा पीढ़ी से प्रतिस्पर्धा नहीं करनी चाहिए। रुमानी दौर उनका है। हमारा तो बीत चुका है।'

न्यायिक सक्रियता के मायने

न्यायपालिका

विनीत नारायण

हाल ही में देश की शीर्ष अदालत द्वारा दिए गए कई अहम फैसलों से देश में न्यायिक सक्रियता अचानक बढ़ी है। इसके पीछे देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डॉ. डी वाई चंद्रचूड़ की अहम भूमिका को देखा जा रहा है। हाल ही में मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ का एक राष्ट्रीय टीवी चैनल को दिया गया इंटरव्यू चर्चा में आया है। जब से जस्टिस चंद्रचूड़ ने भारत के मुख्य न्यायाधीश का पद सम्भाला है तभी से देश की शीर्ष अदालत में कई परिवर्तन देखने को मिले हैं। ऐसे कई क्रांतिकारी कदम उठाए गए हैं जो वकीलों, याचिकाकर्ताओं, पत्रकारों और आम जनता के लिए फायदेमंद साबित हुए हैं।

देश भर के नागरिकों को संदेश देते हुए मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा, 'सुप्रीम कोर्ट हमेशा भारत के नागरिकों के लिए मौजूद है। चाहे वे किसी भी धर्म के हों, किसी भी सामाजिक स्थिति के हों, किसी भी जाति अथवा लिंग के हों या फिर किसी भी सरकार के हों। देश की सर्वोच्च अदालत के लिए कोई भी मामला छोटा नहीं है।' इस संदेश से उन्होंने देश भर के आम नागरिकों को यह विश्वास दिलाया है कि न्यायपालिका की दृष्टि में कोई भी मामला छोटा नहीं है। जस्टिस चंद्रचूड़ आगे कहते हैं कि, ''कभी-कभी मुझे आधी रात को ई-मेल मिलते हैं। एक बार एक महिला को मेडिकल अबॉर्शन की जरूरत थी। मेरे स्टाफ ने मुझसे देर रात संपर्क किया। हमने अगले दिन एक बेंच का गठन किया। किसी का घर गिराया जा रहा हो, किसी को उनके घर से बाहर किया जा रहा हो, हमने तुरंत मामले सुने।'

इससे यह बात साफ है कि देश की सर्वोच्च अदालत देश के हर नागरिक को न्याय दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। सूचना और प्रौद्योगिकी का हवाला देते हुए मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ ने यह भी संदेश दिया कि देश की सर्वोच्च अदालत अब केवल राजधानी दिल्ली तक ही सीमित नहीं है। इंटरनेट के जरिये अब देश के कोने-कोने में हर कोई अपने फोन से ही सुप्रीम कोर्ट से जुड़ सकता है। आज हर वो नागरिक चाहे वो याचिकाकर्ता न भी हो देश की शीर्ष अदालत में हो रही कार्यवाही का सीधा प्रसारण देख सकता है। इस कदम से पारदर्शिता बढ़ी है। जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि, 'अदालतों पर जनता का पैसा खर्च होता है, इसलिए उसे जानने का हक है। पारदर्शिता से जनता का भरोसा हमारे काम पर और बढ़ेगा।' टेक्नोलॉजी पर बात करते हुए जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि, 'टेक्नोलॉजी के जरिए आम लोगों तक इंसाफ पहुंचाना मेरा मिशन है। टेक्नोलॉजी के जमाने में हम सबको साथ लेकर चलने की कोशिश कर रहे है। हर किसी के पास महंगा स्मार्टफोन या लैपटॉप नहीं है। केवल इस कारण से कोई पीछे

ना छूटे, इसके लिए हमने देश भर की अदालतों में '18000 ई-सेवा केंद्र' बनाए हैं। इन सेवा केंद्रों का मकसद सारी ई-सुविधाएं एक जगह पर मुहैया कराना है।' यह एक अच्छी पहल है जो स्वागत योग्य है। जरा सोचिए पहले के जमाने में जब किसी को किसी अहम केस की जानकारी या उससे संबंधित दस्तावेज चाहिए होते थे तो उसे दिल्ली के किसी वकील से संपर्क साध कर कोर्ट की रजिस्ट्री से उसे निकलवाना पड़ता था, जिसमें काफी समय खराब होता था, परंतु आधुनिक टेक्नोलॉजी के जमाने में अब यह काम मिनटों हो जाता है।

टेक्नोलॉजी के अन्य फायदे बताते हुए जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि, '29 फरवरी 2024 तक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये देश भर की अदालतों में लगभग 3.09 करोड़ केस सुने जा चुके हैं। इतना ही नहीं देश भर के करीब 21.6 करोड़ केसों का सारा डेटा इंटरनेट पर उपलब्ध है। इसके साथ ही क़रीब 25 करोड़ फैसले भी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।' यह देश की न्यायपालिका के लिए उठाया गया एक सराहनीय कदम है। महिला सशक्तिकरण को लेकर जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि, 'फरवरी 2024 में सुप्रीम कोर्ट में 12 महिला वकीलों को वरिष्ठ वकील की उपाधि दी गई। अगर आजादी के बाद से 2024 की बात करें तो सुप्रीम कोर्ट में केवल 13 वरिष्ठ महिला अधिवक्ता थीं। यह एक बड़ी उपलब्धि है। इतना ही नहीं आज सुप्रीम कोर्ट में काम कर रही महिला रजिस्ट्रार देश के कोने-कोने से आई हुई हैं। ये वो न्यायिक अधिकारी हैं, जो जिला अदालत की वरिष्ठ न्यायाधीश होती हैं। वे अपने अनुभव के आधार पर सुप्रीम कोर्ट के कई जजों की सहायता कर रहीं हैं। इनके अनुभव पर ही सुप्रीम कोर्ट को देश भर की अदालतों के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलती है जो न्यायिक प्रक्रिया को जनता के लिए लाभकारी बनाती है।

इसके साथ ही हम इस बात पर भी ध्यान देते हैं कि महिलाओं को कोर्ट में काम करते समय एक सुरक्षित व सम्मानित वातावरण भी मिले।' इस साक्षात्कार का सबसे रोचक पक्ष है जस्टिस चंद्रचूड़ की दिनचर्या का खुलासा। वे गत 25 वर्षों से रोज सुबह 3.30 बजे उठते हैं। फिर योग, ध्यान, अध्ययन और चिंतन करते हैं। वे दूध से बने पदार्थ नहीं खाते बल्कि फल सब्जियों पर आधारित खुराक लेते हैं। हर सोमवार को व्रत रखते हैं। इस दिन साबूदाना की खिचड़ी या फिर अधिक मात्रा में रामदाना प्रयोग करते हैं, जो कि सबसे सस्ता, हल्का और सुपाच्य खाद्य है। रोचक बात ये है कि उनकी पत्नी, जिन्हें वे अपना सबसे अच्छा मित्र मानते हैं, इस दिनचर्या में उनका पूरा साथ निभाती है। आज के दौर में जब प्रदूषण व मिलावट के चलते हर आम आदमी जहर खाने को मजबूर है और तनाव व बीमारियों से ग्रस्त है, जस्टिस चंदचूड़ का जीवन प्रेरणास्पद है।

जस्टिस चंद्रचूड़ को शायद याद होगा कि 1997 से 2000 के बीच सर्वोच्च अदालत के मुख्य न्यायाधीशों के अनैतिक आचरण पर मैंने कई बड़े खुलासे किए थे। जिनकी चर्चा दुनिया भर के मीडिया में हुई थी। तब मेरी उम्र मात्र 42 वर्ष थी। इसलिए तब मेरा विरोध 'अदालत की अवमानना कानून के दुरूपयोग' को लेकर भी बहुत प्रखर था। इस पर मैंने एक पुस्तक भी लिखी थी जो अब मैं जस्टिस चंद्रचूड़ को इस आशा से भेजूंगा कि वो इस मामले पर भी सर्वोच्च अदालत की तरफ़ से निचली अदालतों को स्पष्ट निर्देश जारी करें। अदालतों की पारदर्शिता स्थापित करने में ये एक बड़ा कदम होगा।

> देश की सर्वोच्च अदालत देश के हर नागरिक को न्याय दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। सूचना और प्रौद्योगिकी का हवाला देते हुए मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ ने यह भी संदेश दिया कि देश की सर्वोच्च अदालत अब केवल राजधानी दिल्ली तक ही सीमित नहीं है। इंटरनेट के जरिये अब हर कोई अपने फोन से ही कोर्ट से जुड़ सकता है। आज हर वो नागरिक चाहे वो याचिकाकर्ता न भी हो शीर्ष अदालत की कार्यवाही का सीधा प्रसारण देख सकता है।

दुनिया भर में मधुमक्खियों की 35 करोड़ से ज्यादा बस्तियां

(स्रोत : मीडिया इन्पुट्स)

- मधुमक्खी के छत्तों के बारे में तो हम जानते हैं, लेकिन जंगली जीवन वाली मधुमक्खियों की बस्तियां किसने देखी हैं। दक्षिण-पूर्व इंग्लैंड में पेड़ों के सर्वेक्षण में 36 जंगली कॉलोनियों के प्रवेश द्वार की औसत ऊंचाई जमीन से लगभग सात मीटर ऊपर मिली।
- एक अनुमान है कि दुनिया भर में जंगली मधुमक्खियों की 20 से 30 करोड़ से ज्यादा कॉलोनियां हैं।
- अटार्कटिका को छोड़कर सभी महाद्वीपों में लगभग 35 करोड़ मधुमक्खियों की बस्तियां हैं, जिनमें से अधिकांश जंगली हैं। प्रत्येक बस्ती 23 लोगों के लिए एक कॉलोनी के बराबर है।

गांधी विचार का एक जरूरी मूल तत्व गई हृदय परिवर्तन। ताकत के जोर से नहीं अपने आचरण और संवाद से लोगों को बदलने की कोशिश। सौ में सत्तर बार नाकामयाब हो सकते हैं, लेकिन जिन तीस को आपने बदला है वही आपका हासिल है। यह कोशिश कितनी ही बार असफल हो, छोड़नी नहीं चाहिए।

अशोक कुमार पांडेय, लेखक
@Ashok_Kashmir

नई पहचान बना रहा उत्तर प्रदेश

उपलब्धि **पूनम कुमारी सिंह**

शक्ति स्वरूपा माताओं की रक्षा के लिए मैं जान की बाजी लगा दूंगा, जीवन खपा दूंगा। भारत की धरती पर क्या कोई शक्ति के विनाश की बात कर सकता है...प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के तेलंगाना रैली में कहे गए ये शब्द आजकल खूब चर्चा में हैं। ये शब्द सिर्फ बोले नहीं गए हैं बल्कि भाजपा सरकार ने इसे हकीकी रूप भी दिया है। देश की आधी आबादी के सशक्तिकरण के लिए अपने कार्यकाल के प्रारम्भ से ही मोदी जी अत्यंत सजग रहे हैं।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम से लेकर महिला सशक्तिकरण हेतु तमाम योजनाओं को लाने और उनके क्रियान्वयन में मोदी सरकार जैसी प्रतिबद्धता पहले कभी नहीं देखी गई। महिलाओं के लिए केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को लागू करने में भी उत्तर प्रदेश अग्रणी रहा है। चाहे वह उज्ज्वला गैस कनेक्शन योजना हो, घर-घर शौचालय की बात हो या प्रधानमंत्री आवास योजना हो, राज्य स्तर पर महिला केंद्रित योजनाओं, यथा-निराश्रित महिला पेंशन योजना, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना, उत्तर प्रदेश रानी लक्ष्मीबाई महिला एवं बाल सम्मान कोष से उत्तर प्रदेश की महिलाएं सशक्त होने के साथ-साथ अपनी एक अलग पहचान बना रही है। निश्चय ही यह इस बात का सूचक है कि वर्तमान योगी सरकार समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। कुल मिलाकर पिछले सात वर्षों में मोदी जी के मार्गदर्शन और योगी जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश विकास/प्रगति के रास्ते पर अनवरत चलता हुआ अपनी नई पहचान बनाने में सफल रहा है। 25 को योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा सरकार के उत्तर प्रदेश में सात वर्ष पूरे हो रहे हैं। इन सात वर्षों में उत्तर प्रदेश; आशीष बोस द्वारा अस्सी के दशक में दिए गए बीमारू राज्य की श्रेणी से बहुत आगे निकल, विकास की एक नई गाथा लिख रहा है। यहां हर क्षेत्र में हो रहे अप्रत्याशित विकास से उत्तर प्रदेश, देश-विदेश के निवेशकों की पहली पसंद बन गया है, जो उत्तर प्रदेश योगी जी के आने के पहले, दंगे, अपहरण, आतंक, वसूली, घंटों बिजली की कटौती, रोजगार के लिए प्रदेशवासियों के पलायन के लिए जाना

जाता था; वही उत्तर प्रदेश आज ईज ऑफ डूइंग बिजिनेस में देश में दूसरे स्थान पर रहने, भारत के जीडीपी में 9.2 प्रतिशत के योगदान देने, रेवेन्यू सरप्लस स्टेट होने, राज्य की सकल घरेलू उत्पाद में दोगुने से अधिक की वृद्धि होने और प्रति व्यक्ति आय दोगुना होने के साथ-साथ 96 लाख एमएसएमी यूनिट्स के लिए जाना जा रहा है। आज कई क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश देश के राज्यों में अग्रणी है। उदाहरण के लिए एक्स्प्रेस वे, एअरपोर्ट्स, चिकित्सा महाविद्यालयों की संख्या यहां सर्वाधिक है। गेहूं, गन्ना ,चीनी और दुग्ध उत्पादन में उत्तर प्रदेश, देश के राज्यों में अग्रणी है। इसके साथ ही साथ प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में प्रारम्भ की गई केंद्र सरकार की तमाम योजनाओं, यथा प्रधानमंत्री आवास योजना, जनधन योजना, मुद्रा स्कीम, स्वनिधि योजना, उज्ज्वला योजना, घर-घर शौचालय योजना, और ऐसी अनेक योजनाओं को लागू करने में भी उत्तर प्रदेश अग्रणी रहा है। केन्द्र सरकार की ये तमाम योजनाएं, देश के अन्य राज्यों के साथ-साथ उत्तर प्रदेश के आम नागरिकों को मानवीय गरिमा के साथ जीवन जीने में अत्यंत सहायक रही हैं। इन सात वर्षों में योगी जी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार, भारत के ऐतिहासिक विरासत एवं संस्कृति को सहेजते हुए सुसमृद्ध पर्यटन से प्रदेश की सांस्कृतिक डिप्लोमेसी को नया विस्तार दे कर अर्थोपार्जन का रास्ता प्रशस्त कर रही है।

आज प्रदेश में बेरोजगारी की दर घटकर 2.4 फीसद रह गई है। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान, युवाओं को नौकरी की अपेक्षा स्वयं रोजगार के लिए प्रोत्साहित करने वाला है। बेसिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा के साथ ही व्यावसायिक और कौशल शिक्षा के क्षेत्र में भी योगी सरकार ने अप्रत्याशित सुधार और पहल किया है। स्कूलों में अनुशासनबद्ध तरीके से पढ़ाई हो रही है। शिक्षा पर पहले की तुलना में अधिक ध्यान दिया जा रहा है, अधिक व्यय किया जा रहा है। केंद्र की मोदी सरकार ने पिछले दस वर्षों में कृषि और किसानों पर विशेष ध्यान दिया है। किसान सम्मान निधि योजना, अभूतपूर्व है, जिसने देश के सीमांत किसानों को सम्मान दिया। केंद्र सरकार का अनुकरण करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने कृषि और किसान पर पर्याप्त ध्यान दिया और पहले से चली आ रही अन्य योजनाओं के साथ-साथ कई नई योजनाएं प्रस्तावित कीं, जिसमें राज्य कृषि विकास योजना ,यू.पी.एग्रिज योजना, ऑटोमेटिक वेदर स्टेशन, ऑटोमेटिक रेन गेज के साथ ही मुख्यमंत्री खेत सुरक्षा योजना प्रमुख है। उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, दुग्ध विकास तथा पशुपालन पर पिछले वर्षों की तुलना में अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

मानसिक रोग **श्रीराम शर्मा आचार्य**

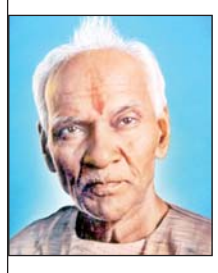

न केवल शारीरिक वरन मानसिक रोगों की भी इन दिनों बाढ़ आई हुई है। सिर दर्द, आधा शीशी, जुकाम, अनिद्रा, उन्माद, बेहोशी के दौरे आदि तो प्रत्यक्ष और प्रकट मस्तिष्कीय रोग हैं। चिंता, भय, निराशा, आशंका, आत्महीनता जैसे अवसाद और क्रोध, अधीरता, चंचलता, उदण्डता, ईर्ष्या, द्वेष, आक्रमण जैसे आवेश मनःसंस्थान को ज्वार-भाटों की तरह असंतुलित बनाए रहते हैं। फलतः मानसिक क्षमता का अधिकांश भाग निरर्थक चला जाता है एवं अनर्थ बुनने में लगा रहता है। अपराधी दुष्प्रवृत्तियों से लेकर आत्म हत्या तक की अगणित उत्तेजनाएं विकृत मस्तिष्क के उपार्जन ही तो हैं। तरह-तरह की सनकों के कितने ही लोग सनकते रहते हैं और अपने तथा दूसरों के लिए संकट खड़े करते हैं। दुर्व्यसनों और बुरी आदतों से ग्रसित व्यक्ति अपना तथा अपने साथियों का कितना अहित करते हैं, यह सर्वविदित है। पागलों की संख्या तो संसार में तेजी के साथ बढ़ रही है। जनसंख्या इसी चपेट में आई हुई दिखाई पड़ेगी। शारीरिक रोगों का विस्तार भी तेजी से हो रहा है। दुर्बलता और रुग्णता से सर्वथा अछूते व्यक्ति ही बहुत स्वल्प संख्या में मिलेंगे। रंगाई से पूर्व धुनाई आवश्यक है। यदि कपड़ा मैला-कुचैला है, तो उस पर रंग ठीक तरह न चढ़ेगा। इस प्रयास में परिश्रम, समय और रंग सभी नष्ट होंगे। कपड़े को ठीक तरह धो लेने के उपरांत उसकी रंगाई करने पर अभीष्ट उद्देश्य पूरा होता है। ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक प्रगति के लिए की गई साधना का समुचित प्रतिफल प्राप्त करने के लिए उन अवरोधों का समाधान किया जाना चाहिए जो दुष्कर्मों के फलस्वरूप आत्मोत्कर्ष के मार्ग में पग-पग पर कठिनाई उत्पन्न करते हैं। दीवार बीच में हो तो उसके पीछे बैठा हुआ मित्र अति समीप रहने पर भी मिल नहीं पाता। कषाय-कल्मषों की दीवार ही हमें अपने इष्ट से मिलने में प्रधान अवरोध खड़ा करती है। उपासना का प्रतिफल प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि आत्मशोधन की प्रक्रिया पूर्ण की जाए। हठयोग में शरीर शोधन के लिए नेति-धोति, वस्ति, न्यौली-व्रजोली आदि क्रियाएं करने का विधान है। राजयोग में यह शोधन कार्य यम-नियमों में करना पड़ता है। भोजन बनाने से पूर्व चौका-चूल्हा, बर्तन आदि की सफाई कर ली जाती है। आत्मिक प्रगति के लिए भी जरूरी है कि अपनी गतिविधियों का परिमार्जन किया जाए।

रीडर्स मेल

दूसरों का भी ख्याल रखें होली में

विश्व में सबसे ज्यादा त्योहार, मेले और पर्व अगर किसी देश में मनाए जाते हैं तो वो है हमारा महान भारत। हमारे देश प्राचीन समय से ही विभिन्न मौकों पर कई पर्वो तथा त्योहारों का आयोजन होता आ रहा है। यहां पर नित-प्रतिदिन कोई न कोई त्योहार या कहीं न कहीं मेले का आयोजन होता है। सभी त्योहार हमें अपनी संस्कृति से बांधे रखते हैं। ये सभी त्योहार सभी को प्रेम और भाईचारे का संदेश देते हैं। यह त्योहार हमें यह प्रेरणा देता है कि हमें अपनी जिंदगी को रंगीन बनाने के साथ साथ दूसरों की जिंदगी में भी रंग भरने की कोशिश करनी चाहिए, न कि हमें ऐसा कोई काम करना चाहिए, जिससे किसी की हमारी वजह से जिंदगी के रंग फीके हों या जिंदगी रंगहीन हो। होली का त्योहार हमें गरीब, जातपात और धर्म के भेदभाव से दूर रहने की शिक्षा देता है। कुछ लोग होली में नशा करके हुडदंग भी मचाते है, कुछ ऐसे रंगों का प्रयोग भी करते हैं, जो शरीर के लिए उचित नहीं होते। इन सबसे हर किसी को बचना चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

ईमानदार होंगे तो बाहर भी आएंगे

ईडी ने शराब नीति केस में केजरीवाल को गत दिन गिरफ्तार किया गया। उनके समर्थक सड़क पर प्रदर्शन कर रहे हैं। यह पहली घटना है कि सीएम के पद पर रहते केजरीवाल की धरपकड़ की गई है। ईडी के नौ समन के बाद भी केजरीवाल हाजर नहीं हुए तब उनके घर से केजरीवाल की धरपकड़ की गई। आप कार्यकर्ताओं को इतना हंगामा खड़ा करने की नौबत क्यों आ रही है? केजरीवाल गुनहगार नहीं है तो किसी कीमत पर कानून उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। कमीशन बेस पर केजरीवाल के घर पर भी मीटिंग होने की जानकारी ईडी अधिकारियों को मिली है। कानून से कोई बड़ा नहीं है। निर्दोष हैं तो किसी भी तरह से छूट जाएंगे। मतदाताओं को बड़ी-बड़ी हांकने वाले केजरीवाल से अभी पूछताछ चल रही है। ईडी ने केजरीवाल पर पांच आरोप लगाए हैं। 338 करोड़ रुपए आम आदमी के पास पहुंचे होने की बात सर्वोच्च अदालत की सुनवाई के दौरान रखी थी। आगे देखना है इस केस की तफ्तीश में क्या बाहर आता है?

कांतिलाल मांडोत, सूरत, गुजरात

बेवजह की तुलना

143 देशों के विश्व खुशहाली रैंकिंग में भारत 126वें स्थान पर रहा है, जिसमें फिनलैंड ने लगातार छठी बार सर्वोच्च स्थान पाया है। यह बात भी गौर करने की है कि भारत में दस अंकों का सुधार हुआ है, फिर भी भारत के लिए आश्चर्यकारी एवं विचारणीय है। फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश करार दिया गया है, पर गौर कीजिए, वहां आबादी सिर्फ 56 लाख है। मतलब, इस देश की चुनौतियां बहुत कम हैं। धार्मिक वातावरण ऐसा है कि विद्वेष की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। छोटा राष्ट्र होने की वजह से सरकारों के सामने समस्याएं कम है। अतः फिनलैंड की स्थिति अच्छी है, पर उसकी तुलना भारत जैसे 140 करोड़ आबादी वाले देश से कैसे हो सकती है? यह बहस का विषय है। भारतीयों के बीच संतोष के भाव, प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, सामाजिक सहयोग, जीवन प्रत्याशा, स्वतंत्रता, उदारता के भाव में विस्तार जारी रहना चाहिए। भारत का वर्तमान खुशहाली वाला समाज बनने को तत्पर है, भले ही दुनिया की कुछ खुशहाली रैंकिंग तय करने वाली एजेंसियां इससे असहमत हो।

ललित गर्ग, दिल्ली

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
• राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण

वर्ष-33, अंक 223

सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवरंग हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
। समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750

आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

https://t.me/AllNewsPaperPaid

विचार
नवभारत टाइम्स
नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली । सोमवार, 25 मार्च 2024

दोषियों को सजा मिले

रूस में मॉस्को के बाहरी इलाके के एक कॉन्सर्ट हॉल पर हुआ आतंकवादी हमला बेहद शर्मनाक है। इसकी जिम्मेदारी इस्लामिक स्टेट ने ली है, जबकि रूस ने इस मामले में यूक्रेन पर उंगली उठाई है।

यूक्रेन पर उंगली | रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पूतिन ने दावा किया है कि इस हमले के संदेह में 11 लोगों को हिरासत में लिया गया है। इनमें चार बंदूकधारी भी शामिल हैं, जिन्होंने कॉन्सर्ट हॉल पर गोलीबारी की थी। पूतिन ने यह भी कहा कि हमलावर यूक्रेन भागने की फिराक में थे, लेकिन उन्हें बॉर्डर के पास गिरफ्तार कर लिया गया। रूस की खुफिया एजेंसी FSB ने भी दावा किया है कि हमलावरों के संपर्क यूक्रेन में कुछ लोगों से थे। लेकिन पूतिन या वहां की एजेंसियों ने हमले में सीधे-सीधे यूक्रेन का हाथ होने की बात अभी तक नहीं कही है।

बिना सबूत उंगली न उठाए रूस

यूक्रेन का इनकार | 25 महीनों से रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध चल रहा है। ऐसे में पूतिन का उसकी ओर उंगली उठाना हैरान नहीं करता। लेकिन यूक्रेन ने दो टूक कहा कि इस हमले से उसका कोई लेना-देना नहीं है। वह तो अपनी संप्रभुता बचाने की लड़ाई लड़ रहा है। वह रूसी कब्जे से अपने इलाकों को आजाद कराना चाहता है और उसकी अदावत रूस के नागरिकों से नहीं है।

क्या है डर | यूक्रेन को डर है कि इस घटना के बहाने पूतिन फौज में नई भर्तियां करने की कोशिश करेंगे और उसके खिलाफ युद्ध तेज करेंगे। वह शुक्रवार रात के इस आतंकवादी हमले से पहले ऐसी आशंका जाहिर कर चुका था। वैसे, यूक्रेन शायद ही ऐसी गलती करे। उसकी वजह यह है कि अगर उसके आतंकवादी हमले में शामिल होने की बात सच हुई तो उसे पश्चिमी देशों का सहयोग मिलना बंद हो जाएगा। ऐसा होने पर यूक्रेन की हार तय है और वह इस बात को बखूबी समझता है।

रूस के कई दुश्मन | यह भी सच है कि दो साल से यूक्रेन के साथ चल रहे युद्ध के कारण रूस के कई दुश्मन पैदा हो गए हैं। इनमें जंग के मैदान से लौटने वाले रूसी राष्ट्रवादियों का समूह भी है। वहीं, पहले चेचन्या और दागेस्तान में फौज की कार्रवाई के कारण भी रूस आतंकवादी संगठनों के निशाने पर रहा है। लेकिन 2015 में सीरिया में इस्लामिक स्टेट और वहां के शासक बशर अल असद के बीच चल रही जंग में रूस ने असद का साथ दिया था। इसलिए, फिलहाल इस्लामिक स्टेट वाला एंगल ही सही लग रहा है।

शांति है जरूरी | इसमें कोई दो राय नहीं है कि किसी भी तरह का आतंकवाद निंदनीय है। और रूस को पूरा अधिकार है कि वह इसके दोषियों की पहचान कर उन्हें सजा दिलवाए। लेकिन अगर वह इस घटना का इस्तेमाल बिना साक्ष्य के यूक्रेन के खिलाफ युद्ध को तेज करने के लिए करता है तो यह सही नहीं होगा। इसके बजाय उसे यूक्रेन के साथ युद्ध रोकने और शांति स्थापित करने पर गौर करना चाहिए।

चक्र-व्यू

जाकी जैसी हाय

राहुल पाण्डेय

संस्कृति तो अपनी प्यार में छुहारा बनने की ही थी। प्यार हुआ तो खाना-पीना भूल गए। इकरार हुआ, तो भी खाना-पीना भूल गए। और बदकिस्मती से, जिसकी इस मामले में हमेशा से किस्मत तेज रही है, अगर इनकार हो गया, तब तो बोलना-चालना भी बंद। ऐसे में इंसान छुहारा नहीं बनेगा तो क्या लोढ़ा बनेगा? और छुहारा नहीं बनेगा, तो पता कैसे चलेगा कि प्रेम हुआ है? एक वक्त था कि जब कोठों और मुंडेरों पर ऐसे छुहारों का दिखना आम था। मगर इसी बीच दो बातें हो गईं। इसमें से पहली बात की हमारे फैजाबाद के बुजुर्ग शायर रफीक शादानी साहब ने, जिनकी रूह को खुदा करवट-करवट जन्नत अता फरमाए। एक होली की शाम घंटाघर पर चढ़कर बोले, 'कहत रहेन ना फंसौ प्यार के चक्कर मा/ झुराय के होइ गयेव छोहारा/ उल्लू हौ। देखै लाग्यौ दिनै मा तारा? उल्लू हौ।' यानी इंसान पहले तो प्रेमी बना, फिर छुहारा बना, और अंत में उल्लू भी बन रहा है। अपने साथ इतनी नाइंसाफी तो सिर्फ पत्थर ही होने दे सकता है।

खैर, रफीक तो बस साल में एक बार, और वो भी होली की शाम को घंटाघर पर शाद होते थे। मगर इन विदेशी फिल्मों का क्या करें, जो दूसरी बात बनकर प्रेमियों की लाइफ में हर रात आईं! असल में पश्चिम और पूरब में एक फर्क यह है कि पूरब वाले प्रेम में खाना-पीना छोड़ देते हैं। यहां तक कि सांस भी लेते हैं तो खुद तक को आवाज नहीं आती। वहीं पश्चिम में जब इंसान प्रेम के साथ दिन में दो सलामी और खाने लगता है। इकरार पर दो बर्गर फ्रेंच फ्राई के साथ बढ़ जाते हैं। और अगर इनकार हो गया, तब तो आइसक्रीम का किलो भर का डिब्बा खुलना तय है। साथ में दो लीटर वाली कोला की बोतल भी चलती ही रहती है। पश्चिम में इंसान प्रेम में छुहारा नहीं होता। यह तो सब जानते ही हैं कि किस तरह पश्चिम ने पूरब की संस्कृति का कबाड़ा किया है। इसने हमारी प्रेम में छुहारा बनने की प्राचीन संस्कृति में भी खलल डाल दिया है।

पिछले दिनों खबर आई कि हिंदुस्तान में मोटापा बढ़ रहा है। असल में ये मोटापा नहीं, प्रेम है। हिंदुस्तान में प्रेम बढ़ रहा है। 'शी लव्स मी, शी हेट्स मी' की गिनती अब गुलाब की पंखुड़ियों पर नहीं होती। उसमें अब आलू के चिप्स चलते हैं, फ्रेंच फ्राइज के डिब्बे खत्म किए जाते हैं। इकरार होता है तो डबल चीज का पिज्जा और बढ़ जाता है। फिर आता है इनकार, जो सबसे ज्यादा बढ़ रहा है। मुझे लगता है कि मोटापा सबसे ज्यादा इसलिए बढ़ रहा है, क्योंकि लोगों का दिल ज्यादा टूट रहा है। प्रेमी जी का दिल टूटा है, हाय-हाय कर रहा है। एक हाय निकलती है, एक गुझिया अंदर जाती है। ज्यादा बड़ी हाय चमचम, रसमलाई और लौंगलता तक मांगती है। छुहारे से लोढ़ा बनती इस संस्कृति पर मरहूम रफीक शादानी साहब होते तो क्या कहते? 'कहत रहेन ना फंसौ प्यार के चक्कर मा/ मोटाय के होइ गयेव लोढ़ा/ उल्लू हौ।'

एकदा

अजीजन बाई की लड़ाई

मेरठ में 1857 में हुए गदर की लहर कानपुर तक पहुंच गई। कानपुर में सूबेदार टीका सिंह और शमसुद्दीन खां के घर फिरंगियों के खिलाफ सभी बागी रणनीति बनाते थे। यहां की मशहूर तवायफ अजीजन शमसुद्दीन खां पर फिदा थीं, लिहाजा बागियों की मंत्रणा में उनकी भी भागीदारी होती। 22 मई को नाना साहब पेशवा अपने 300 अंगरक्षकों, दो हाथियों, तीन तोपों और हजारों सिपाहियों के साथ कानपुर में दाखिल हुए। सूबेदार टीका सिंह, ज्वाला प्रसाद और शमसुद्दीन खां पहले से ही उनके विश्वासपात्रों में थे। कानपुर में प्रवेश करते ही वहां के अंग्रेज कलक्टर Charles Hillersdon ने नाना साहब को सरकारी खजाने की जिम्मेदारी सौंप दी। लेकिन 1 जून को नाना साहब ने गंगा जल लेकर संकल्प लिया कि अब जल्दी ही कानपुर में क्रांति करेंगे। इसकी खबर मिलने पर अजीजन ने मिठाई बंटवाई और 400 तवायफों की मस्तानी टोली संगठित कर ली। 4 जून की रात क्रांतिकारियों ने कानपुर छावनी पर हमला कर सरकारी खजाना लूट लिया। उनमें परचम और तलवार के साथ एक घोड़े पर सवार अजीजन भी थीं। उन्होंने भी मुठभेड़ में दो अंग्रेज सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया। 7 जून को कानपुर गढ़ी पर क्रांतिकारियों का कब्जा हो गया। ईस्ट इंडिया कंपनी के झंडे उतारकर जला दिए गए। नाना साहब कानपुर के अधिपति, तात्या टोपे सेनापति, टीका सिंह अश्वारोही दल के प्रमुख, शमसुद्दीन मंत्री तो अजीजन को सलाहकार बनाया गया। लेकिन जल्दी ही चोट खाए फिरंगियों ने जनरल हैवलॉक की मदद से पूरी तैयारी के साथ कानपुर पर जबरदस्त हमला बोल दिया। बड़ी संख्या में बागियों को पकड़कर रास्ते के दोनों तरफ पेड़ों पर लटकाकर फांसी पर चढ़ा दिया। अजीजन को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके रूप पर मोहित अंग्रेज अफसर ने माफ करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन खुद्दार अजीजन ने वीरता के साथ प्रस्ताव को ठुकरा दिया। भारत माता की जय के साथ एक तवायफ शहीद हो गई।

संकलन : **रमेश जैन**

प्रशांत महासागर में जो द्वीपीय देश हैं, उनमें से कुछ को चीन से आसरा तो कुछ को US से उम्मीद

अमेरिका, चीन का हाल Tom & Jerry जैसा

रहीस सिंह

अभी हाल ही में अमेरिका ने प्रशांत महासागर के कुछ द्वीपीय देशों- पलाऊ, मार्शल आइलैंड्स और माइक्रोनेशिया - के साथ 'कॉम्पैक्ट ऑफ फ्री असोसिएशन' की स्थापना कर नई साझेदारी की शुरुआत की। 20 वर्षों के लिए किए गए इस समझौते में इन द्वीपीय देशों को 7.1 अरब डॉलर की सहयोग राशि दी जाएगी। बदले में ये देश अमेरिका को प्रशांत महासागर में मिलिट्री बेस बनाने की अनुमति देंगे।

संतुलन की जरूरत | सवाल यह है कि क्या यह समझौता अमेरिका और इन द्वीपीय देशों के बीच स्वाभाविक साझेदारी का परिणाम है? एक प्रश्न यह भी है कि प्रशांत क्षेत्र में जो पहले से मौजूद असोसिएशन या गठबंधन हैं, वे क्या एशिया-प्रशांत के देशों को चीनी भय से मुक्त कर सके हैं? क्वॉड, ऑकस, फाइव आइज आदि क्या पैसिफिक क्षेत्र में ब्लू इकॉनमी और मैरीटाइम स्ट्रैटिजी में ऐसा आयाम जोड़ने में कामयाब रहे हैं, जिससे इस क्षेत्र की जियो-पॉलिटिक्स में कोई नया संतुलन बने? यदि नहीं तो इस समझौते से ये द्वीपीय देश कितनी उम्मीदें लगाएं?

चीनी चुनौतियों का जवाब | यह समझौता लंबे समय से चल रहे प्रयासों का परिणाम है जिसकी पलाऊ, माइक्रोनेशिया और मार्शल आइलैंड पहले ही मंजूरी दे चुके थे। देरी हो रही थी तो अमेरिका की तरफ से। यूं तो इसे चीन और सोलोमन आइलैंड के बीच हुए सुरक्षा समझौते के जवाब के रूप में देखा जा रहा है। लेकिन यह इस क्षेत्र में अमेरिकी प्रभाव के समक्ष उपजी चीनी चुनौतियों का मुकाबला करने की रणनीतिक तैयारी वाला कदम है। वैसे, ये तीनों द्वीप औपनिवेशिक राज से मुक्ति के बाद से अमेरिका के ही नियंत्रण में हैं। फिर भी चीन इनकी अर्थव्यवस्था में ही नहीं संप्रभुता में भी सेंध लगाने की कोशिश करता रहता है।

क्या हैं ड्रैगन के इरादे
- चीन विशाल बनने को तैयार है
- ताइवान एकीकरण हर कीमत पर
- इस कीमत में युद्ध भी है शामिल

हस्तक्षेप के उपाय | दरअसल, चीन कई अन्य द्वीपीय देशों को अपने बेल्ट ऐंड रोड इनीशटिव (BRI) से जोड़कर उनके प्राकृतिक और भौतिक संसाधनों पर कब्जा जमा चुका है और उनकी संप्रभुता में हस्तक्षेप के उपायों पर काम कर रहा है। चूंकि ये तीनों द्वीपीय देश अमेरिकी नियंत्रण में हैं, इसलिए इनकी सुरक्षा और सहयोग की जिम्मेदारी अमेरिका की बनती है। ऐसे में यदि चीन इन देशों की संप्रभुता और सुरक्षा में सेंध लगाने में कामयाब हो जाता है तो यह अमेरिकी रणनीति की असफलता है।

दो कदम आगे, ढाई कदम पीछे | तो क्या अमेरिका उत्तर पश्चिमी प्रशांत के इन द्वीपीय देशों के जरिए साउथ चाइना-सी तक चीनी स्ट्रैटिजी को काउंटर कर उसे घेरने में सफल हो पाएगा? क्या वह इस सुरक्षा दायरे को ताइवान तक ले जा पाएगा? वैसे इधर के वर्षों की अमेरिका की ताइवान नीति को

AI Image

देखें तो लगता है कि वह दो कदम आगे बढ़ता है और ढाई कदम पीछे हट जाता है। इसी का परिणाम है कि ताइवान के समर्थक कम होते जा रहे हैं।

वाइट पेपर का संदेश | रही बात चीन की तो उसने करीब दो वर्ष पूर्व 'हम विशाल बनने के लिए तैयार हैं' नाम से एक वाइट पेपर जारी किया था। इसके साथ ही चीन-ताइवान मामलों के स्टेट काउंसिल कार्यालय और पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के स्टेट काउंसिल इन्फॉर्मेशन कार्यालय ने 'China's reunification in the new era' की बात भी की थी। सवाल है कि चीन तो विशाल बनने के लिए तैयार है, लेकिन क्या दूसरे देश भी उसकी इस तथाकथित विशालता का स्वागत करने को तैयार हैं? अगर यह विशालता थोपी हुई है तो इसे यह नाम न देकर कोई दूसरा नाम ही दिया जाना चाहिए। मसलन साम्राज्यवाद, नव साम्राज्यवाद या विस्तारवाद।

चुप्पी का राज | सवाल यह भी है कि इसे अमेरिका ने चुपचाप स्वीकार क्यों कर लिया? श्वेत पत्र में यह संकेत भी दिया गया है कि चीन किसी भी कीमत पर ताइवान का मेनलैंड के साथ एकीकरण करेगा। साफ है कि किसी भी कीमत में युद्ध भी शामिल होता है। यदि चीन ताइवान पर हमला करता है तो क्या अमेरिका इसका सीधा जवाब देगा या वह यूक्रेन पैटर्न पर युद्ध करेगा? ताइवान इस क्षेत्र की जियो-पॉलिटिक्स का केंद्र है। इसलिए इस पर विचार करना जरूरी है।

मजबूत सिपहसालार चाहिए | ध्यान रहे, अमेरिका वहीं लड़ाइयां जीत पाया है, जहां उसके सिपहसालार मजबूत रहे। जहां भी वे कमजोर या उदासीन थे, वहां अमेरिका की हार हुई। मिसाल के लिए, अफगानिस्तान को लें तो लगभग 20 वर्षों तक उस देश का ध्वंस किया गया। अंततः उन्हीं खंडहरों पर फिर वही तालिबान कट्टरता और आतंक की हुकूमत कायम कर रहा है, जिसके खिलाफ अमेरिका लड़ रहा था। यही हाल यूरेशियाई क्षेत्र का रहा, जहां वह और उसके सहयोगी यूक्रेन के पीछे खड़े होकर रूस को टारगेट कर रहे थे। इसका नतीजा भी सबके सामने है।

कर्ज कूटनीति की कामयाबी | यही वजह है कि मध्य-पूर्व में अब अमेरिका के लिए कभी बिछाई जाती लाल कालीन मोड़ी जाती दिख रही है। फिर प्रशांत क्षेत्र ही अमेरिका की मुख्य रणनीति का क्षेत्र है। लेकिन अब प्रशांत क्षेत्र के देश अमेरिका पर विश्वास नहीं कर पा रहे हैं। यही कारण है कि चीन की कर्ज कूटनीति बहुत हद तक सफल हो रही है। इसके तहत चीन के सरकारी स्वामित्व वाले निगम इन राष्ट्रों में निवेश के नाम धन वर्षा कर रहे हैं और चीन इन राष्ट्रों की संप्रभुता में सेंध लगा रहा है।

बहरहाल अमेरिका और चीन प्रशांत क्षेत्र में 'टॉम एंड जेरी' जैसा गेम खेलते दिख रहे हैं जबकि इसके कुछ देश बड़ी उम्मीदों से अमेरिका की ओर देख रहे हैं और कुछ चीन के भरोसे सपनों के महल निर्मित कर रहे हैं।

(लेखक वैदेशिक मामलों के जानकार हैं)

खुशियों में रंग भरना सिखा जाती है होली

कल्पना कीजिए किसी ऐसी सुबह की, जिसका कोई रंग न हो। जब आसमान नीला न दिखे और पेड़-पौधे हरे। जब फूलों का रंग उड़ चुका हो और सड़कों का भी। कौवा काला नजर न आए और गाय सफेद। ऐसी कोई कल्पना ही रंग उड़ा देती है चेहरे का।

रंग ताकतवर हैं। ये पहचान देते हैं। पहचान बदल सकते हैं और पहचान छीन सकते हैं। देखा जाए तो दुनिया में किसी चीज का अपना कोई रंग नहीं होता। फिर भी वह किसी न किसी रंग में रंगा है और वह रंग उसके कैरेक्टर से जुड़ा है। विज्ञान के जरिये इसे साबित किया था आइजैक न्यूटन ने। उन्होंने घुप्प अंधेरे कमरे में एक सुराख से रोशनी भेजी। वह रोशनी जब कमरे में रखे प्रिज्म से होकर गुजरी तो रंगों की नई दुनिया खुल गई। न्यूटन ने साबित किया कि जीवन के लिए जरूरी प्रकाश में ही निहित हैं रंग। सूरज जो रोशनी हम पर बरसा रहा और जिसकी गर्माहट के तले धरती पर जिंदगी आबाद है, वह बस दिखती ही रंगहीन है। असल में उसमें सारे रंग घुले हुए हैं। दोनों को अलग नहीं किया जा सकता।

अजीज नबील का शेर है, 'सांस लेता हुआ हर रंग नजर आएगा, तुम किसी रोज मिरे रंग में आओ तो सही'। लाल, गुलाबी, पीला या काला - मेरा वह रंग कोई भी हो सकता है। रंगों की अपनी कोई भाषा नहीं। फिर भी ये कुछ कहते हैं, जो सीधे हमसे और आपसे जुड़ा है। लाल रंग जोश देता है आगे बढ़ने का। यह प्यार है, जुनून है, लेकिन आगाह भी करता है। गुलाबी है अहसास जगाने वाला, खास अहसास दिलाने वाला।

पीले में है सूरज का तेज। संदेह से उबारने वाला। ठंड में सुकून देनी वाली गुनगुनी धूप की तरह खुशनुमा। काला कुछ लौटाता नहीं और सफेद कुछ छिपाता नहीं। हरा है नई शुरुआत

AI Image

जीवन आनंद

के लिए। प्रशंसा के लिए, संपन्नता के लिए। यह रंग है सृजन का। प्रकृति ने तभी तो इसे अपना बना लिया। जमीन फोड़कर निकलता अंकुर इसी रंग में तो रंगा होता है। खेत भी अच्छे तभी लगते हैं, जब उन पर हरियाली चढ़ी हो। नीला रंग खोलता है अनंत संभावनाओं के द्वार, जबकि सुनहरा साथी है जीत का।

रंग नशा है, जो चढ़ जाता है। पानी भी है। कई बार उतर जाता है। हर रंग के अंदर कई रंग हैं। शायद इसीलिए दुनियाभर की भाषाओं के साहित्य उन रचनाओं से भरे पड़े हैं, जिनमें रंग और जीवन एक दिखाई देते हैं। रंग खुशियां भर देते हैं और सीख भी देते हैं। हर रंग अलग है, लेकिन जब वह मिलता है, तो इस तरह कि उसे फिर अलग नहीं किया जा सकता। दो रंग इस कदर एक-दूसरे में मिल जाते हैं कि फिर अपनी अलग पहचान छोड़ देते हैं। उस पल से उनकी एक नई पहचान होती है, नया नाम होता है। वे बताते हैं कि कुछ नया पाने के लिए कुछ पुराना खोना भी पड़ सकता है। लेकिन, बड़ाई इसमें है कि हम नया पाते हुए भी पुराने का सम्मान बनाए रखें। उसे अपने भीतर सहेज कर रखें। यूं की गई मेहनत रंग जरूर लाती है।

रंग सबके लिए एक है। उसमें किसी दूसरे रंग से कोई बैर नहीं होता। जिसके साथ कहिए, उसके साथ चला जाएगा और उससे मिलकर कोई नया रंग खिलाएगा। यह खुद को जाहिर करने का कोई न कोई रास्त ढूंढ ही लेते हैं। इन्हें दबाया नहीं जा सकता, छिपाया नहीं जा सकता। यह खिलखिलाते हैं, मुस्कुराते हैं।

होली वह मौका है, जब इन रंगों के जरिये जीवन में खिलखिलाहट को बढ़ाया जा सकता है। रंगों के सारे रंगों को अपनाया जा सकता है। होली के रंग हमें बोलना सिखाते हैं, खामोशी से बाहर लाते हैं। इनसे मिलने वाली खुशी अपने में पूरी होती है। उसमें किसी और मिलावट की जरूरत नहीं। वैसे देखा जाए तो खुशियों का भी अपना रंग होता है। फिर भी कुछ बातें याद रखने वाली हैं, कि रंग बदल-बदल कर इस्तेमाल करना अच्छा है, लेकिन खुद रंग बदलना नहीं। रंग को धुल देना अच्छा है, रंग का उतर जाना नहीं।

तो इस होली पर रंगों से दूर जाने का बहाना न तलाशिए, क्योंकि फिर आप खुशियों से दूर जा रहे होंगे। इन्हें खुद के पास आने दीजिए। इनमें फन है आपके जीवन में रंग जमाने का।

शेयर करें अपने अनुभव
जीवन की दिनचर्या के अनुभवों में आप कैसे आनंद महसूस करते हैं, हमें बताएं **nbtreader@timesgroup.com** पर, और सब्जेक्ट में लिखें- **'जीवन आनंद'**

इस जॉब कल्चर पर क्यों हुआ विवाद

संजय खाती

सन 2000 में Reed Hastings और Mark Randolf ने ब्लॉकबस्टर के शानदार ऑफिस में कदम रखा। ब्लॉकबस्टर अमेरिका की सबसे बड़ी होम एंटरटेनमेंट कंपनी थी। उनका मकसद अपनी कंपनी नेटफ्लिक्स का सौदा करना था, जो दर्शकों को किराए पर डाक से DVD मुहैया कराती थी। लेकिन 5 करोड़ डॉलर में ब्लॉकबस्टर उसे खरीदने को राजी नहीं हुई।

तब मार्केट पर ब्लॉकबस्टर का राज था और नेटफ्लिक्स उसके सामने बस पिद्दी थी। फिर दुनिया तेजी से बदली। 2010 में ब्लॉकबस्टर दिवालिया हो गई, जबकि नेटफ्लिक्स आज डिज्नी के बाद दुनिया की सबसे बड़ी एंटरटेनमेंट कंपनी है। इस किस्से के साथ 'No Rules Rules' (पेंगुइन प्रेस) शुरू होती है, जिसे नेटफ्लिक्स के फाउंडर रीड ने बिजनेस प्रफेसर आइरीन मेयर के साथ मिलकर लिखा है। एक दशक से भी पहले रीड ने 127 स्लाइड्स का एक प्रजेंटेशन अपनी टीम के लिए बनाया था, जो लीक हो गया और करोड़ों लोगों ने उसे पढ़ा। इसके जरिए पहली बार नेटफ्लिक्स की पॉलिसी से दुनिया रूबरू हुई। इसे हैरत, तारीफ और कई बार आलोचना के साथ देखा गया।

विचार विंडो

अलबत्ता जिस हिसाब से कंपनी ने तरक्की की है, उसे देखते हुए मानना ही पड़ेगा कि वहां कोई चमत्कार तो हो रहा है। खुद रीड भी इसी तर्क के साथ अपनी पॉलिसी समझा रहे हैं। लेकिन यह किताब सिर्फ उस प्रजेंटेशन का विस्तार नहीं है, यह जबरदस्त मसालों और कहानियों के साथ उस बेसिक फॉर्म्यूले को समझाने की बेहद दिलचस्प पहल है।

तो आपने देखा, ब्लॉकबस्टर दिवालिया हो गई और नेटफ्लिक्स छा गई। हम नोकिया और कोडक को भी ऐसे ही खत्म होते देख चुके हैं। ऐसा क्यों होता है? रीड का कहना है कि ये कंपनियां इतनी स्मार्ट नहीं थीं कि भविष्य देख सकें या खुद को उसके लिए समय रहते तैयार कर सकें। यह काबिलियत कैसे आए, इसके लिए नेटफ्लिक्स ने जो फॉर्म्यूला निकाला है, वह स्टेप बाय स्टेप इस तरह काम करता है;

1. टैलेंट डेंसिटी यानी बेहतरीन लोगों का जुटान। उनमें साफगोई की आदत डालें। वे एक-दूसरे को बेहिचक फीडबैक दें। वेकेशन, ट्रैवेल और खर्च की पॉलिसियां हटा दी जाएं।
2. टैलेंट डेंसिटी और बढ़े। उन्हें बेस्ट सैलरी मिले। साफगोई और बढ़े। फैसलों पर अप्रूवल लेने की पॉलिसी भी हटे।
3. टैलेंट डेंसिटी और साफगोई को अधिकतम स्तर तक ले जाएं। बचे हुए नियम भी खत्म कर दिए जाएं।

ये तीन कदम किस तरह उठाए जाते हैं, इस दौरान क्या अनुभव नेटफ्लिक्स में सामने आए और आखिरकार कैसे इन्हें पूरा किया गया, इसे यह किताब सिलसिलेवार एक गाइड या मैनुअल की तरह समझाती है। आपको छुट्टी पर जाना है तो बस इतना करना है कि अपने मैनेजर से मशवरा कर लें कि किस दौरान ऑफिस में आपकी जरूरत नहीं रहेगी। किस काम के लिए कब कहां सफर करना है, यह आप ही तय करें। कंपनी का पैसा कहां कितना खर्च करना है, यह भी आप ही को सोचना है। कोई अप्रूविंग अथॉरिटी नहीं होगी।

दूसरे कदम में आजादी की डोज और भी नशीली हो जाती है। आप कभी भी रिक्रूटमेंट एजेंट से मिलकर अपनी मार्केट वैल्यू पता कर सकते हैं, नेटफ्लिक्स आपको वही सैलरी दे देगा। इसकी जड़ में दो बाते हैं- टैलेंट डेंसिटी और साफगोई। जब अपने फील्ड के बेहतरीन लोग इकट्ठा हो जाएं तो उनसे बेहतरीन समझदारी की उम्मीद की जा सकती है। फिर यह साफगोई और फीडबैक का कल्चर इतना बेदर्द है नेटफ्लिक्स में कि किसी को अपनी कमजोरियां छुपाने का मौका नहीं मिलता। आपने देखा, टैलेंट डेंसिटी को लगातार बढ़ाया जाना है। यह काम बेरहमी से होता है। जो लोग टॉप लेवल के नहीं लगते, उन्हें बाहर करने में देर नहीं की जाती। लेकिन इसी वजह से नेटफ्लिक्स मॉडल की जबरदस्त आलोचना भी हुई। कहा गया कि इसमें इंसानी भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं है। यह निहायत बेरहम किस्म का कॉरपोरेट कल्चर है, जहां जरा सी चूक पर सीधे लात पड़ती है। जाहिर है, यह बहस काफी पहले ही हो चुकी है और किताब में इनका जवाब दिया गया है। जैसा मैंने कहा, इन आलोचनाओं को नेटफ्लिक्स की कामयाबी बेअसर कर चुकी है। अब सवाल बचा है तो यही कि क्या यह मॉडल आगे भी टिका रहेगा?

नंबर ही नहीं, टैलंट भी

प्रणव प्रियदर्शी

जो कुछेक क्षेत्र पारंपरिक तौर पर पुरुषों के लिए अघोषित रूप से आरक्षित माने जाते रहे हैं, उनमें चार्टर्ड अकाउंटेंसी भी है। लेकिन यह भी अब ऐसे क्षेत्र के रूप में पहचाना जा रहा है, जहां लड़कियां तेजी से अपना झंडा बुलंद करती जा रही हैं। नंबर और टैलंट दोनों मामलों में। सदी की शुरुआत यानी साल 2000 तक महिला CA की संख्या महज 8% हुआ करती थी, जो 2023 में 30% हो गई। स्टूडेंट बेस में लड़कियों का अनुपात अब 43% है और क्वॉलिफाई करने वाले ऐस्पिरेंट्स में लड़कियों की संख्या रेकॉर्ड 48% पर पहुंच चुकी है। टैलंट के लिहाज से देखें तो 2020 में फाइनल के छह टॉपर्स में से चार लड़कियां थीं। 2021 में सभी टॉपर लड़कियां रहीं। अगले दो साल यानी 2022 और 2023 में लड़कियों ने टॉपर्स लिस्ट में 100% कब्जा बरकरार रखा। CA के क्षेत्र में इस बदलते रुझान की कई वजहें हैं। सबसे ऊपर है समाज में लड़कियों को लेकर बदलता नजरिया और खुद लड़कियों का अपनी जिंदगी, करियर और समाज को देखने की बदलती सोच। ये नहीं होता तो स्कूल कॉलेजों में सब्जेक्ट और स्ट्रीम सिलेक्शन में जो पॉजिटिव बदलाव आया, वही नहीं आता। साइंस, टेक्नॉलजी और कॉमर्स की ओर लड़कियों का बड़ी संख्या में जाना इस बड़े बदलाव की जमीन तैयार कर रहा है। दूसरी बात, इंडस्ट्री के ट्रेंड में भी कुछ अहम बदलाव आए हैं। चार्टर्ड अकाउंटेंसी और वित्तीय क्षेत्र इन दोनों की ग्रोथ के आसार किसी बूढ़ी होती आबादी वाले देश के बजाय भारत जैसी यंग आबादी वाले देश में ज्यादा होते हैं। इस संदर्भ में एक बड़ी बात यह हुई कि ज्यादातर देश अकाउंटिंग का अपना काम आउटसोर्स करने लगे। नतीजा यह कि बर्गर अमेरिका और ब्रिटेन में बिकता है, लेकिन उसकी अकाउंटिंग गुड़गांव या कोलकाता में होती है। इससे नए CA के लिए काम की कमी नहीं रही। आज की तारीख में फ्रेश CA का स्टार्टिंग पैकेज औसतन 12.5 लाख सालाना हो गया है। तीसरी और आखिरी बात यह कि CA के कोर्स भी अफोर्डेबल रेट पर उपलब्ध हैं। औसतन 75 हजार रुपये में पांच साल की पढ़ाई और उसके बाद अच्छा पैकेज एक ऐसा आकर्षण है, जो नई उमर की लड़कियों को भी देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में गिनी जाने वाली इस प्रवेश परीक्षा की ओर खींच रहा है।

AI Image

आधी दुनिया

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
hindi.speakingtree.in

जीवन की जड़ता से चेतना का उदय होना ही होली है

श्री श्री रवि शंकर

उत्तर भारत में होली से जुड़ी हिरण्यकश्यप और होलिका की एक कहानी प्रचलित है। 'कश्यप' शब्द का अर्थ है, देखने वाला। हिरण्यकश्यप वह है जो सदा स्वर्ण को देखता रहता है, यानी संपत्ति-संपदा देखता है। उसे रिश्ते-नाते नजर नहीं आते, सिर्फ पैसा नजर आता है। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका के पास एक ऐसा वस्त्र था, जिसे पहनकर अगर वह अग्नि पर बैठ जाए, तो अग्नि उसको जला नहीं सकती थी।

हिरण्यकश्यप का पुत्र था प्रह्लाद। अल्हाद माने खुशी या संतोष। एक अति विशिष्ट संतोष, खुशी और अल्हाद ही प्रह्लाद है। प्रह्लाद नारायण का भक्त था। नारायण माने आत्मा। जो खुशी आत्मा से मिलती है वह खुशी और कहीं नहीं मिलती। हम सभी को एक ऐसे विशिष्ट आनंद की चाह है जो कभी खत्म ही न हो। हर एक व्यक्ति की चाह एक ही है- प्रह्लाद। ऐसी कथा प्रचलित है कि हिरण्यकश्यप को प्रह्लाद की नारायण भक्ति पसंद नहीं थी। वह चाहता था कि प्रह्लाद नारायण की नहीं, उसकी भक्ति करे। हिरण्यकश्यप स्वयं आनंद की तलाश में निकला लेकिन अपने पुत्र प्रह्लाद के इतने पास होते हुए भी उसको पहचान नहीं पाया। उसको यह बात समझ में नहीं आई कि ऐसा आनंद कहां से मिलता है। उसी आनंद को वह इधर-उधर ढूंढता रहा। हिरण्यकश्यप इस तरह स्वयं भी परेशान रहा और उसने तरह-तरह से प्रह्लाद को भी परेशान किया, मगर प्रह्लाद को कुछ नहीं हुआ।

लोभी व्यक्ति दूसरों को कम, खुद को ज्यादा सताते हैं। ऐसे लोगों के चेहरे पर कोई आनंद, मस्ती और शांति कभी हो ही नहीं सकती। इसलिए उसने अपने बेटे को सताया या खुद को सताया, दोनों एक ही बात है। एक बार हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से कहा कि वह प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि पर बैठ जाए। उसने ऐसा सोचा कि होलिका को वरदान की वजह से कुछ नहीं होगा और अग्नि में जलकर प्रह्लाद की मृत्यु हो जाएगी। हिरण्यकश्यप के कहने पर होलिका प्रह्लाद को लेकर अग्नि में बैठ गई। लेकिन प्रह्लाद नहीं जला बल्कि होलिका जल गई। यह होलिका दहन की कहानी है।

इसलिए प्राचीन काल से भारत में यह रिवाज है कि फाल्गुन पूर्णिमा के दिन घर की पुरानी और बेकार की वस्तुओं तथा कूड़ा-करकट इकट्ठा करके उसकी होली जलाते हैं। यदि हम पुरानी सब बातों और कामनाओं को नहीं जलाते, तो कामनाएं हमको जला देती हैं। कामनाओं को जलाने का अर्थ है, तृप्त हो जाना, पूर्ण हो जाना, समर्पण कर देना। आपके भीतर के आनंद और खुशी को बचाने की तृष्णा इस पूरी समष्टि को है। यह सृष्टि हर तरह से आपको खुश करने के प्रयास में लगी हुई है। यहां केवल एक तरह का फूल नहीं है, हजारों तरह के फूल और सब्जियां हैं। यहां रोज एक ही तरह के बादल नहीं होते हैं। आपको रोज-रोज आसमान में अलग-अलग तरह की पेंटिंग मिलती है। हम फिर भी मुंह लटका कर हिरण्यकश्यप बने रहते हैं।

जो भोलेभाव से भरा हो और जिसमें मस्ती हो, भगवान के सिवा उन्हें कुछ नजर ही नहीं आता। ऐसे ही प्रह्लाद की प्रार्थना सुनकर भगवान नारायण खंभे से निकल आए और उन्होंने हिरण्यकश्यप को खत्म कर दिया। जीवन में जब हम सिर्फ धन के बारे में सोच-सोच कर पत्थर जैसे हो जाते हैं, तब उससे भी भगवान निकल आते हैं। उस जड़ता में से चेतना का उदय ही होली है। जब चेतना का उदय हो जाता है तो फिर रंग-बिरंगी होली होती है। सब लोग रंगों से खेलते हैं और उत्सव मनाते हैं।

रीडर्स मेल www.edit.nbt.in

झूठ पर न डालें पर्दा
18 मार्च का 'जीवन आनंद' कॉलम में 'आंखों पर पड़ा पर्दा कहीं अक्ल पर न पड़ जाए' शीर्षक से प्रकाशित लेख पढ़ा। लेखक ने उस पर्दे की बात की है, जिसे अक्सर हम अपनी आंखों पर डाल लेते हैं। यह हमारे सोचने-समझने की क्षमता को छिपा देता है और हम उस झूठ को भी सच मानने लगते हैं जो हमारे समाने हुआ हीं नहीं। इसी पर्दे के कारण रिश्तों में तनाव आने लगते हैं। कई जिंदगियां बर्बाद होने लगती हैं। जब यही पर्दा हमारी आंखों से उतरता है और गलती का अहसास होता है, तब तक काफी समय निकल चुका होता है। अच्छा है कि झूठ के इस पर्दे को अपनी आंखों पर न डाला जाए।
पैंथर तोमर, किशन गंज

भूलें, पर भटकें नहीं
11 मार्च का लेख 'एक बात याद रखिए, भूल जाना कोई गलती नहीं' बेहद शानदार लेख है। भूलना एक दिमागी फितरत है। ध्यान फिसला कि वह बात या घटना यादों से चुपके से निकल जाती है। ईश्वर ने मानव शरीर, दिमाग, मन सभी को सिक्वेंस में सजाया है और एक मैकेनिज्म में ढाल दिया है। लेकिन दिमाग को साधकर रखना, जरूरी बातों को यादों में संजोकर रखना हमारी प्रगति में ईंधन का काम करती है। फिर भी भूल जाएं, तो क्या? नए विचार, नई उड़ान की रचना कर ही डालते हैं। चीजों का बनना, बिगड़ना तो चलता ही रहता है।
शालू रानी गुप्ता, विकासपुरी

मन में हो सुकून
अपेक्षाओं ने आंचल फैलाया है, सब कुछ पाने की चाह में। कच्चे मकान के आंगन में बेपरवाह खेलते बच्चों को आलीशान महल की खिड़की से देखा तो एक टीस सी उठी मन में। उसके तन पर फटे कपड़े से गरीबी और मजबूरी झांक रही थी। अभाव भरा जीवन तो चाह नहीं हो सकती, लेकिन अपेक्षाएं निराश नहीं होने देती है। निराशा सारी कोशिशें बेकार कर देती हैं। कई बार ऐसा होता है- चाहतें बढ़ती हैं और सुकून खो जाता है। जीवन के लिए सब कुछ चाहिए और सब कुछ मिलते-मिलते जीवन ही खो जाता है। बस जीवन का आनंद सुकून में है और सुकून मन के भीतर है, बाहर नहीं।
नीलू सिन्हा, ईमेल से

nbtedit@timesgroup.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र
पिछले दो वर्षों में स्कूल फीस 30-50 प्रतिशत तक बढ़ी – एक खबर
– क्या यह कोराना के दौरान हुए घाटे की भरपाई चल रही है!
धर्मेंद्र सिंह

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्सः 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

https://t.me/AllNewsPaperPaid

सद्भाव और मिलन

विगत दो दशक से हर पांच साल बाद एक होली ऐसी आती है, जब तमाम रंगों में चुनावी रंग भी घुला रहता है। तमाम नेता और उनके समस्त कार्यकर्ता कुछ ज्यादा ही उत्साह से गली-गली में लोगों के साथ होली मनाने पहुंचते हैं। यह होली भी वैसी ही है, और यह पूरा फागुन और उसके बाद चैत भी चुनाव की फगुनाहट से सराबोर रहेगा। लगे हाथ रमजान का भी पाक महीना चल रहा है और ईद तक लगभग पूरे महीने जगह-जगह रोजा-इफ्तारी के साथ ही होली मिलन समारोह भी चलेंगे। कोई संदेह नहीं कि चुनावी वर्ष में होली मिलन के आयोजन कुछ ज्यादा ही बढ़ जाते हैं और यह उपयोगी भी है। मानो होली एक संदेश दे रही हो कि समाज की असली जीत परस्पर मिलन और सद्भाव से ही संभव है। होली वैसे भी तमाम द्वेष-विद्वेष को भुलाकर गले मिलने का त्योहार है, पर क्या हमने मिलन के महत्व को ठीक से समझ लिया है? बेशक, अनेक लोग हैं, जो अभी भी मिलन के महत्व को नहीं समझ सके और एक-दूसरे की कमियों व होड़ में ही डूबे हुए हैं। कमियों में डूबने का नतीजा है कि परस्पर निंदा का सिलसिला भी समय के साथ तेज होता जा रहा है, जिसके दुखद नजारे सोशल मीडिया पर भी खूब देखे जाते हैं? आखिर ऐसा क्यों हो रहा है?

हमारे समाज में मिलन का जो अभाव है, उसे सही संदर्भों में समझने की जरूरत है। इस अभाव की पृष्ठभूमि पर हमें जरूर गौर करना चाहिए। अनेक कारण होंगे, पर एक सबसे बड़ा कारण है असमानता। अभी हाल ही में भारतीय समाज में असमानता को दर्शाने वाली एक रिपोर्ट सामने आई है, जिसने बताया है कि देश में सबसे अमीर एक प्रतिशत लोगों के पास देश की 40 प्रतिशत संपत्ति है और देश के सबसे अभावग्रस्त 50 प्रतिशत लोगों के पास महज 6.4 प्रतिशत संपत्ति है। ज्यादा चिंता यह है कि असमानता लगभग पूरी दुनिया में बढ़ रही है। कोई संदेह नहीं कि भारत में ही गरीबी तेजी से घटी है, मोटे अनुमान के अनुसार, विगत दशक भर में 20 करोड़ से भी ज्यादा लोग गरीबी रेखा के ऊपर आए हैं। अगर नोटबंदी का असर नहीं होता और महामारी का कहर न झेलना पड़ता, तो शायद हमारे देश में असमानता की खाइयां बहुत हद तक भर गई होतीं। अभी जब हम होली मना रहे हैं, तब अर्थव्यवस्था में वापस से तेजी आ गई है, पर साल 2019 वाली तेजी अभी भी पूरी तरह से हासिल नहीं हुई है। अतः इस होली पर हमें यह भी मनोकामना करनी चाहिए कि देश की अर्थव्यवस्था में तेजी से सुधार हो, ताकि भारतीय समाज में मिलन के स्वाभाविक अवसरों को विस्तार हो। मिलन का भाव और सद्भाव सुनिश्चित करने में सबकी भूमिका है, तो सभी को सोचना चाहिए।

असली जीत परस्पर मिलन और सद्भाव से ही संभव है। होली वैसे भी तमाम द्वेष भुलाकर गले मिलने का त्योहार है, पर क्या हमने मिलन का महत्व ठीक से समझ लिया है?

कैसे भुला दें कि कम से कम तीन बार होली महामारी से प्रभावित रही है और साल 2020 के बाद पहली बार हम होली निर्भय होकर मना रहे हैं, तो यह हम सबकी खुशनसीबी भी है। सामूहिक संघर्ष और त्याग से ही हमने कोरोना वायरस को पराजित किया है। सामूहिक संघर्ष का यही भाव समाज में निरंतर रहना चाहिए। एक-दूसरे की चिंता का क्रम बने रहना चाहिए, इसी से समाज में सुंदरता बढ़ती है। मिलन प्रेमी सद्भावी समाज ही अपने सभी रंगों को बचा पाता है। होली का रंग भी तभी खिलता है। आज जब चुनावी महासमर का बिगुल बज उठा है, तब तमाम रंगों अर्थात बहुलता, विविधता की चिंता भी स्वाभाविक बढ़ गई है। ऐसे में, होली हम सभी के लिए एक सहज प्रेरणा है, जिसके संदेश की रोशनी में हम आगे बढ़ सकते हैं।

रंग रंगीली होली खेलें सबके हृदय बसैया

मालिनी अवस्थी | लोक गायिका

होली जैसा सुंदर दूसरा कोई पर्व नहीं। यह वर्ग, जाति, धर्म, विचार सभी का भेदभाव मिटा देता है। जब आप रंग छुड़ाने बैठते हैं, तो कुंठा, द्वेष, क्रोध- सबके रंग निकल जाते हैं।

हर किसी को त्योहार मनाने का संस्कार अपने परिवार से मिलता है। मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मेरी मां और पिताजी, दोनों खूब होली खेला करते थे। बेशक, आजकल लोग सूखी होली पसंद करने लगे हैं, पर मैं बचपन से ही गीली होली की पक्षधर रही हूं। पानी के बिना या जब तक पिचकारी की फुहार न पड़े, तब तक कैसी होली? यह त्योहार साल में एक बार ही आता है, तो इसे जमकर मनाना चाहिए, खुलकर रंग खेलना चाहिए। *बरस बरस दिन छाड़िके, बैठी हैं भवें तान, होली के दिनन में कैसी मान...* होली के दिन भला क्या रूठना! शायद इसीलिए 'बुरा न मानो होली है' कहा गया है कि इस दिन मान-अभिमान या इनकार नहीं चलता।

त्योहार की पहली शर्त है उत्सवधर्मी होना और उत्सवधर्मी व्यक्ति यह नहीं सोचता कि रंग खेलने से कपड़े गंदे हो जाएंगे या घर साफ करना होगा। मेरे पिताजी तो होली के दिन आठ-दस लोगों को अपनी गाड़ी में बिठाकर निकल जाते थे, बिना यह सोचे कि गाड़ी पर रंग का दाग लग सकता है। उन दिनों समाज के हरेक तबके के लोग उनसे मिलने आते थे। वह जिला अस्पताल में डॉक्टर थे, तो नर्सों की, वार्डब्वॉय की, सफाईकर्मियों की, सबकी अलग-अलग टोलियां आतीं, और पिताजी सबके साथ गले मिलकर होली खेलते थे। समरसता का यह भाव होली का सबसे बड़ा सौंदर्य है, और मैंने यही अपने परिवार से सीखा है। पतिदेव के साथ भी मैंने यही देखा है कि पुलिस अधिकारियों का, शिक्षकों का, सबका अलग-अलग दल आता और हम लोग सबके साथ मिलकर रंग खेलते।

होली की चर्चा छिड़ते ही बचपन की एक स्मृति ताजा हो उठती है। हुआ यूं था कि पड़ोस में गमी के कारण पिताजी ने होली न खेलने की बात कही। पहले होता भी यही था कि अगर कहीं गमी हो जाती, तो अड़ोस-पड़ोस भी उसमें दिल से शरीक होता। मगर जिनको पता नहीं था, वे हमारे घर आने लगे। इसलिए, न चाहते हुए भी पिताजी को उनका साथ देना पड़ा। मगर हम तो सूखे ही रहे। दिन के बारह-एक बज गए, तो मेरा मन उदास हो गया। तब तक भाई अपने दोस्तों की टोली से वापस लौट चुके थे। उन्होंने देखा कि मैं चुपचाप सीढ़ी पर बैठी हुई हूं। उनको रंगा देखकर मेरी आंखों में आंसू आ गए। भैया हैरान-परेशान! वह तुरंत अंदर गए और एक बाल्टी रंग लाकर पीछे से मुझ पर उड़ेल दिया। उस समय भैया से रंगने में ऐसा आनंद आया कि आज भी जब वह घटना याद आती है, तो लगता है, मैं भीगी जा रही हूं। अब भी मैं जब होली पर किसी के घर जाती हूं और वह बोलते हैं, आ गई... ऐसा रंग लगाएगी कि दस-बारह दिन लग जाएंगे छुड़ाने में, तब मुझे बड़ा मजा आता है।

देखा जाए, तो होली जैसा सुंदर दूसरा कोई पर्व है भी नहीं। यह वर्ग, जाति, धर्म, विचार सभी का भेदभाव मिटा देता है। जब आप रंग छुड़ाने बैठते हैं, तो कुंठा, द्वेष, क्रोध, आक्रोश- सबके रंग निकल जाते हैं, और आप अपने भीतर नयापन महसूस करते हैं। सोचिए, हमारे पूर्वजों ने क्या सोचकर यह त्योहार मनाना शुरू किया होगा! इसमें हम एक-दूसरे को इतना रंग देते हैं कि हम पहचान में ही नहीं आते। वास्तव में, भीतर से हम सब एक ही हैं, रक्त-मज्जा से बने इंसान। सब एक ही प्रेमरूपी रंग से रंगे हुए हैं।

प्रेम का यही भाव अनंत काल से समाज को जोड़े हुए है। *केकरे हाथ ढोलक भल सोहे, केकरे हाथ मंजीरा, रामजी के हाथे ढोलक भल सोहे, लक्ष्मण हाथे मजीरा...* राम जी ढोलक बजा रहे हैं, यह कल्पना तो वही समाज कर सकता है, जो प्रेम में डूबा हो। ऐसे समाज में ही भगवान राम भी होली खेलते हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि जहां भी जाती हूं, वहां होली गाती हूं- कभी राम की, कभी कृष्ण की, तो कभी भोलेनाथ की। होली में राम और कृष्ण को भी हम-आप जैसे आत्मीय जन के रूप में देखा गया है। भले ही, हम ईश्वर-रूप में उनका सत्कार करते हैं, उनको पूजते हैं, उनका आशीर्वाद लेते हैं, उनकी शरण में जाते हैं, लेकिन वे भी बिल्कुल साधारण मनुज बनकर होली खेलते हैं।

इस बार की होली वैसे भी राम रमैया की है। *अवध नगरिया छाई रे बहरिया, कि भल रंग होरी खेलें चारों भैया। केसरी भरि कंचन पिचकारी, हाथन राम के सोहे, रंग रंगीली होली खेलें सबके हृदय बसैया, कि भल रंग होरी खेलें चारों भैया...* मेरा तो यही मानना है कि जिस तरह रामजी का पूरा जीवन और उनका आदर्श सामाजिक समरसता को समर्पित है, हमारा भी यही आदर्श होना चाहिए। सबसे जुड़कर होली खेलें, अशालीन हरकत न करें और पूरी शालीनता का परिचय दें। अब तो अलग-अलग फूलों से तैयार अलग-अलग रंग के अबीर भी मिलने लगे हैं। जिनको रंगों से एलर्जी है, वे इसका इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन नखरा करने की इजाजत किसी को नहीं मिलेगी। दिल खोलकर सभी को होली खेलना ही चाहिए।

इसमें कोई दो राय नहीं कि बनारस की होली का जवाब नहीं है। यह शहर पूरा महीना फागुन के मिजाज में डूबा रहता है। गीत-संगीत, हंसी-ठट्ठा, खान-पान, शृंगार सब में महीने भर यहां होली चलती रहती है। मगर कानपुर की होली भी कुछ कम नहीं है। बहुत पुरानी घटना है, तब मेरे पति मैनपुरी में अपनी सेवाएं दे रहे थे और मेरी शादी को भी डेढ़-दो साल ही हुए थे। मैं अपने सुसराल जाने के लिए कानपुर स्टेशन पर उतरी और रिक्शा से गंतव्य की ओर विदा हुई। होली चार-पांच दिनों के बाद थी, लेकिन ससुराल पहुंचते-पहुंचते मैं पूरी तरह रंग चुकी थी। घर पहुंची, तो मैंने ताज्जुब जताया कि अभी ही लोगों ने मुझे रंग दिया, तो परिजनों ने बताया कि यहां भी आठ-दस दिनों तक लोग होली खेलते हैं। उस समय कपड़े जरूर खराब हुए, लेकिन होली का वह रंग मुझे खूब पसंद आया।

हालांकि, इस बार की होली पर चुनावी रंग भी चढ़ा हुआ है। ऐसे में, अच्छा यही होगा कि प्रतिस्पर्द्धा को किनारे रखकर हम रंगों के बहाने आपसी सौहार्द को मजबूत बनाएं। शांति और प्रेम का पाठ पढ़ें। न जाने क्यों, होली को हुड़दंग से जोड़ दिया गया है। मुझे इससे ऐतराज है। समाज में हुड़दंगी हमेशा से रहे हैं, लेकिन हमें शालीन रहकर रंग खेलना चाहिए। चुनावी माहौल में इसी रंग की सबसे ज्यादा जरूरत है।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

बीस भारतीय क्रीड़ाओं में से एक होलाका मतलब होली

पांडुरंग वामन काणे | भारत रत्न विद्वान

होली या होलिका आनंद एवं उल्लास का ऐसा उत्सव है, जो संपूर्ण देश में मनाया जाता है। उत्सव मनाने के ढंग में कहीं-कहीं अंतर पाया जाता है। बंगाल को छोड़कर होलिका-दहन सर्वत्र देखा जाता है। बंगाल में फाल्गुन पूर्णिमा पर कृष्ण-प्रतिमा का झूला प्रचलित है, किंतु यह भारत के अधिकांश स्थानों में नहीं दिखाई पड़ता। इस उत्सव की अवधि विभिन्न प्रांतों में विभिन्न है। इस अवसर पर लोग बांस या धातु की पिचकारी से रंगीन जल छोड़ते हैं या अबीर-गुलाल लगाते हैं। कहीं-कहीं अश्लील गाने गाए जाते हैं। इसमें जो धार्मिक तत्व है, वह है बंगाल में कृष्ण-पूजा करना तथा कुछ प्रदेशों में पुरोहित द्वारा होलिका की पूजा करवाना। लोग होलिका दहन के समय परिक्रमा करते हैं, अग्नि में नारियल फेंकते हैं, गेहूं, जौ आदि के डंठल फेंकते हैं और इनके अधजले अंश का प्रसाद बनाते हैं।

यह बहुत प्राचीन उत्सव है। इसका आरंभिक शब्द-रूप होलाका था (जैमिनि, १।३।१५-१६)। भारत के पूर्वी भागों में यह शब्द प्रचलित था। जैमिनि एवं शबर का कथन है कि होलाका सभी आर्यों द्वारा संपादित होना चाहिए। *काठकगृह्य* (७३१) में एक सूत्र है 'राका होलाके', जिसकी व्याख्या टीकाकार देवपाल ने यूं की है- 'होला एक कर्म-विशेष है, जो स्त्रियों के सौभाग्य के लिए संपादित होता है, उस कृत्य में राका (पूर्णचंद्र) देवता है।' अन्य टीकाकारों ने इसकी व्याख्या अन्य रूपों में की है। होलाका उन बीस क्रीड़ाओं में एक है, जो संपूर्ण भारत में प्रचलित है। इसका उल्लेख वात्स्यायन के *कामसूत्र* (१।४।४२) में भी हुआ है, जिसका अर्थ टीकाकार जयमंगल ने किया है। फाल्गुन की पूर्णिमा पर लोग शृंग से एक-दूसरे पर रंगीन जल छोड़ते हैं और सुगंधित चूर्ण बिखेरते हैं। हेमाद्रि (काल, पृ. १०६) ने *बृहद्यम* का एक श्लोक उद्धृत किया है, जिसमें होलिका-पूर्णिमा को हुताशनी (आलकज की भांति) कहा गया है। *लिंगपुराण* में आया है- फाल्गुन पूर्णिमा को 'फाल्गुनिका' कहा जाता है, यह बाल-क्रीड़ाओं से पूर्ण है और लोगों को विभूति (ऐश्वर्य) देने वाली है। *वराहपुराण* में आया है कि यह 'पटवास-विलासिनी' (चूर्ण से युक्त क्रीड़ाओं वाली) है।

हेमाद्रि ने *भविष्योत्तर* से उद्धरण देकर एक कथा दी है। युधिष्ठिर ने कृष्ण से पूछा कि फाल्गुन-पूर्णिमा को प्रत्येक गांव एवं नगर में एक उत्सव क्यों होता है... यह 'अडाडा' क्यों कही जाती है? कृष्ण ने युधिष्ठिर से राजा रघु के विषय में एक किंवदंती कही। राजा रघु के पास लोग यह कहने के लिए गए कि 'ढोण्ढा' नामक राक्षसी बच्चों को डराया करती है। राजा द्वारा पूछने पर उनके पुरोहित ने बताया कि बहू मालिन की पुत्री एक राक्षसी है, जिसे शिव ने वरदान दिया है कि उसे देव, मानव आदि नहीं मार सकते हैं... किंतु शिव ने इतना कह दिया है कि वह क्रीड़ायुक्त बच्चों से भय खा सकती है। पुरोहित ने यह भी बताया कि फाल्गुन की पूर्णिमा को जाड़े की ऋतु समाप्त होती है और ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है, तब लोग हंसें व आनंद मनाएं, बच्चे लकड़ी के टुकड़े लेकर बाहर प्रसन्नतापूर्वक निकल पड़ें, लकड़ियां एवं घास एकत्र करें, रक्षोघ्न मंत्रों के साथ उसमें आग लगाएं, तालियां बजाएं... प्रचलित भाषा में भद्दे और अश्लील गाने गाएं, इसी शोरगुल एवं अट्टाहास से तथा होम से वह राक्षसी मरेगी। जब राजा ने यह सब किया, तो राक्षसी मर गई और उस दिन को अडाडा या होलिका कहा गया।

कहीं-कहीं रंगों के खेल पहले से आरंभ कर दिए जाते हैं, कहीं-कहीं होली के एक दिन उपरांत लोग एक-दूसरे पर पंक (कीचड़) फेंकते हैं।

कामसूत्र व *भविष्योत्तरपुराण* होलाका को वसंत से संयुक्त करते हैं, अतः यह उत्सव पूर्णिमांत गणना के अनुसार, वर्ष के अंत में होता था।... वसंत की आनंदाभिव्यक्ति रंगीन जल एवं लाल रंग, अबीर-गुलाल के पारस्परिक आदान-प्रदान से प्रकट होती है। कुछ प्रदेशों में यह रंगयुक्त वातावरण होलिका के दिन ही होता है, किंतु दक्षिण में यह होलिका के पांचवें दिन (रंग-पंचमी) मनाया जाता है। कहीं-कहीं रंगों के खेल पहले से आरंभ कर दिए जाते हैं। कहीं-कहीं होली के एक दिन उपरांत लोग एक-दूसरे पर पंक (कीचड़) भी फेंकते हैं। कहीं-कहीं दो-तीन दिनों तक मिट्टी, पंक, रंग, गान आदि से लोग मतवाले होकर दल बनाकर होली का हुड़दंग मचाते हैं। वास्तव में, यह उत्सव प्रेम करने से संबंधित है।

(1950 के दशक में पांच खंडों में प्रकाशित *धर्मशास्त्र का इतिहास* पुस्तक से संपादित अंश)

मन्सा वाचा कर्मणा

नैतिक आदमी का विश्राम-पर्व

कहते हैं, होली की शुरुआत रंगीले-रसीले कृष्ण के जीवन में हुई। दरअसल, उनका जीवन ही एक रास था। बचपन से लेकर अंत तक वह अपने जीवन के जरिये प्रतिपल यही संदेश दे रहे थे कि जियो जी भरकर, मौज मनाओ, अपने जीवन से रंग बिखेरो। मगर ऐसा नहीं है कि वह जीवन को उत्सव की तरह लेते हैं, तो कोई कर्म नहीं करते। काम तो करते हैं, लेकिन उनका प्रत्येक कर्म उत्सव के रंगों में रंग जाता है। उनका कर्म भी नृत्य-संगीत में डूब जाता है। कृष्ण का अपना जीवन देखें, तो उन्होंने खेल-खेल में जितने बड़े काम किए हैं, शायद ही किसी गंभीर व्यक्ति ने किए हों। युद्ध के मैदान में उन्होंने अर्जुन को गहन उपदेश दिया, वह भी ऐसे, मानो गीत गा रहे हों। इसलिए उनके उपदेश का नाम हुआ, *भगवद्गीता* : भगवान का गाया हुआ गीत! क्या धरती पर कोई भी ऐसा अध्यात्म शास्त्र होगा, जो गाया गया हो?

इसलिए आश्चर्य नहीं कि कृष्ण के जीवन की घटनाओं से होली गहनता से जुड़ी है। किसी अन्य संत के साथ होली नहीं जुड़ी, यह भी विचारणीय है। सिर्फ कृष्ण ही गोपिकाओं के साथ खुलेआम रास रचा सकते हैं, गोपियों को रंग में भिगो सकते हैं। उनमें कोई अपराध बोध नहीं होता, क्योंकि वह एक बच्चे जैसे मासूम चित्त से निकला हुआ खेल है।

होली का अनन्य महत्व इसलिए भी है, क्योंकि पूर्ण पुरुष श्रीकृष्ण की तरह होली एक संपूर्ण त्योहार है। क्या नहीं है इस त्योहार में? इसमें अशुभ का दहन है, दुर्भावों का रेचन है, प्यार की पिचकारी है और साथ में एक समझदारी भी है कि 'बुरा न मानो होली है।' यदि होली के त्योहार से हम इतना भी सीख जाएं कि किसी की बातों का बुरा न मानें, तो होली सार्थक हो गई समझें। होली में जैसा मन भीगा-भीगा सा हो जाता है, वैसा ही आम जिंदगी में हो जाए, तो कोई कड़वाहट न रहेगी, सब धुल जाएगा। सब कुछ धो डालने के लिए ही तो बनाया गया है होली का पर्व।

यह त्योहार उस समय बना था, जब नैतिकता की पकड़ बहुत ज्यादा थी। आदमी उसके बंधन तले दबा-कुचला जा रहा था। थोड़ी सी मस्ती, थोड़ी सी आवारगी तमाम बोझ को हल्का कर देती है।

पूर्ण पुरुष श्रीकृष्ण की तरह होली संपूर्ण त्योहार है। क्या नहीं है इसमें? इसमें अशुभ का दहन है, दुर्भावों का रेचन है, प्यार की पिचकारी है, और साथ में एक समझदारी भी कि 'बुरा न मानो होली है।'

ओशो का नजरिया है कि हिन्दुस्तान में जितने भी उत्सव हैं, उनमें होली सबसे निराली है। यह मनोवैज्ञानिक उत्सव है। जो लोग मन की जटिलता को जानते थे, उन्होंने देखा होगा कि आदमी बहुत अधिक बंधन में जिये, तो उसके भीतर एक तनाव पैदा होता है, और वह पाखंडी हो जाता है। व्यक्ति को अपने नैसर्गिक भावों को दबाकर जबरदस्ती सदाचरण करना पड़ता है। इसलिए नैतिक आदमी को बीच-बीच में विश्राम भी लेना पड़ता है। होली नैतिक आदमी का विश्राम है।

अमृत साधना

जो बाइडन | अमेरिकी राष्ट्रपति

सैन फ्रांसिस्को की पहली महिला जिला अटॉर्नी बनने से लेकर कैलिफोर्निया की अटॉर्नी जनरल बनने तक और अब उप-राष्ट्रपति के रूप में कमला हैरिस ने तमाम बाधाओं को तोड़ा है। मुझे गर्व है कि वह हमारी टीम में हैं।

हिन्दुस्तान | 75 साल पहले 25 मार्च, 1949

एक पहेली

ब्रिटेन के भूतपूर्व विदेश मन्त्री मि. ईडन ने नई दिल्ली की एक सार्वजनिक सभा में अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर भाषण दिया था। उन्होंने अटलांटिक समझौते का समर्थन किया और कहा कि इस किस्म के प्रादेशिक समझौते संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों के विरुद्ध नहीं हैं। उनसे शान्ति की रक्षा करने और जीवन के हमारे अपने तरीकों को कायम रखने में सहायता मिलेगी। इस पर एक श्रोता से यह पूछे बिना नहीं रहा गया कि हिन्देशिया में नीदरलैण्ड जो कुछ कर रहा है, उसको देखते हुए उसे अटलांटिक समझौते का हिस्सेदार बनाना कहां तक उपयुक्त हो सकता है? मि. ईडन का यह जवाब था कि थोड़ी देर के लिए यह मान भी लिया जाये कि नीदरलैण्ड हिन्देशिया में गलत नीति का अनुसरण कर रहा है, तो भी उसका यह अर्थ नहीं होता कि हम अपने प्रदेश की समस्याओं को हल करने के लिए अपने किसी संगठन का निर्माण न करें। दुर्भाग्यवश यह पहेली अथवा समस्या उतनी आसान नहीं है, जितनी मि. ईडन ने प्रकट करने की कोशिश की है।

पश्चिमी राष्ट्र यदि अपने जीवन के तरीके को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो इस चिन्ता को समझा जा सकता है। किन्तु दुनिया में ऐसे और देश भी हैं जो अपना जीवन जीने के लिए उत्सुक हैं, किन्तु जिनको पश्चिमी राष्ट्रों ने अपने शिकंजे में कसा हुआ है और जो उनसे अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए छटपटा रहे हैं। इन देशों के लोग पश्चिमी राष्ट्रों की किसी भी गुटबन्दी से अपने लिए एक नया खतरा महसूस कर सकते हैं। उदाहरण के लिए नीदरलैण्ड को ही ले लीजिए। वह अटलांटिक समझौते के मातहत अमेरिका से युद्ध सामग्री प्राप्त करेगा। उसे आर्थिक सहायता भी मिलेगी। अब इस बात की क्या गारण्टी है कि नीदरलैण्ड अमेरिका से मिलने वाली सहायता का उपयोग हिन्देशिया के लोगों की आजादी के विरुद्ध न करेगा? जो बात हिन्देशिया के सम्बन्ध में नीदरलैण्ड पर लागू होती है, वही हिन्द चीन के बारे में फ्रांस और मलाया के बारे में ब्रिटेन पर भी लागू होती है। जब सुरक्षा कौंसिल में हिन्देशिया का प्रश्न विचार के लिए पेश होता है तो ब्रिटेन और अमेरिका भी साफ-साफ बात नहीं करते; कन्नी काटने की कोशिश करते हैं। इसका कारण इसके सिवाय और क्या हो सकता है कि नीदरलैण्ड का उनकी पश्चिमी यूरोप सम्बन्धी योजनाओं में एक खास स्थान है और इसलिए वे उसको नाराज करने का साहस नहीं कर सकते।

होली की मौज-मस्ती अब बिसरा चुके

काली-काली कोयल बोली, होली, होली, होली। फूटा यौवन, फाड़ प्रकृति की, पीली-पीली चोली... होली रंगों, उल्लास और खुशियों का त्योहार है। यह नई फसल के स्वागत का त्योहार है। सर्दियों के अंत और गरमियों की शुरुआत का त्योहार है। बुराई पर अच्छाई, असत्य पर सत्य, नास्तिकता पर आस्तिकता, पाप पर पुण्य और दानवता पर देवत्व की विजय का मांगलिक त्योहार है।

होली का त्योहार फागुन मास की पूर्णिमा को मनाते हैं, लेकिन हमारे गांव में फागुन की शुरुआत से ही फाग शुरू हो जाता था। शीतला माता के चबूतरे के पास गांव के बच्चे, बड़े, बूढ़े सभी इकट्ठा होते। वे मां का आशीर्वाद लेते, फिर ढोल, नगाड़े के साथ सस्वर- *होली खेले रघुबीरा अवध में, होली खेले रघुबीरा...* जैसे गीतों की शुरुआत होती। इसके बाद गांव के तमाम लोगों के दरवाजे-दरवाजे जाकर फाग सुनाया जाता। जिसके घर के सामने टोली पहुंचती, वह स्वेच्छा से ठंडई, भांग, बताशा, गुड़ आदि का वितरण टोली में करता। लोग गुलाल लगाकर एक-दूसरे का अभिवादन करते। समान-वय के लोग गले मिलते, छोटी उम्र के किशोर बड़ों का पैर छूकर आशीर्वाद लेते। प्रतिदिन देर शाम तक यह जश्न चलता रहता। पूरे फागुन महीने में यही मौज-मस्ती होती।

मगर आज होली का वास्तविक अर्थ गुम सा होता नजर आ रहा है। समय के साथ बदलती भौतिकतावादी सोच, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, शहरीकरण, एकल परिवार और परिस्थितियों के थपेड़ों ने इस सांस्कृतिक त्योहार की मस्ती को काफी हद तक प्रभावित किया है। पहले लोग होली की बधाई घर-घर जाकर देते थे, मगर अब वाट्सएप और फेसबुक पर संदेश भेजकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेते हैं। पहले लोग ज्यादातर टेसू से बने प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते थे, अब हानिकारक रासायनिक रंगों का इस्तेमाल बढ़ गया है। नगाड़े की धुन पर झूमने वाले लोग डीजे की कानफाड़ू धुन पर थिरकने लगे हैं। तब ढोलक और मृदंग के साथ फगुआ (होली के गीत) गाने की परंपरा थी, अब अश्लील गीतों का दौर आ गया है। तब होली का त्योहार पवित्र प्रेम, अपनत्व व भाईचारे का प्रतीक था, आज 'बुरा न मानो होली है' कहकर अभद्रता मचाई जाती है।

पहले के दिनों में घर में बने गुजिया, नमकपारा, मठरी जैसे पकवानों से होली खेलने आए लोगों का स्वागत होता था, आज इन सबकी जगह बाजार की खाद्य सामग्रियों ने ले ली है। साफ है, आज हम होली के त्योहार का असल उद्देश्य, इसकी गरिमामयी मौज-मस्ती, इसमें निहित प्रेम, सबको पूरी तरह से बिसरा चुके हैं।

आशा विनय सिंह बैस, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

होली का त्योहार

अब तक बरकरार इस त्योहार का रंग

कई लोगों को यह शिकायत है कि अब होली में वह मजा नहीं! उनके मुताबिक, अब वह मस्ती नहीं होती, जो पहले होली के दिन लोग किया करते थे। अब बात-बात में तनाव है। यहां तक कि किसी ने *जोगीरा* भी गा दिया, तो एक पक्ष दूसरे पर लाठी बरसाने को तैयार हो जाता है। कई इलाकों में तो अब होली में खुशी के रंग रक्त के रंग में बदल जाते हैं। इसलिए, मैं उन लोगों को पूरी तरह नकार नहीं रहा, जो कहते हैं कि होली का रूप बदल गया है, लेकिन सच यह भी है कि अपवादस्वरूप होने वाली कुछ घटनाओं के आधार पर व्यापकता की बात नहीं की जा सकती। कम से कम मैं आज भी मानता हूं कि होली की मस्ती पूर्ववत कायम है।

आज भी मेरे गांव में फागुन पूर्णिमा को एक तय स्थान पर लोग उपले, लकड़ी आदि का ढेर इकट्ठा करते हैं और शुभ घड़ी में होलिका की अग्नि प्रज्ज्वलित करते हुए रंग की शुरुआत करते हैं। बड़े-छोटे-बुजुर्ग, सभी अपनी-अपनी टोलियों में निकलते हैं और रंग खेलते हैं। पिछले साल की एक घटना बताता हूं। होलिका के लिए लकड़ी की मात्रा कम थी, तो हम कुछ नौजवानों ने तय किया कि होलिका दहन के समय आसपास के घरों की अतिरिक्त लकड़ियां चुपके से ले आएंगे और उसे होलिका में स्वाहा कर देंगे। हमने ऐसा किया भी। मगर अगले दिन अहले सुबह हंगामा मच गया। दरअसल, हमने उन लकड़ियों में एक टूटी चौकी भी जला दी थी, जिसके बारे में पता चला कि पड़ोस के एक बाबा उसी पर सोते थे। चूंकि उस रात वह घर में सोए थे और चौकी द्वार पर यूं ही पड़ी थी, तो हम उसे ले आए थे। बाद में, जब यह घटना उस परिवार के लोगों को पता चली, तो वे भी हंसे बिना नहीं रह सके, लेकिन यह आदेश भी दिया कि हम बाबा के लिए एक नई चौकी ले आएं, जिसे हम लोगों ने खुशी-खुशी मान लिया। कहने का मतलब यह है कि हम लोग आज भी होली में पूरी मस्ती और हुड़दंग करते हैं। होली के दिन सभी को रंग में डूबो देते हैं। अच्छी बात यह है कि जिसको रंग लगाया जाता है, वह बुरा नहीं मानता। खूब मौज-मस्ती होती है।

बेशक, कुछ इलाकों में होली का रंग बदल गया है। संभावना यह भी है कि संचार के आधुनिक साधनों ने लोगों को घरों में कैद कर दिया है, जिसके कारण वे सामाजिक नहीं बन पाते। मगर यदि आप अपने समाज से जुड़े हुए हैं और पड़ोसियों से आपका नाता है, तो होली की मस्ती महसूस करेंगे ही। आज भी अलग-अलग तरह से होली का त्योहार मनाया जाता है। वृंदावन की होली को देखने तो दुनिया भर के लोग आते हैं।

मोहित, टिप्पणीकार

https://epaper.livehindustan.com

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

अरुणाचल पर चीन की बद-दिमागी

भारत के तिब्बत से सटे राज्य अरुणाचल प्रदेश के बारे में चीन शुरू से ही अनर्गल दावे ठोकता रहा है जिनका माकूल जवाब भारत की सरकारें समय-समय पर देती रही हैं। चीन मूलत: विस्तारवादी व सैनिक दिमाग वाला कम्युनिस्ट देश है। इसी वजह से इसने 1962 में भारत पर आक्रमण करके हमारी पीठ में छुरा घोंप दिया था। इस चीनी आक्रमण के समय इसकी फौजें असम के तेजपुर तक पहुंच गई थीं। इससे पहले चीन ने तिब्बत को जबरन अपने कब्जे में ले लिया था जिसकी स्थिति 1949 तक एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में थी। इसी वर्ष चीन में कम्युनिस्ट क्रान्ति हुई थी और यह उपनिवेशवादी शक्तियों से आजाद हुआ था। आजाद होते ही इसने सबसे पहले तिब्बत को हड़पा। इसके बाद इसकी विस्तारवादी नजरें हमारे राज्य 'नेफा' पर गड़नी शुरू हुईं जिसे अब 'अरुणाचल प्रदेश' कहा जाता है। 1962 में भारत पर आक्रमण करके इसने तिब्बत से सटे 'अक्साई चीन' के इलाके पर भी कब्जा कर लिया। हकीकत तो यह है कि भारत पर ब्रिटिश हुकूमत के दौरान ही 1914 में भारत, चीन व तिब्बत के बीच सीमाओं का निर्धारण कर दिया गया था और तीनों के बीच सीमाओं को बांटने वाली रेखा खींच दी गई थी जिसे मैकमोहन रेखा कहा जाता है। मगर चीन ने इस रेखा को यह कहते हुए मानने से इन्कार कर दिया था कि तिब्बत एक स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं है बल्कि यह चीन का ही हिस्सा है।

2003 में केन्द्र में स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के रहते चीन के साथ सीमावर्ती क्षेत्र के बारे में एक समझौता हुआ जिसके तहत भारत ने तिब्बत पर उसके कब्जे को स्वीकार किया और तिब्बत को चीन का एक स्वायत्तशासी क्षेत्र स्वीकार कर लिया। इसके एवज में चीन ने सिक्किम प्रान्त को भारत का हिस्सा स्वीकार किया। सिक्किम रियासत का भारत में विलय स्व. प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी के शासनकाल 1974 में हुआ था। 2003 में भारत ने चीन की बहुत बड़ी मांग स्वीकार कर ली थी क्योंकि उस समय भी भारत में तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा की निर्वासित सरकार चल रही थी।

इसके बाद 1947 में भारत के आजाद होने के बाद इसने भारत व चीन के बीच वास्तविक नियन्त्रण रेखा खींचने की मांग तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू से की जिन्होंने उसकी इस मांग को ठुकरा दिया। मगर 1959 में जब चीन ने तिब्बत को रौंदा तो पं. नेहरू ने इससे सटे 'नेफा' क्षेत्र में भारतीय प्रशासन को बहुत चुस्त-दुरुस्त कर दिया और तिब्बत पर उसके कब्जे को खारिज कर दिया। 1962 में उसके भारत पर आक्रमण करने की यह पृष्ठभूमि थी। इस हमले के बाद जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के पक्ष में माहौल बना तो इसने अपनी फौजों को वापस बुला लिया मगर अक्साई चीन का 36 हजार वर्ग किलोमीटर का इलाका अपने कब्जे में रखा जिसे भारत आज भी अपना इलाका मानता है। इसके बाद 2003 तक चीनी मोर्चे पर यथास्थिति बनी रही हालांकि बीच-बीच में चीन भारतीय क्षेत्रों में फौजी अतिक्रमण करता रहा जिसका हर बार भारत के रणबांकुरों ने उसे माकूल जवाब दिया।

मगर 2003 में केन्द्र में स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के रहते चीन के साथ सीमावर्ती क्षेत्र के बारे में एक समझौता हुआ जिसके तहत भारत ने तिब्बत पर उसके कब्जे को स्वीकार किया और तिब्बत को चीन का एक स्वायत्तशासी क्षेत्र स्वीकार कर लिया। इसके एवज में चीन ने सिक्किम प्रान्त को भारत का हिस्सा स्वीकार किया। सिक्किम रियासत का भारत में विलय स्व. प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी के शासनकाल 1974 में हुआ था। 2003 में भारत ने चीन की बहुत बड़ी मांग स्वीकार कर ली थी क्योंकि उस समय भी भारत में तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा की निर्वासित सरकार चल रही थी। सबसे बड़ा सितम यह हुआ था कि 2003 में तिब्बत को चीनी हिस्सा मानने के बाद ही चीन ने अपने देश का जो मानचित्र प्रकाशित किया था उसमें अरुणाचल प्रदेश को अपना भाग दिखाया गया था।

चीन की इस हरकत पर भारत की संसद में बहुत हंगामा हुआ था। भारत ने तब इस मुद्दे पर चीन को कड़ा विरोध पत्र लिखा था। मगर इसके बावजूद चीन पर कोई असर नहीं पड़ा और वह किसी भी सत्तारूढ़ राजनीतिज्ञ के अरुणाचल प्रदेश के दौरे पर आपत्ति जताता रहा। 2004 में केन्द्र में डा. मनमोहन सिंह की कांग्रेस नीत यूपीए सरकार काबिज होने पर भी यही रुख अपनाये रखा। जब अपने शासन के दौरान प्रधानमन्त्री के रूप में डा. मनमोहन सिंह अरुणाचल की यात्रा पर गये तो उसने इसका विरोध किया और अरुणाचल को अपना हिस्सा बताया। भारत की सरकार ने तब इसका कड़ा विरोध किया मगर दोनों देशों के बीच सीमा तय करने हेतु एक कार्यकारी दल बनाया जिसमें भारत की तरफ से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और चीन की तरफ से ऐसी ही हैसियत रखने वाले मन्त्री को मनोनीत किया गया। तब से लेकर अब तक इस कार्यदल की दो दर्जन के लगभग बैठकें हो चुकी हैं मगर नतीजा कुछ नहीं निकल पाया है। हालांकि दोनों पक्ष इस बात को लेकर आगे चल रहे हैं कि जो इलाका जिस देश के प्रशासनिक नियन्त्रण में है उस पर उसी का कब्जा माना जाये लेकिन इसके बावजूद चीन अरुणाचल प्रदेश में भारत की सरकार द्वारा कराये जा रहे विकास कार्यों पर आपत्ति दर्ज करता रहता है।

मनमोहन सरकार ने जब अरुणाचल के लिए आर्थिक पैकेज दिया था तो चीन ने इसका भी विरोध किया था। अत: चीन की ढिठाई भारत के लोग भलीभांति समझ सकते हैं। भारत की संसद के भीतर ही मनमोहन शासनकाल में यह मांग भी उठी थी कि जम्मू-कश्मीर की भांति ही इसमें एक प्रस्ताव पारित किया जाये जिसमें यह घोषणा हो कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है। यह मांग उस समय लोकसभा में विपक्ष के भाजपा नेता श्री लालकृष्ण अडवानी ने की थी जिसे तब रक्षामन्त्री की हैसियत से स्व. प्रणव मुखर्जी ने खारिज करते हुए साफ किया था कि ऐसा करना बुद्धिमत्ता नहीं होगी क्योंकि भारत का प्रत्येक राज्य इसका अभिन्न अंग है। अरुणाचल के बारे में ठीक ऐसी ही प्रतिक्रिया वर्तमान विदेश मन्त्री एस. जयशंकर ने की है और कहा है कि यह राज्य भारत का स्वाभाविक हिस्सा है। हम जानते हैं कि चीन की हमारी लद्दाख सीमा पर क्या हरकतें हैं। यह भारतीय क्षेत्रों में अतिक्रमण करके भारत को उकसाता रहता है।

आदित्य नारायण चोपड़ा
Adityachopra@punjabkesari.com

बेरंग न रहे किसी की जिंदगी

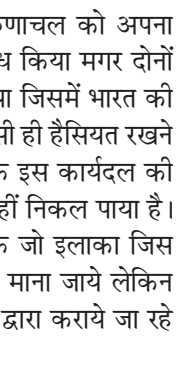

गीता पाढा

बेरंग न रहे किसी की जिंदगी, सभी के जीवन में रंगों की बौछार आए,
जो तोड़ चुके हैं नाता रंग से, इस होली वो चेहरा भी मुस्कुराए,
हम भारतीय एकता के रंगों में रंग जाएं,
भूल के सारे गिले-शिकवे एक-दूसरे को गले लगाएं !!

पंजाब-हरियाणा की पहली महिला सांसद सुभद्रा जोशी

डा. चन्द्र त्रिखा
chandertrikha@gmail.com

चुनावों की चाल, चेहरा और चरित्र अब बिल्कुल बदल चुका है। ऐसे में कुछ चुनाव अनायास यादों में उभरने लगते हैं। हरियाणा-पंजाब के लोग तो अब यह भी भूल चुके हैं कि देश की पहली महिला सांसद भी उन्हीं के क्षेत्र से दिल्ली पहुंची थी और वह सांसद थी सुभद्रा जोशी। वर्ष 1952 में उन्होंने करनाल संसदीय सीट से पहला चुनाव जीता था। लगभग 25 बरस पहले से उनसे भेंट का एक अवसर मिला था। तब उन्होंने बताया था कि उनकी उम्र की समूची राजनीति दिल्ली व उत्तर प्रदेश में केंद्रित रही, मगर वह विशुद्ध पंजाबन थी। जन्म सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में वर्ष 1919 में हुआ था।

भेंट के मध्य उन्होंने खराब स्वास्थ्य के बावजूद बताया कि उन दिनों करनाल संसदीय क्षेत्र अम्बाला-शिमला तक फैला हुआ था और तत्कालीन कांग्रेस पार्टी चुनाव लड़ने के लिए केवल दो हजार रुपए और एक जीप दिया करती थी। केवल एक वाहन और सीमित पैट्रोल-राशि के सहारे उतने बड़े संसदीय क्षेत्र में घर-घर जाना भी संभव नहीं हो पाता था। मगर 'मैंने तब भी 230 रुपए बचा लिए थे और नियमानुसार वह राशि कांग्रेस-मुख्यालय में जमा कराई थी।

सुभद्रा जोशी ने लाहौर के ही एफसी कॉलेज से स्नातक की डिग्री ली थी। विचारों से हद दर्जे की प्रगतिशील थीं। पिता जयपुर राजघराने में पुलिस अधिकारी थे। मगर चुनावी जिंदगी में उन्होंने तीन प्रदेशों का प्रतिनिधित्व किया था। करनाल के बाद उन्होंने एक चुनाव चांदनी चौक दिल्ली से भी जीता था। उससे पूर्व वह उत्तर प्रदेश के बलरामपुर संसदीय क्षेत्र से भी दिग्गज नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी को हराकर लोकसभा में पहुंची थीं लेकिन अगली बार श्री वाजपेयी ने ही उन्हें उसी क्षेत्र से पराजित किया था। वह बतातीं, 'विरोधी शिविर के बावजूद वह अटल जी के प्रति श्रद्धाभाव व प्रशंसा भाव भी रखती रही। उन्होंने ही बताया था कि एक बार अस्वस्थ हुई तो अटल जी स्वयं कुशलमंगल जानने दो बार चले आए थे।'

उन्होंने ही उन चुनावों की सादगी के बारे में बताया था कि श्री लाल बहादुर शास्त्री को उनके साथ फूलपुर क्षेत्र में चुनाव लड़ने के लिए पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया था। उन्हें भी वही दो हजार रुपए थमाए गए थे और साथ में एक पुरानी जीप। चुनावों के बाद शास्त्री जी ने 800 रुपए पार्टी कार्यालय में जमा कर दिए थे, यह कहते हुए कि यह राशि खर्च ही नहीं हो पाई।

उन्होंने यह भी बताया था कि एक बार उन्हीं के उस करनाल संसदीय क्षेत्र से एक संन्यासी स्वामी रामेश्वरनंद ने भी चुनाव लड़ा था। तब उनके मुकाबले में उन्हीं के एक आर्यसमाजी शिष्य एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री वीरेंद्र कांग्रेस के प्रत्याशी थे। तब वह एक बार उस क्षेत्र में गई भी थीं। तब स्वामी जी जीत गए थे। दोनों के चुनाव कार्यालयों में प्रतिदिन हवन भी होते थे। अब चुनावों का चाल-चरित्र-चेहरा पूरी तरह बदल चुका है। वर्ष 1951-52 के पहले चुनावों के समय राष्ट्रीय दलों की संख्या 14 थी। अब केवल सात मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय दल बचे हैं। पहला चुनाव क्षेत्रीय व राष्ट्रीय मिलाकर कुल 53 दलों ने लड़ा था। इनमें आचार्य करपात्री की रामराज्य परिषद भी थी और जम्मू-कश्मीर व पंजाब की प्रजा परिषद भी 53 राजनीतिक दलों ने लड़ा था जिनमें से 14 को 'राष्ट्रीय दल' के रूप में मान्यता दी गई थी। वहीं बाकी को 'राज्य स्तरीय दल' माना गया। देश के चुनावी सफर को दस्तावेजी रूप देते हुए निर्वाचन आयोग (ईसीआई) द्वारा जारी पुस्तिका 'लीप आफ फेथ' के अनुसार, 1953 तक देश में चार राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त दल ही रह गए थे जिनमें कांग्रेस, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (सोशलिस्ट पार्टी और किसान मजदूर पार्टी के विलय से बनी), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) और जनसंघ थे। अखिल भारतीय हिन्दू महासभा (एचएमएस), रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी (आरएसपी), आल इंडिया फारवर्ड ब्लाक (मार्क्सवादी समूह) और आल इंडिया फारवर्ड ब्लाक (रुईकर समूह) समेत कुछ दलों ने अपनी राष्ट्रीय मान्यता गंवा दी। दूसरे चुनाव (1957 में) राजनीतिक दलों की संख्या कम होकर 15 रह गई जबकि राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त दलों की संख्या चार रही। देश में पहले चुनाव के बाद लम्बे समय तक कांग्रेस का प्रभुत्व कायम रहा और उसने 2014 तक देश में हुए 14 चुनावों में से 11 जीते। वर्ष 1951 के लोकसभा चुनाव के बाद अगले दो चुनाव में भाकपा प्रमुख विपक्षी दल रहा। हालांकि, 1964 में पार्टी सोवियत और चीनी कम्युनिस्ट विचार वाले धड़ों में बंट गई और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) का गठन हुआ।

बाजार अनुसंधान और सर्वेक्षण से जुड़ी कंपनी 'एक्सिस माई इंडिया' के प्रमुख प्रदीप गुप्ता ने कहा-सोशलिस्ट माई इंडिया के प्रमुख प्रदीप गुप्ता ने कहा है, सोशलिस्ट पार्टी की जड़ें कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में थीं, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर एक वामपंथी गुट था और जिसका गठन जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया और आचार्य नरेंद्र देव ने किया था। यह आजादी के तुरंत बाद सोशलिस्ट पार्टी से अलग हो गई थी।

"श्री लाल बहादुर शास्त्री को उनके साथ फूलपुर क्षेत्र में चुनाव लड़ने के लिए पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया था। उन्हें भी वही दो हजार रुपए थमाए गए थे और साथ में एक पुरानी जीप। चुनावों के बाद शास्त्री जी ने 800 रुपए पार्टी कार्यालय में जमा कर दिए थे, यह कहते हुए कि यह राशि खर्च ही नहीं हो पाई।

न्यायपालिका तक हो आम आदमी की पहुंच

विनीत नारायण
www.vineetnarain.net

हाल ही में देश की शीर्ष अदालत द्वारा दिये गये कई अहम फ़ैसलों से देश में न्यायिक सक्रियता अचानक बढ़ने लग गई है। इसके पीछे देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डॉ. डी. वाई. चंद्रचूड़ की अहम भूमिका को देखा जा रहा है। हाल ही में मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ का एक राष्ट्रीय टीवी चैनल को दिया गया इंटरव्यू चर्चा में आया है। जब से जस्टिस चंद्रचूड़ ने भारत के मुख्य न्यायाधीश का पद सम्भाला है तभी से देश की शीर्ष अदालत में कई परिवर्तन देखने को मिले हैं। ऐसे कई क्रांतिकारी कदम उठाए गए हैं जो वकीलों, याचिकाकर्ताओं, पत्रकारों और आम जनता के लिए फ़ायदेमंद साबित हुए हैं।

देश भर के नागरिकों को संदेश देते हुए मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा-सुप्रीम कोर्ट हमेशा भारत के नागरिकों के लिए मौजूद है। चाहे वे किसी भी धर्म के हों, किसी भी सामाजिक स्थिति के हों, किसी भी जाति अथवा लिंग के हों या फिर किसी भी सरकार के हों। देश की सर्वोच्च अदालत के लिए कोई भी मामला छोटा नहीं है। इस संदेश से उन्होंने देश भर के आम नागरिकों को यह विश्वास दिलाया है कि न्यायपालिका की दृष्टि में कोई भी मामला छोटा नहीं है। जस्टिस चंद्रचूड़ आगे कहते हैं कि कभी-कभी मुझे आधी रात को ई-मेल मिलते हैं। एक बार एक महिला को मेडिकल अबॉर्शन की जरूरत थी। मेरे स्टाफ ने मुझसे देर रात संपर्क किया। हमने अगले दिन एक बेंच का गठन किया। किसी का घर गिराया जा रहा हो, किसी को उनके घर से बाहर किया जा रहा हो, हमने तुरंत मामले सुने। इससे यह बात साफ़ है कि देश की सर्वोच्च अदालत देश के हर नागरिक को न्याय दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है।

सूचना और प्रौद्योगिकी का हवाला देते हुए मुख्य न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ ने यह भी संदेश दिया कि देश की सर्वोच्च अदालत अब केवल राजधानी दिल्ली तक ही सीमित नहीं है। इंटरनेट के ज़रिये अब देश के कोने-कोने में हर कोई अपने फ़ोन से ही सुप्रीम कोर्ट से जुड़ सकता है। आज हर वो नागरिक चाहे वो याचिकाकर्ता न भी हो देश की शीर्ष अदालत में हो रही कार्यवाही का सीधा प्रसारण देख सकता है। इस कदम से पारदर्शिता बढ़ी है। जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि अदालतों पर जनता का पैसा खर्च होता है, इसलिए उसे जानने का हक है। पारदर्शिता से जनता का भरोसा हमारे काम पर और बढ़ेगा।

टेक्नोलॉजी पर बात करते हुए जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि टेक्नोलॉजी के जरिए आम लोगों तक इंसाफ पहुंचाना मेरा मिशन है। टेक्नोलॉजी के जमाने में हम सबको साथ लेकर चलने की कोशिश कर रहे हैं। हर किसी के पास महंगा स्मार्ट फ़ोन या लैपटॉप नहीं है। केवल इस कारण से कोई पीछे ना छूटे, इसके लिए हमने देश भर की अदालतों में '18000 ई-सेवा केंद्र' बनाए हैं। इन सेवा केंद्रों का मकसद सारी ई-सुविधाएं एक जगह पर मुहैया कराना है। यह एक अच्छी पहल है जो स्वागत योग्य है। ज़रा सोचिए पहले के जमाने में जब किसी को किसी अहम केस की जानकारी या उससे संबंधित दस्तावेज चाहिए होते थे तो उसे दिल्ली के किसी वकील से संपर्क साध कर कोर्ट की रजिस्ट्री से उसे निकलवाना पड़ता था, जिसमें काफ़ी समय ख़राब होता था परंतु आधुनिक टेक्नोलॉजी के ज़माने में अब यह काम मिनटों हो जाता है।

टेक्नोलॉजी के अन्य फ़ायदे बताते हुए जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि 29 फ़रवरी 2024 तक वीडियो कान्फ्रेंसिंग के ज़रिये देश भर की अदालतों में लगभग 3.09 करोड़ केस सुने जा चुके हैं। इतना ही नहीं देश भर के क़रीब 21.6 करोड़ केसों का सारा डेटा इंटरनेट पर उपलब्ध है। इसके साथ ही क़रीब 25 करोड़ फ़ैसले भी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। यह देश की न्यायपालिका के लिए उठाया गया एक एक बड़ी उपलब्धि है। इतना ही नहीं आज सुप्रीम कोर्ट में काम कर रही महिला रजिस्ट्रार देश के कोने-कोने से आई हुई हैं। ये वो न्यायिक अधिकारी हैं जो ज़िला अदालत की वरिष्ठ न्यायाधीश होती हैं। वे अपने अनुभव के आधार पर सुप्रीम कोर्ट के कई जजों की सहायता कर रहीं हैं। इनके अनुभव पर ही सुप्रीम कोर्ट को देश भर की अदालतों के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलती है जो न्यायिक प्रक्रिया को जनता के लिए लाभकारी बनाती है। इसके साथ ही हम इस बात पर भी ध्यान देते हैं कि महिलाओं को कोर्ट में सराहनीय कदम है।

महिला सशक्तिकरण को लेकर जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि फ़रवरी 2024 में सुप्रीम कोर्ट में 12 महिला वकीलों को वरिष्ठ वकील की उपाधि दी गई। अगर आज़ादी के बाद से 2024 की बात करें तो सुप्रीम कोर्ट में केवल 13 वरिष्ठ महिला अधिवक्ता थीं। यह काम करते समय एक सुरक्षित व सम्मानित वातावरण भी मिले।

इस साक्षात्कार का सबसे रोचक पक्ष है जस्टिस चंद्रचूड़ की दिनचर्या का खुलासा। वे गत 25 वर्षों से रोज़ सुबह 3.30 बजे उठते हैं। फिर योग, ध्यान, अध्ययन और चिंतन करते हैं। वे दूध से बने पदार्थ नहीं खाते बल्कि फल-सब्ज़ियों पर आधारित खुराक लेते हैं। हर सोमवार को व्रत रखते हैं। इस दिन साबूदाना की खिचड़ी या फिर अधिक मात्रा में रामदाना प्रयोग करते हैं। जो कि सबसे सस्ता, हल्का और सुपाच्य खाद्य है। रोचक बात ये है कि उनकी पत्नी जिन्हें वे अपना सबसे अच्छा मित्र मानते हैं, इस दिनचर्या में उनका पूरा साथ निभाती हैं। आज के दौर में जब प्रदूषण व मिलावट के चलते हर आम आदमी ज़हर खाने को मजबूर है और तनाव व बीमारियों से ग्रस्त है, जस्टिस चंदचूड़ का जीवन प्रेरणास्पद है।

जस्टिस चंद्रचूड़ को शायद याद होगा कि 1997 से 2000 के बीच सर्वोच्च अदालत के मुख्य न्यायाधीशों के अनैतिक आचरण पर मैंने कई बड़े खुलासे किए थे। जिनकी चर्चा दुनिया भर के मीडिया में हुई थी। जबकि भारत का मीडिया अदालत की अवमानना क़ानून के डर से ख़ामोश रहा। मुझे अकेले एक ख़तरनाक संघर्ष करना पड़ा। तब मेरी उम्र मात्र 42 वर्ष थी। इसलिए तब मेरा विरोध 'अदालत की अवमानना क़ानून के दुरुपयोग' को लेकर भी बहुत प्रखर था। इस पर मैंने एक पुस्तक भी लिखी थी जो अब मैं जस्टिस चंद्रचूड़ को इस आशा से भेजूंगा कि वो इस मामले पर भी सर्वोच्च अदालत की तरफ़ से निचली अदालतों को स्पष्ट निर्देश जारी करें। अदालतों की पारदर्शिता स्थापित करने में ये एक बड़ा कदम होगा।

आपसी भाईचारे और सद्भावना का संदेश देती है होली

योगेश कुमार गोयल

खुशी और उत्साह का प्रतीक रंगों का पर्व होली न केवल सभी को रंगों से खेलने का अवसर प्रदान करता है बल्कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में परिवार और दोस्तों के साथ कुछ पल सुकून के साथ बिताने का समय भी प्रदान करता है। हमारे प्रत्येक त्यौहार, व्रत, परम्परा और मान्यताओं में एक खास संदेश निहित है। होली भी हमारे जीवन में रंगीनियत भरते हुए उसे फिर से खुशियों से सराबोर करती है और खुलकर जीने का अहसास कराती है। यह पर्व आसुरी शक्तियों पर देवत्व की विजय का प्रतीक पर्व है जो हमें नकारात्मकता को छोड़ सकारात्मकता को अपनाते हुए उसके संग उत्सव मनाने का संदेश देता है। गिले-शिकवे भुलाकर खुशियां बांटने का पर्व है होली, इसलिए संबंधों को मजबूत बनाने और यदि किसी भी प्रकार की कड़वाहट चल रही है तो यह पर्व उसे भी भुलाकर पास आने का बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। जीवन में खुशियों के रंग घोलता होली का त्यौहार आपसी भाईचारे और सद्भावना का संदेश देता है।

रंगों के इस त्यौहार पर भला कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो आपसी द्वेषभाव भुलाकर रंग-बिरंगे रंगों में रंग जाना नहीं चाहेगा लेकिन रंगों का असली मजा भी तभी है जब रंगों का रचनात्मक उपयोग किया जाए और होली खेलने के लिए भी केवल सुरक्षित और प्राकृतिक रंगों का ही उपयोग करें। दरअसल लोग एक-दूसरे पर रंग डालकर, गुलाल लगाकर अपनी खुशी का इजहार तो करते हैं लेकिन होली के दिन प्राकृतिक रंगों के बजाय चटकीले रासायनिक रंगों का बढ़ता उपयोग चिंता का बड़ा कारण बनने लगा है। बाजार में बिकने वाले अधिकांश रंग अम्लीय अथवा क्षारीय होते हैं जो व्यावसायिक उद्देश्य से ही तैयार किए जाते हैं और थोड़ी सी मात्रा में पानी में मिलाने पर भी बहुत चटक रंग देते हैं, जिस कारण होली पर इनका उपयोग अंधाधुंध होता है। ऐसे रंगों का त्वचा पर बहुत हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इसलिए बेहतर यही है कि या तो बाजार से अच्छी गुणवत्ता वाले हर्बल रंग-गुलाल ही खरीदें या इन्हें घर पर ही स्वयं तैयार करें।

शुष्क त्वचा वाले लोगों और खासकर महिलाओं तथा बच्चों की कोमल त्वचा पर अम्लीय रंगों का सर्वाधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। अम्ल तथा क्षार के प्रभाव से त्वचा पर खुजलाहट होने लगती है और कुछ समय बाद छोटे-छोटे सफेद रंग के दाने त्वचा पर उभरने शुरू हो जाते हैं जिनमें मवाद भरा होता है। यदि तुरंत इसका सही उपचार कर लिया जाए तो ठीक अन्यथा त्वचा संबंधी गंभीर बीमारियां भी पनप सकती हैं। घटिया क्वालिटी के बाजारू रंगों से एलर्जी, चर्म रोग, जलन, आंखों को नुक्सान, सिरदर्द इत्यादि विभिन्न हानियां हो सकती हैं।

कई बार होली पर बरती जाने वाली छोटी-छोटी असावधानियां भी जिंदगी भर का दर्द दे जाती हैं। इसलिए यदि आप अपनी होली को खुशनुमा और यादगार बनाना चाहते हैं तो इन बातों पर अवश्य ध्यान दें। रासायनिक रंगों के स्थान पर प्राकृतिक रंगों का ही इस्तेमाल करें। ज्यादातर बाजारू रंगों में इंजन ऑयल तथा विभिन्न घातक कैमिकल मिले होते हैं जिनका त्वचा पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। होली खेलने से पहले चेहरे तथा पूरे शरीर पर सरसों अथवा नारियल का तेल या कोल्ड क्रीम अथवा सनस्क्रीन क्रीम लगा लें ताकि रोमछिद्र बंद हो जाएं और रंग त्वचा के ऊपरी हिस्से पर ही रह जाएं। इससे होली खेलने के बाद त्वचा से रंग छुड़ाने में भी आसानी होगी। होली खेलने से पहले बालों में अच्छी तरह तेल लगा लें और नाखूनों पर कैस्टर ऑयल लगाएं ताकि बाद में रंग आसानी से छुड़ाया जा सके। होली खेलने जाने से पूर्व आंखों में गुलाब जल डालें और जहां तक संभव हो आंखों पर चश्मा लगाकर होली खेलें ताकि रंगों का असर आंखों पर न पड़ सके।

होली खेलने के तुरंत बाद स्नान अवश्य करें लेकिन त्वचा से रंग छुड़ाने के लिए कपड़े धोने का साबुन, मिट्टी का तेल, चूने का पानी, दही, हल्दी इत्यादि का प्रयोग हानिकारक है। चेहरे पर लगे गुलाल को सूखे कपड़े से अच्छी तरह पोंछ लें और रंग लगा हो तो नारियल तेल में रूई डुबोकर अथवा क्लींजिंग मिल्क से हल्के हाथ से त्वचा पर लगा रंग साफ करें। रंग छुड़ाने के लिए नहाने के पानी में थोड़ी सी फिटकरी डाल लें और ठंडे पानी से ही स्नान करें। गर्म पानी से रंग और भी पक्के हो जाते हैं। डिटर्जेंट सोप के बजाय नहाने के अच्छी क्वालिटी के साबुन का उपयोग किया जा सकता है। स्नान के बाद भी त्वचा पर खुजली या जलन महसूस हो तो गुलाब जल में ग्लिसरीन मिलाकर लगाएं। बालों से रंग छुड़ाने के लिए बालों को शैम्पू करें। स्नान के बाद आंखों में गुलाब जल डालें। होली खेलते समय यदि आंखों में रंग चला जाए तो आंखों को मलें नहीं बल्कि तुरंत नेत्र विशेषज्ञ से मिलें।

महिलाएं होली खेलते समय मोटे तथा ढीले-ढाले सूती तथा गहरे रंग के वस्त्र पहनें। सफेद अथवा हल्के रंग के वस्त्र पानी में भीगकर शरीर से चिपक जाते हैं जिससे सार्वजनिक रूप से महिला को शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ सकता है। होली के पावन पर्व के मौके पर ऐसा व्यवहार हरगिज न करें जिससे आपके रिश्तेदारों, पति के मित्रों अथवा अन्य पुरुषों को आपसे छेड़छाड़ करने का अनुचित अवसर मिल सके। अपना व्यवहार पूर्णत: संयमित, शालीन और मर्यादित रखें और सामने वाले की कोई गलत हरकत देखने के बाद भी उस पर मौन साधकर उसे और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित न करें।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

संपादकीय जागरण

सोमवार, 25 मार्च, 2024: फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा वि. 2080

रंगों के अभाव में जीवन नीरस हो जाता है

रंग और उमंग का पर्व

रंग और उमंग का अनूठा पर्व हमारा स्वागत कर रहा है। वैसे तो हमारे सारे त्योहार जीवन की एकरसता तोड़ते हैं, लेकिन होली यह काम सबसे प्रभावी ढंग से करती है। यह त्योहार केवल ठहरकर मुक्त मन से उल्लासित होने का अवसर ही नहीं प्रदान करता, बल्कि यह भी कहता है कि मानव मात्र में कहीं कोई भेद नहीं। न कोई ऊंचा है और न नीचा। किसी से बैर नहीं और सबसे मैत्री का भाव जगाने वाले इस पर्व को न केवल पूरे उल्लास से मनाना चाहिए, बल्कि यह संदेश भी ग्रहण करना चाहिए कि होली पर हंसी-ठिठोली के साथ सामाजिक सद्भाव का जो वातावरण निर्मित होता है, वह सदैव हमारे जीवन का हिस्सा बना रहे। रंग-उमंग के बीच सगे- संबंधियों और यहां तक कि अजनबियों से मिलने-जुलने का अवसर उपलब्ध कराने वाली होली संबंधों को प्रगाढ़ करने का एक सशक्त माध्यम भी है। होली मानव मन के कई बंधन तोड़ती है, लेकिन इसका यह अर्थ बिल्कुल भी नहीं कि किसी के मान-सम्मान की परवाह न की जाए। होली पर हंसी-ठिठोली का हंगामा होता है, लेकिन यह हुड़दंग का पर्याय कदापि नहीं होना चाहिए। होली सबको अपनी-अपनी तरह से उल्लास व्यक्त करने की छूट तो देती है, लेकिन मान-सम्मान के दायरे में।

अन्य पर्वों की तरह होली भी हमारी समृद्ध परंपरा और सदियों पुरानी विरासत का स्मरण कराती है। होली पर फिल्मी गीत ही नहीं, सदियों पुराने लोकगीत भी गुंजायमान होते हैं। इन लोकगीतों को सहेजने की आवश्यकता है। होली के अवसर पर मुक्त कंठ से गाई जाने वाली फाग, उड़ते रंग-गुलाल के बीच जोश भरने वाले आल्हा-ऊदल के गायन के साथ देश के अलग-अलग हिस्सों में प्रचलित पारंपरिक गीतों की परंपरा बनी रहे और समय के साथ और समृद्ध हो, इसके लिए सबको अपने-अपने स्तर पर जतन करने होंगे। ऐसे ही जतन हमें उन पारंपरिक व्यंजनों को सहेजने के भी करने होंगे, जो होली पर खास तौर पर बनते हैं। पारंपरिक व्यंजन बाजार की भेंट नहीं चढ़ने चाहिए। आधुनिकता के साथ कदम मिलाने के इस डिजिटल युग में न केवल यह याद रहना चाहिए कि हमें अपनी संस्कृति का संरक्षण करना है, बल्कि यह भी कि उस सामाजिकता को पोषित करना है, जो भारत की पहचान है और जिसके तहत सब एक-दूसरे के सुख-दुख में साझीदार बनते हैं। यदि सामाजिकता सुदृढ़ होती रहे तो हमारी अनेक समस्याओं का निदान हो सकता है और देश को जिस सद्भाव की आवश्यकता है, उसकी पूर्ति भी हो सकती है। होली को किसी धार्मिक अनुष्ठान के रूप में देखना उसकी महत्ता सीमित करना है। यह तो हमारी संस्कृति का ऐसा उत्सव है, जो सबको आत्मीयता के रंग में रंगता है। यह विचित्र है कि कुछ लोग इससे आशंकित रहते हैं कि कहीं रंग के कुछ छींटे उन पर न पड़ जाएं। सबके तन-मन में रंग संग उमंग की तरंग दिखे, इस कामना के साथ होली की बधाई।

सतर्कता जरूरी

होली पर रंग में भंग न पड़े, इसके लिए पुलिस और अस्पतालों के स्तर पर की गई तैयारियां सराहनीय हैं। यातायात पुलिस राजधानी की सड़कों पर पैनी नजर रखेगी। सोमवार को यातायात पुलिस के 1208 अधिकारी और कर्मी दिल्ली के 363 बिंदुओं पर तैनात रहेंगे। 363 प्वाइंट में 113 ड्रंकन ड्राइविंग के प्वाइंट्स होंगे। इन प्वाइंट्स पर करीब 400 कर्मचारी तैनात होंगे। यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर चालान तो किए ही जाएंगे, साथ ही वाहन जब्त भी किए जा सकते हैं। इसी तरह एम्स, आरएमएल अस्पताल के ट्रामा सेंटर एवं सफदरजंग अस्पताल की इमरजेंसी सहित बड़े अस्पतालों में भी अलर्ट रखा गया है। इमरजेंसी में सामान्य दिनों के मुकाबले अधिक रेजिडेंट डाक्टर तैनात किए गए हैं।

होली पर कुछ लोग होश खो बैठते हैं, कहीं शराब तो कहीं भांग के नशे में वाहन चलाने पर दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं, ये गलत है

इसमे कोई संदेह नहीं कि होली पर कुछ लोग होश खो बैठते हैं, कहीं शराब तो कहीं भांग के नशे में वाहन चलाने पर दुर्घटना का शिकार होते हैं और झगड़ा भी कर बैठते हैं। यही नहीं, केमिकल युक्त रंगों और स्प्रे का इस्तेमाल करने से भी परहेज नहीं करते। इसके चलते बहुत से लोगों की त्वचा खराब हो जाती है जबकि कुछ आंखों की जलन से भी दुखी होते हैं। इससे बचा जाना चाहिए। इस होली कुछ ऐसा करें जो दूसरों को भी प्रेरित-प्रोत्साहित करे। अपनों के ही नहीं, गैरों के चेहरे पर भी मुस्कुराहट लाए। नाते-रिश्तेदारों और यार-दोस्तों के साथ-साथ उनका भी मुंह मीठा कराएं जो कहने को तो हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं, लेकिन जिन्हें हम अक्सर भूल जाते हैं।

कह के रहेंगे — माधव जोशी

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या अरविंद केजरीवाल को मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा देना चाहिए?

आज का सवाल
क्या रूस का यह आरोप विश्वसनीय दिखता है कि मास्को में आतंकी हमले के पीछे यूक्रेन की भूमिका है?

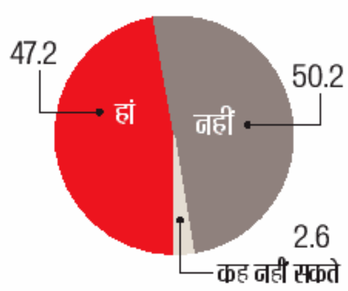

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

राजनीति की भी आदर्श आचार संहिता बने

हृदयनारायण दीक्षित

राजनीति वस्तुतः लोकमंगल की साधना है। इसलिए दलतंत्र को सदैव किसी आदर्श आचार संहिता के दायरे में लेना चाहिए

आदर्श चुनाव आचार संहिता को कानूनी रूप से भी सशक्त बनाना आवश्यक ● फाइल

उत्सवधर्मी भारतीय संस्कृति में रंग पर्व होली के साथ ही विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक महोत्सव 'आम चुनाव' की प्रक्रिया भी आरंभ हो गई है। इस चुनाव में करीब 97 करोड़ मतदाता हैं। निर्वाचन आयोग द्वारा चुनावी घोषणा के साथ ही आदर्श चुनाव आचार संहिता भी लागू हो गई है। स्वतंत्र, निष्पक्ष और निर्भीक चुनाव निर्वाचन आयोग का संवैधानिक कर्तव्य है। निष्पक्ष, निर्भीक और स्वतंत्र चुनाव में धनबल एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। वोट के बदले नोट की घटनाएं सामने आती रहती हैं। प्रशासन अवैध धन और शराब आदि की धरपकड़ की चुनौती से जूझता है। इसमें कई बार निर्दोष भी उत्पीड़न का शिकार होते हैं। निष्पक्ष चुनाव के लिए आदर्श चुनाव आचार संहिता ही एकमात्र उपाय है, लेकिन संहिता का उल्लंघन करने वालों को दंडित करने की कानूनी शक्ति का अभाव है। बेशक आचार संहिता के पालनीय नियम लोक प्रतिनिधित्व कानून, चुनाव नियम और अन्य अधिनियमों का सार हैं, लेकिन राजनीति के खिलाड़ी प्रायः खेल के नियम नहीं मानते। आचार संहिता के उल्लंघन की घटनाएं लगातार बढ़ी हैं।

आचार संहिता का उल्लंघन करने वालों पर भारतीय दंड विधान, दंड प्रक्रिया संहिता या लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रविधानों के अंतर्गत कार्रवाई होती है। आचार संहिता में संहिता उल्लंघन पर दंडात्मक विधिक कार्रवाई का कोई प्रविधान नहीं है। निष्पक्ष चुनाव साधारण कर्तव्य नहीं है। चुनाव लोकतंत्र का प्राण है। चुनाव से ही सरकार बनती है तो जिम्मेदार विपक्ष भी मिलता है। ब्रिटिश राज में भारत शासन अधिनियम, 1935 बना था। इसकी धारा 201 में चुनाव संबंधी सामान्य प्रविधान थे। संविधान निर्माताओं की दृष्टि में सामान्य प्रविधान अपर्याप्त थे। उन्होंने निष्पक्ष चुनावों के लिए स्वतंत्र चुनाव संस्था गठित करने पर विचार किया। संविधान सभा में डा. आंबेडकर ने स्वतंत्र निर्वाचन आयोग का प्रस्ताव रखा। यह कनाडा के निर्वाचन कानून 1920 जैसा था। चुनाव में धांधली और अनुचित साधनों के दुरुपयोग की चर्चा संविधान सभा में भी हुई। डा. आंबेडकर ने मताधिकार को पवित्र बताया और उससे वंचित करने को निंदनीय। हृदयनाथ कुंजरू ने सारगर्भित टिप्पणी में कहा कि, 'दोषपूर्ण चुनाव से जनतंत्र विषाक्त होगा। लोग चुनाव से यही सीखेंगे कि षड्यंत्र आधारित दलों का निर्माण कैसे होता है।' सभा ने स्वतंत्र निर्वाचन आयोग संबंधी प्रस्ताव पारित किया। इसके बाद लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम बना।

देश में हुए पहले चुनाव के दौरान कोई आचार संहिता नहीं थी। 1961 में चुनाव के नियम बने। आयोग ने 1968 में 'चुनाव चिह्न आरक्षण एवं आवंटन आदेश' जारी किया। यह एक साधारण आदेश था, लेकिन कानूनी शक्ति संविधान, लोक प्रतिनिधित्व कानून एवं चुनाव नियम, 1961 में निहित थी। आदर्श चुनाव संहिता तब अस्तित्व में नहीं थी। चुनाव धांधलियां जारी रहीं। धांधली भी केवल चुनावों के समय ही चर्चा में रहती है। चुनाव सुधार की मांग भी महत्वपूर्ण नहीं बन पाई। आयोग लगभग असहाय था। जब टीएन शेषन मुख्य चुनाव आयुक्त बने तब उन्होंने चुनाव को निष्पक्ष बनाने के लिए अनेक आदेश जारी किए। उन्होंने ही पहली बार 'आदर्श चुनाव आचार संहिता' शीर्षक से एक प्रशासनिक पत्र जारी किया। आचार संहिता में दलीय विचार नीति एवं कार्यक्रम को लेकर आलोचना की अनुमति है। व्यक्तिगत आरोपों और प्रत्यारोपों पर सख्त रोक है, लेकिन व्यवहार में दलों की विचारधारा साम्यवाद, राष्ट्रवाद और पूंजीवाद पर बहस नहीं होती। आचार संहिता की धारा एक उपशीर्षक 'सामान्य आचरण' में 'जाति, संप्रदाय, पंथ या भाषाई समूहों के मध्य अलगाव बढ़ाने वाले कृत्यों का निषेध है।' यह स्वागतयोग्य है, लेकिन चुनाव अभियान में जाति और मजहबी तुष्टीकरण की बातें खुल्लमखुल्ला चलती हैं। आदर्श आचरण अल्पकालिक नहीं होते। सदाचरण सहस्त्रों वर्षों के सांस्कृतिक विकास का परिणाम होते हैं। भारत के दलतंत्र की कोई आचार संहिता नहीं है। केवल चुनावों के दौरान आचार संहिता की बात व्यर्थ है। चुनावी आचार संहिता केवल चुनाव के समय ही चर्चा में आती है। शेष समय दलों पर किसी आचार संहिता का अनुशासन नहीं होता। वे संविधान के नीति निदेशक तत्वों एवं संवैधानिक कर्तव्यों पर भी ध्यान नहीं देते। दल अपने कार्य संचालन में किसी आचार संहिता के बंधन में नहीं होते। बेशक आदर्श चुनाव आचार संहिता के सभी तत्व प्रशंसनीय हैं, लेकिन इन कर्तव्यों के पालन की अपेक्षा केवल चुनाव के दिनों में ही की जाती है। वस्तुतः, राजनीतिक व्यवस्था में व्यापक सुधार जरूरी है।

राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाएं एक दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। सामाजिक सांस्कृतिक उत्थान से जुड़े महानुभाव सामाजिक आदर्श आचार संहिता का विकास करते हैं। समाज की आदर्श आचार संहिता का पालन प्रायः सब लोग करते हैं, लेकिन राजनीति इससे मुक्त रहती है। प्रश्न है कि आदर्श चुनाव आचार संहिता या ऐसी कोई अन्य संहिता प्रत्येक समय दलों पर क्यों लागू नहीं हो सकती? चुनाव के ही आदर्श आचरण की जरूरत और शेष समय सदाचरण मुक्त होने का औचित्य क्या है? कुछेक दल अपने राजनीतिक अभियानों में अलगाववाद, तुष्टीकरण एवं जातिभेद की चर्चा करते हैं। जबकि कुछ दल हर समय राष्ट्रीय संप्रभुता एवं अखंडता को चुनौती देते रहते हैं। ऐसे दलों से केवल चुनाव के समय आदर्श आचरण की उम्मीद कैसे की जा सकती है? आदर्श दलतंत्र से ही आदर्श आचार चुनाव संहिता के पालन की उम्मीद की जा सकती है। दलतंत्र का बड़ा हिस्सा नियमविहीन है। औसत दल राष्ट्रीय जीवन मूल्य नहीं मानते। अधिकांश दलों के अपने संविधान भी नहीं हैं। अधिकांश दलों में आजीवन अध्यक्ष हैं। वे दल प्राइवेट प्रापर्टी बन गए हैं। अधिकांश अपना पार्टी संविधान भी नहीं मानते।

राजनीति वस्तुतः लोकमंगल की साधना है। दलतंत्र को सदैव आदर्श आचार संहिता के दायरे में होना चाहिए। चुनाव को निर्भीक-निष्पक्ष बनाने के लिए आदर्श चुनाव आचार संहिता जरूरी है, मगर आचार संहिता का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कड़े कानूनों पर भी विचार किया जाए। राजनीतिक दल चुनाव के अलावा शेष समय में भी पार्टी संचालन और जनअभियानों के दौरान राजनीतिक आचार संहिता का पालन करें तो शुभ होगा। आदर्श चुनाव आचार संहिता पर्याप्त नहीं है, इसे कानून की शक्ति चाहिए। देश को प्रत्येक समय प्रवर्तित आदर्श राजनीतिक आचार संहिता की आवश्यकता है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

अपनत्व और उल्लास का उत्सव

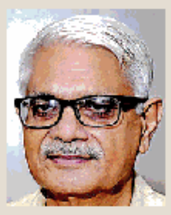

गिरीश्वर मिश्र

रंगों और प्रेम भाव से सुवासित होली का त्योहार बिना किसी भेदभाव के हर किसी को आमंत्रित करता है

रंग संग उमंग का संदेश देती होली ● पेट्र

भारतीय पर्व और उत्सव अक्सर प्रकृति के जीवन क्रम से जुड़े होते हैं। ऋतुओं के आने-जाने के साथ ही वे भी उपस्थित होते रहते हैं। इसलिए भारत का लोकमानस उसके साथ विलक्षण संगति बैठाता चलता है, जिसकी झलक गीत, नृत्य और संगीत की लोक-कलाओं और रीति-रिवाजों सबमें दिखती है। साझे की जिंदगी में आनंद की तलाश करने वाले समाज में ऐसा होना स्वाभाविक भी है। हमारा मूल स्वभाव तो यही सुझाता है कि हम प्रकृति में अवस्थित हैं और प्रकृति हममें स्पंदित है। हमारा अस्तित्ववान होना प्रकृति की ही देन है। जीवन की संभावना अंततः प्रकृति का ही एक दिव्य उपहार है, एक अनोखा उपहार, क्योंकि सारी तकनीकी प्रगति के बावजूद अभी तक जीवन का कोई विकल्प नहीं मिल सका है। यह अलग बात है कि प्रकृति या दूसरे मनुष्यों के साथ रिश्तों को लेकर कृतज्ञता का भाव अब दुर्लभ होता जा रहा है। फाल्गुन के महीने की पूर्णिमा से यह उत्सव पूरे भारत में शुरू होता है और बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। होली का सामुदायिक उत्सव हमें अपने समग्र अस्तित्व को जागृत करने वाला होता है। वह हमें हमारे व्यापक अस्तित्व की याद दिलाता है। आज इस तरह की बातें आसानी से हमारे ध्यान-पटल पर नहीं उतरतीं। वहां जिन विचारों, अनुभवों और भावनाओं की आपाधापी है, उनकी भीड़ में आज न प्रकृति को आंख भर निहारने की फुरसत मिल रही है और न यह सच्चाई ही महसूस हो पा रही है कि हम मूलतः प्रकृतिजीवी हैं, पर इस सच को नहीं झुठलाया जा सकता कि जीवन निरपेक्ष नहीं होता। प्रकृति है तो ही जीवन है। जल, पृथ्वी, आकाश, अग्नि और वायु जैसे तत्व जीवन के अनिवार्य प्राणदायी आधार-स्रोत हैं और आगे भी बने रहेंगे। प्रकृति माता है और हम सब पर प्रकृति का अकूत ऋण है। इस प्रकृति को चुनौती देती और मानवनिर्मित तकनीकी सब पर हावी हो रही है।

नित्य बढ़ते जा रहे तमाम दबावों के बीच डूबता-उतराता आज का आदमी अपने जीवन में तकनीकी के प्रवेश के साथ खुद अपनी प्रकृति या स्वभाव को बेगाना बनाता जा रहा है। उसका तकनीकजीवी बनता जा रहा मानस जीवन और प्रकृति के साथ अपने अटूट रिश्ते को भूलता-बिसराता जा रहा है। अब उसे पग-पग पर तकनीक की जरूरत पड़ रही है। अब दुख-सुख, प्रेम-मोहब्बत और मान-मनौवल जैसी भावनाओं का इजहार-इकरार सब कुछ मानवीय संवेदना से दूर तकनीक के सुपुर्द होता जा रहा है। जीवन की गाड़ी उसी के भरोसे चल रही है। तकनीकजीवी का जीवन आदमी का अपना जीवन नहीं होता है। वह टिका हुआ है सूचना के अनवरत प्रवाह पर। इसमें आगत से अधिक अनागत या कहें तो जो आने वाला है या आ सकता है उसकी चिंता और भय वर्तमान को डसे जा रहे हैं। इसलिए कुछ करने से अधिक जो हो रहा है उसकी पल-पल निगरानी और हिसाब-किताब करते रहने की जरूरत बढ़ती जा रही है। लोग लगातार ई-मेल या वाट्सएप देखने को बेताब रहते हैं और मोबाइल पर उनकी अंगुली लगातार चलती ही रहती है। श्वास-प्रश्वास की तरह मोबाइल-संचालन हमारे जीवन का एक अहर्निश चलने वाला व्यापार होता जा रहा है। यह जरूर है कि इसमें एक किस्म की सृजनशीलता का भ्रम जरूर छिपा रहता है और लगता है कि हम कुछ कर रहे हैं।

मनुष्य समाज में पैदा होता है और उसी में पलता-बढ़ता भी है। होली के दौरान उत्फुल्लता मन और वन, दोनों में एक साथ निखर कर सामने आते हैं। वसंत का चरम उत्कर्ष तब होता है, जब शीत काल की ठिठुरन बीतने के बाद परिवेश में ऊष्मा का संचार होता है। खिलखिलाते रंग-बिरंगे फूलों के गहनों से लदी-सजी प्रकृति सबके स्वागत के लिए सजीव हो उठती है। तब खुद को जीवन-कार्य में जोड़ने की तैयारी का अवसर मिलता है। खेती-किसानी के लिए भी होली एक प्रस्थान बिंदु जैसा होता है। चैत के महीने में वासंतिक नवरात्र के साथ भारतीय नववर्ष शुरू होता है। नए की भावना द्वंद्वों और संघर्षों से उबरते हुए नए समारंभ करने की प्रेरणा वाली होती है। रंगों और प्रेम भाव से सुवासित समानता और समता की गारंटी देने वाला होली का उत्सव आवाज देता है कि अपने-अपने अहं का विसर्जन कर आगे आओ। यह बैर का दहन कर उल्लास का प्रसाद बांटने का अवसर होता है। रंगों में भीगने-भिगोने के बाद होली के दिन रुचिकर व्यंजन भी बनते हैं और परिजनों के साथ खान-पान का आनंद लेते हैं। संगीत और काव्य की दृष्टि से होली का अवसर सृजनशीलता को आमंत्रित करता रहा है।

होली पर सभी सबको एक रंग में रंगने को आतुर रहते हैं। सबको एक-सा बनाने का प्रयोजन सौहार्द और निकटता की भावना को जगाना होता है। इसका एक अभिप्राय यह भी है कि हम उस अविभक्त अव्यय भाव को महसूस करें, जो अव्यक्त होकर सबके अंतर्मन में व्याप्त रहता है। अपनी-अपनी अस्मिताओं को बचाने और बनाने का उत्सव तो सब करते हैं, पर उसे छोड़कर व्यापक समष्टि की अस्मिता अपनाने का साहस दिलाना होली का प्रयोजन है। अपनी अस्मिता को छोड़ या उसका विस्तार कर बड़ी अस्मिता को अंगीकार करना सामाजिक परिवर्तन की शक्ति होती है। इसके साथ समानताओं की पहचान भी जरूरी है। हम सिर्फ एक दूसरे से भिन्न हैं, यह कहना अधूरी बात होगी और असत्य भी, क्योंकि हम सबमें व्यापक समानताएं भी हैं। मनुष्य होने के लक्षण सबमें हैं और मनुष्यता भी इसीलिए जीवित है, क्योंकि सभी किसी न किसी सीमा तक मनुष्यता से जुड़े हैं। होली का संदेश यही है कि संकुचित और क्षुद्र अस्मिताओं से ऊपर उठकर देश और समाज की व्यापक अस्मिता का अंग बनते हुए ही हम उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।

(लेखक शिक्षाविद् हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

रंग

जीवन में रंग है इसीलिए वह जीवन है। उसका समस्त आकर्षण रंगों में ही छिपा है। यदि यह प्रकृति रंगों से भारी न होती तो बहुत बेनूर होती। उसका सारा सौंदर्य इन्हीं रंगों में समाया है। रंग हैं तो जीवन में उल्लास है, बेरंग जीवन नीरसता का पर्याय है। हर रंग की एक भिन्न प्रकृति होती है और इस तरह हर रंग कुछ कहता है। अपनी इसी विशेषता के चलते उसका अस्तित्व होता है।

यदि हम गहनता से विचार करें तो पाएंगे कि रंगों का भी अपना दर्शन है। रंग की दृश्यात्मक अनुभूति के लिए प्रकाश का होना आवश्यक है। रात के गहन अंधकार में तो सारे रंग सिर्फ कालिमा में बदल जाते हैं। ऐसे ही जीवन के सच्चे रंगों के लिए चेतना और ज्ञान का प्रकाश होना आवश्यक है। अज्ञानता की कालिमा में तो सारे रंग होते हुए भी उनकी अनुपस्थिति हो जाती है। विज्ञान कहता है कि रंग वस्तु में नहीं होता, बल्कि वह सूर्य के प्रकाश में होता है। सूर्य के प्रकाश में मौजूद सात रंगों वाली किरण जब किसी वस्तु पर पड़ती है तो उस वस्तु द्वारा कुछ रंगों का कोई अवशोषण कर लिया जाता है। शेष वापस लौटे रंग, उस वस्तु के रंग को प्रदर्शित करते हैं।

श्वेत रंग, जो कि शुभ्रता का प्रतीक है, प्रकाश की अधिकांश मात्रा को वापस लौटा देता है। पूर्ण प्रकाश का परावर्तन कर देने वाली वास्तु पारदर्शी होती है। जबकि कालिमा का प्रतीक काला रंग, पूरे प्रकाश का अवशोषण कर लेता है। मनुष्य का जीवन भी तो कुछ ऐसा ही है। कोई व्यक्ति यदि खुद को प्राप्त होने वाली हर एक वस्तु का बस स्वयं ही संपूर्ण उपभोग कर ले तो सामाजिक दृष्टि से उसे सम्मान प्राप्त नहीं हो सकता। इसके विपरीत जो स्वयं के लिए कुछ रखकर शेष समाज को लौटा देता है, समाज में उसका व्यक्तित्व उतना ही शुभ्र और श्रेष्ठ माना जाता है। रंग मौन होकर भी जो कुछ कहते हैं, उसे हम जितना अधिक समझ पाते हैं, जीवन में रंगों की उपस्थिति उतनी ही अधिक होती है।

डा. प्रशांत अग्निहोत्री

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

चुनाव की बिसात पर भाजपा और कांग्रेस

'कौन कितने पानी में' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में संजय गुप्त ने 2024 की चुनावी बिसात पर अपना-अपना दमखम दिखाने वाले सत्ता पक्ष और विपक्ष की जमीनी मजबूती का जो आकलन किया है, वह विपक्ष के लिए चिंता का विषय बनना चाहिए। लोकतंत्र में मतदाता का रुझान ही महत्वपूर्ण होता है और वर्तमान में यह रुझान मोदी सरकार द्वारा लोकहित और देशहित में किए गए विकास कार्यों की तरफ है। जाति, संप्रदाय, परिवार और भाई-भतीजावाद की दूषित राजनीति से बंधा रहने वाला आम मतदाता जब से मोदी सरकार की आयुष्मान, उज्ज्वला, प्रधानमंत्री आवास जैसी अनेक जनहितकारी योजनाओं से लाभान्वित हुआ है तभी से उसे बहुमत की मजबूत सरकार और उसकी ताकत का अहसास होने लगा है। अब केंद्र सरकार द्वारा भेजी गई धनराशि बिचौलियों द्वारा बीच में ही खुर्द-बुर्द न होकर बैंक खाते के माध्यम से शत-प्रतिशत रूप से लाभार्थी को प्राप्त हो रही है। सरकार की विकास योजनाओं से मिलने वाला लाभ देश की आम जनता के जीवन स्तर को ऊपर उठाने वाला सिद्ध हो रहा है। ठीक इसके विपरीत जब डा. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस देश की सत्ता पर विराजमान थी तब अरबों रुपये के घोटालों ने देश को आर्थिक रूप से कमजोर किया। 9/11 के मुंबई हमले के रूप में देश ने पाकिस्तान पोषित आतंकवाद का दंश झेला। तुष्टीकरण को संपुष्ट करने के लिए प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह द्वारा देश के संसाधनों पर पहला हक अल्पसंख्यक समुदाय का बताया गया। आज देश की जनता केंद्रीय सत्ता के इन दो ध्रुवों को ठीक से परख रही है। 2024 में राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा और कांग्रेस ही एक दूसरे के आमने-सामने हैं। बाकी क्षेत्रीय दल या तो स्वतंत्र होकर चुनाव लड़ने जा रहे हैं अथवा अपनी निष्ठा के अनुरूप भाजपा और कांग्रेस के साथ खड़े हो गए हैं। ऐसे में इस चुनावी बिसात पर कौन कितना दमखम दिखा पाता है, यह भविष्य के गर्त में है।

pandeyvp1960@gmail.com

नशे की जकड़ में पंजाब

पंजाब में अव्यवस्था का आलम है। पंजाब में लाखों लोग नशे के आदि हो गए हैं। ड्रग्स कारोबार फलफूल रहा है। जिस तरह पंजाब के संगरूर में जहरीली शराब से अनेक मौत हुई हैं। आम आदमी पार्टी की सरकार हर तरफ निष्फल होती दिखाई दे रही है। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार पंजाब में 30 लाख लोग नशेड़ी हो गए है। खालिस्तान समर्थकों के बढ़ते प्रभाव और ड्रग्स कारोबार बढ़ने से सरकार की कमजोरी साबित हो रही है। जहरीली शराब से संगरूर में करीब कई लोगों की मौते हो चुकी है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान जब आप संयोजक व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर कुशलक्षेम पूछने गए थे, उस समय जहरीली शराब से लोग दम तोड़ रहे थे। उड़ते पंजाब के नाम से घिरे पंजाब में कानून व्यवस्था चौपट हो गई है। सरकार क्या कर रही है। मुख्यमंत्री भगवंत मान की नैतिक जवाबदारी लोगो को पहले सुरक्षा कवच प्रदान करना है न कि भ्रष्टाचार मामले में केजरीवाल के प्रति हमदर्दी जताना है। युवाओं को नशेड़ी बनाने से पहले अव्यवस्था के दौर से गुजर रहे पंजाब को बचाया जाए।

कांतिलाल मांडोत, नई दिल्ली

संवेदनशील सरकार

मीडिया और तकनीकी उन्नति के साथ, भारतीय चुनावी प्रक्रिया में बदलाव की धारा शुरू हो रही है। चुनावी प्रक्रिया के शुरू होने से पहले ही सरकार ने विकास के लक्ष्यों को साकार करने के लिए कई आर्थिक योजनाओं को शुरू किया है। इनमें से एक अहम योजना है वैश्विक प्रौद्योगिकी उत्पादन में भारत की उपलब्धता, जो नई नौकरियों और व्यापार के अवसरों को उत्पन्न करेगी। चुनाव की प्रक्रिया में भी बड़ा बदलाव आ रहा है। पंजीकृत मतदाताओं की संख्या में वृद्धि हुई है, विशेष रूप से महिलाओं, युवाओं और विकलांग लोगों के बीच। ये नए मतदाता राजनीतिक प्रक्रिया में नई दिशा प्रदान कर रहे हैं और अपनी आवाज को सुनाने का साहस दिखा रहे हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि नई सरकार अपने कार्यों को सुनिश्चित रूप से प्राथमिकता दे, नई सरकार ने 100 दिन की कार्ययोजना तैयार की है और विभिन्न क्षेत्रों में अपने कार्यों को संचालित करने के लिए योजना बनाई है। व्यापार के क्षेत्र में भी सरकार ने उत्साहजनक कदम उठाए हैं, जैसे पश्चिमी ब्लाक के साथ व्यापार सौदों की घोषणा। ये सभी कदम दिखाते हैं कि भारत नई दिशा में बढ़ रहा है और नई सरकार की नीतियों का व्यापारिक और राजनीतिक क्षेत्र में व्यापार होगा। अधिकतर व्यक्तियों ने इसका सकारात्मक रूप से स्वागत किया है। सरकार की संवेदनशीलता और कदम उठाने की योजना ने देश में उत्साह भरा है और लोगों की आशाएं बढ़ी हैं।

अवनीश कुमार गुप्ता, नई दिल्ली

पोस्ट

जिंदगी में मिला हर शख्स होली सा है। कोई रंग भरता गया तो कोई रंग बदलता गया।

डा. प्रियंका शुक्ला@PriyankaJShukla

रूस में बर्बर आतंकवादी हमले के बाद जो जानकारियां सामने आई हैं, उनसे इस्लामिक स्टेट की एक नई घिनौनी कार्ययोजना उजागर हुई है। भारत में भी अभी कुछ लोग पकड़े गए हैं। ऐसे में आइएस के समूचे तंत्र और उसकी विचारधारा का समूल नाश करने के लिए ठोस कार्रवाई बेहद जरूरी है।

कमर वहीद नकवी@qwnaqvi

फिल्म 'सावरकर' को रणदीप हुड्डा ने ब्लैक्यूमेंट्री के अंदाज में बनाया है। अगर आपको विनायक दामोदर सावरकर के जीवन के बारे में, उनके संघर्ष के बारे में जानना हो और उनके योगदान को समझना हो तो इससे शानदार फिल्म नहीं हो सकती।

ब्रजेश कुमार सिंह@brajeshksingh

नागरिकता संशोधन कानून राजनीति का नहीं, मानवाधिकार का विषय है। इस कानून के राजनीति से इतर होने का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि इसके बारे में भारत ने तब वादा किया था, जब जवाहरलाल नेहरू देश के प्रधानमंत्री थे।

आमना बेगम अंसारी@Amana_Ansari

जनपथ

ईडी वाले खेलते होली बिल्कुल मस्त,
प्रश्नों की गुंझिया चखें नेता सारे भ्रष्ट।
नेता सारे भ्रष्ट चलेगी जब पिचकारी,
उगलेंगे सब राज महोदय बारी-बारी।
बचते-बचते आप अंतत: हुए हवाले,
फगुआ गाकर रंग मलेंगे ईडी वाले!!

– ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीलेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, स्थानीय संपादक-प्रदीप कुमार शुक्ल* दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय: 011-43166300, नोएडा कार्यालय: 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 34 अंक 251

****

महोत्सव विश्वास का 75
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

जब तुम उत्सवपूर्ण होते हो, पूरा अस्तित्व तुम्हारा भागीदार हो जाता है। - ओशो

होली खुशियों का त्योहार है। इस अवसर पर बाजारों में रौनक और लोगों का उत्साह स्वाभाविक ही है। मन के कलुष मिटाकर सबके जीवन में खुशियों के रंग भरने वाला यह उत्सव किसी के लिए परेशानी का कारण नहीं बनना चाहिए।

जिंदगी के रंगों में डूबें

कोरोना के दुःस्वप्न के खत्म होने के बाद वैश्विक युद्धों से त्रस्त मानवता और बेहद अस्थिर दुनिया होने के बावजूद, जिसका असर भारत में भी दिख रहा है, लोकसभा चुनावों से ऐन पहले, इस बार की होली खास है। वैश्विक मंदी के दौर में देश की अर्थव्यवस्था जिस गति से बढ़ रही है, उसकी तारीफ विश्व की बड़ी रेटिंग एजेंसियों ने की है और कुछ चुनौतियों के बावजूद, उम्मीद जताई जा रही है कि भारत जल्द ही विश्व की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होगा। ऐसे में, बाजारों में जो रौनक और रंगों व उमंगों के इस त्योहार में लोगों का उत्साह दिख रहा है, वह स्वाभाविक ही है। दरअसल, होली त्योहार ही ऐसा है, जिसमें वसंत उत्सव से लेकर होली तक पूरे माहौल में एक अलग तरह का उल्लास छाया रहता है। जिस 'हरी घास पर क्षण भर' बैठने की बात अज्ञेय ने कही थी, ग्लोबल वार्मिंग के चलते वह बेशक उतनी हरी न रह गई हो, लेकिन दो ऋतुओं की संधि बेला में प्रकृति में हो रहे बदलाव बरबस ही आकर्षित करते हैं। यह वह त्योहार है, जब ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, ताकतवर-कमजोर इत्यादि के सभी फर्क खत्म हो जाते हैं। लेकिन इसका बुरा पक्ष यह है कि होली की मस्ती के नाम पर उच्छृंखलता भी यदा-कदा चरम पर पहुंचती दिखती है, जिसे रोकने की जरूरत है। यह बात सभी को समझनी चाहिए कि आप वहीं तक स्वतंत्र हैं, जब तक आपकी स्वतंत्रता किसी की स्वाधीनता में बाधक न बने। होली सामाजिकता और मेलजोल का त्योहार है, लेकिन सामने वाले की सुविधा-असुविधा का ख्याल रखने की पारस्परिकता ही होली का मर्म है, जिसे सभी को समझने की जरूरत है। होली की आड़ में असामाजिक तत्व मौके का फायदा न उठा सकें, इसके लिए भी पर्याप्त सतर्क रहने की जरूरत है। यह समझने की भी जरूरत है कि होली प्रकृति की ओर लौटने का वक्त है, इसमें शराब या किसी दूसरे नशे की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। आज सोशल मीडिया युग में सामाजिकता पोस्ट को लाइक व शेयर करने तक सीमित रह गई है। उम्मीद करनी

चाहिए कि ठेठ उल्लास की सहज अभिव्यक्ति 'होली' आज जिंदगी की इस डरावनी चुप्पी को तोड़ेगी और मन के कलुष मिटाकर सबके जीवन में खुशियों के रंग भरेगी। त्योहारों का मकसद समाज को जोड़ना होता है, फिर होली तो सारी कड़वाहटों को भुलाकर दुश्मन को भी गले लगाने के लिए जानी जाती है। उम्मीद है कि चुनावी रंग में डूबे हमारे राजनेता भी जिंदगी के असली रंगों में डूबेंगे।

विश्वगुरु की होली

एक ओर 'एनडीए' की पिचकारी है, दूसरी ओर 'इंडी' की लाचारी है। एक ओर 'चार सौ के पार' वाले रंगों की बौछार है, दूसरी ओर आपसी 'रार' है, 'तकरार' है और 'कन्फ्यूजन' की 'भरमार' है। एक के पास 'फिर एक बार, मोदी सरकार', 'इस बार चार सौ पार' का राग है, तो दूसरे के पास सिर्फ खिसियाहट का 'झाग' है!

सुधीश पचौरी
साहित्यकार

चुनाव का रीजन है। होली का सीजन है। होली के रंग हैं, होली की भंग है, तरंग है! सत्ता के पास 'गुलाल' है, विपक्ष के पास सिर्फ 'मलाल' है, इसीलिए उसकी बिगड़ी चाल है! एक ओर 'एनडीए' की पिचकारी है, दूसरी ओर 'इंडी' की लाचारी है। एक ओर 'चार सौ के पार' वाले रंगों की बौछार है, दूसरी ओर आपसी 'रार' है, 'तकरार' है और 'कन्फ्यूजन' की 'भरमार' है। एक के पास 'फिर एक बार, मोदी सरकार', 'इस बार चार सौ पार' का राग है, तो दूसरे के पास सिर्फ खिसियाहट का 'झाग' है!

साढ़े पांच सौ साल बाद एनडीए के 'रघुवीरा' के हाथ में पिचकारी आई है और वे अपने लाखों-करोड़ों भक्तों से रोज होली खेल रहे हैं। सदियों से विस्थापित रघुवीरा अपने मंदिर में स्थापित हो चुके हैं। ईर्ष्या-द्वेष व नफरत रूपी 'होलिका' अपनी ही आग में जल चुकी है और 'प्रह्लाद' रूपी भक्त जलने से बच गए हैं और सब मिलकर होली गा रहे हैं- *आज अवध में होरी रे रसिया...आज बिरज में होरी रे रसिया...होली खेले रघुवीरा अवध में होली खेले रघुवीरा...*हुरियारे गा रहे हैं। नाच रहे हैं। खुशी के 'मंजीरे' और 'चंग' बज रहे हैं, मोदी की 'भंग' का 'रंग' चढ़ रहा है।

एक ओर रघुवीरा और नंदलाल होली खेल रहे हैं, दूसरी ओर तरह-तरह के छंदलाल, फंदलाल और धंधलाल होली खेल रहे हैं। रघुवीरा और नंदलाल के पास विकास की पिचकारी है, रंग है, भंग है, चंग है, बजाने का ढंग है, लेकिन छंदलाल, फंदलाल और धंधलालों के पास न रंग है, न चंग है, न बजाने का ढंग है, न पिचकारी है...ऐसी लाचारी है! रघुवीरा नंदलाल एक से एक 'रंग' मारते हैं, लेकिन छंदलाल सिर्फ 'रंग में भंग' डालते हैं! एक 'भिगोता' है, दूसरा 'रोता' है! यह होली सनातन है, सनातन के रंग हैं, चंग है, ढंग है, लेकिन छंदलालों की होली 'बदरंग' है! एक दस साल से 'रंग' खेल रहे हैं, दूसरे दस साल से 'तंग' फील कर रहे हैं। छंदलालों के लिए होली 'हिंदू' है, 'हिंदुत्व' है, 'कम्यूनलिज्म' है, 'तानाशाही है, फासिज्म है, जबकि बाकी के लिए होली भारत का

होलियाना चिंतन

'कल्चरल जनतंत्र' है, बराबरी का विधान है, समानता का अनुष्ठान है और एक परंपरागत सांस्कृतिक वितान है, जिसमें मोदी के विकास की लंबी तान है, मोदी का 'फ्यूचरिस्टिक गान' है, जो मोदी की 'आन' है, 'बान' है, 'शान' है और जो मोदी की 'जान' है, जो मोदी का 'कर्म' है, मोदी का 'मर्म' है, मोदी का 'धर्म' है! विपक्ष के लिए यह सब 'शर्म' है!

मोदी के गोपी-ग्वाल-बालों और हुरियारों के लिए होली 'मस्ती का त्योहार' है, 'मुहब्बत की सरकार' है, जिसमें राजा-रंक सब बराबर हैं, जिसमें अकबर खेलते हैं, बीरबल खेलते हैं, पद्माकर खेलते हैं और नजीर खेलते हैं और सब अब तक खेलते हैं। होली का राष्ट्रगीत 'बुरा न मानो होली है' जो सबकी 'परमानेंट ठिठोली' है, प्यार की बोली है, लेकिन कुछ के लिए यह हिकारत भरी 'गाली' है! ऐसी होली ही नफरतियों का इलाज है। मेंटलों, बीमारों की 'कल्चरल थिरेपी' है। वह मन के मैल-कुचैल को बाहर निकालती है। नफरतिए मन को स्वस्थ करती है...क्योंकि *गिले-शिकवे भूल कर दोस्तो, दुश्मन भी गले मिल जाते हैं... होली के दिन दिल खिल जाते हैं, रंगों से रंग मिल जाते हैं...* होली मुहब्बत की कल्चर है, जो उसके निंदक हैं, वही उसके 'वल्चर' व 'खलचर' हैं! होली ही मुहब्बत की 'परमानेंट दुकान' है, बाकी सब 'फीका पकवान' है। जो होली खेले, वही उसका 'जिजमान' है। होली है तो हिंदुस्तान है, वरना सब 'श्मशान' है।

एक 'मीडिया हाउस' के कॉन्क्लेव में आकर मोदी मस्त होली खेलते हैं! मोदी जैसे ही 'विकास की होली' का गीत शुरू करते हैं, अपनी भावी विकास योजनाओं की पिचकारी चलाते हैं, वैसे ही सारे लोग भावविभोर ताली बजाने लगते हैं और मोदी-मोदी...गाने लगते हैं। ये है मोदी की होली!

इसे देख, निंदकजन निंदा की पिचकारी चलाते हैं कि 'बेरोजगारी' है, 'महंगाई' है और 'निरंकुशता' की बहार है, कि यह 'वसूली सरकार' है, कि जनता नाराज है, कि ये 2024 में जा रही है और हमारी आ रही है! मोदी अपनी ही पिच और अपनी पिचकारी से अपनी विकास योजनाओं का 'अमृत' बरसाते हैं और उधर सारी जनता 'मोदी-मोदी' चिल्लाने लगती है। लगता है कि मोदी सचमुच 'दुर्जेय' हैं।

सभा हो या मीडिया, मोदी अपनी लागू की गई योजनाओं-जैसे साठ करोड़ जन-धन खाते, सोलह करोड़ उज्ज्वला गैस कनेक्शन, इतने ही इज्जत घर, करोड़ों पक्के मकान, अस्सी करोड़ को फ्री राशन, हर राज्य में फर्स्ट क्लास इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास, मुद्रा योजना और अन्य सैकड़ों कल्याणकारी योजनाएं और अगले बरसों में भारत को 'दुनिया की तीसरी इकनॉमी' बनाने के अपने संकल्पों के बारे में बताते हैं और सामने बैठा हर देवी-देवता 'तीसरी बार मोदी सरकार' के नारे लगाने लगता है...।

एक जमाने में कहा जाता था 'बैनेटन के रंग...' आज कहा जाता है 'मोदी के रंग मोदी के संग!' 2014 आया, तो मोदी 'अच्छे दिन आएंगे' वाली पिचकारी से खेले। 2019 आया तो मोदी 'मोदी है, तो मुमकिन है' की पिचकारी मारते आए और हर चीज 'मुमकिन' कर दी, लोग मोदी-मोदी का 'फाग' गाते रहे! अब, 2024 में मोदी, 'गारंटी वाली गारंटी' और 'मेरा भारत मेरा परिवार' की पिचकारियां लेकर भावी योजनाओं में अपने विकास के रंगों को भर रहे हैं और लोग न्योछावर हुए जा रहे हैं और मानकर चल रहे हैं कि 2024 में मोदी ही आ सकते हैं, मोदी ही आ रहे हैं...।

एक दिन विपक्ष को 'चुनावी बॉन्ड' वाली पिचकारी मिल जाती है और वह मोदी से होली खेलने लगता है कि इतने बॉन्ड कहां से आए...देने और लेने वाले के बीच क्या लेन-देन हुआ... । मोदी तुरंत अपनी 'फ्यूचरिस्टिक पिचकारी' लेकर आते हैं और भारत को एक 'विकसित राष्ट्र' बनाने का प्लान बताकर आश्वस्त करते हैं कि आने वाले बरसों में अपना भारत 'विकसित राष्ट्र' बन जाएगा और दुनिया के बड़े से बड़े देश से आंख मिलाकर बराबरी की होली खेलने लगेगा।

यही विश्वगुरु का रंग है, विश्वगुरु की तरंग है। विश्वगुरु की चंग है। विश्वगुरु का ढंग है। यही विश्वगुरु की होली है। ट्रंप बाइडन से खेल रहे हैं और मोदी विपक्ष से खेल रहे हैं! यही मोदी की गारंटी की गारंटी है, जबकि विपक्ष के लिए यह सब खतरे की 'घंटी' है!

edit@amarujala.com

https://t.me/AllNewsPaperPaid

जीवन धारा

उमाकांत मालवीय

कठिनतम परिस्थितियों में भी जीवन की उत्सवधर्मिता को निस्तेज न होने देना ही वास्तविक पुरुषार्थ है। जब हम हंसते हैं, तो वह हंसी परमात्मा द्वारा प्रदत्त प्रसन्नता की हमारी ओर से एक कृतज्ञतापूर्ण स्वीकृति होती है।

सर्वत्र रंगनाथ की रंगमयता ही नजर आती है

मैं कैसे कहूं कि बसंत आया है, पर कोई उत्कंठा नहीं। इतना बड़ा सच महसूसने और फिर उसे अभिव्यक्त करने के लिए भीतर जो रस-रसाव चाहिए, जो आचरणगत साहस अपेक्षित है, वह मेरे पास कहां है, न तो वैसा अर्जन है और न ही वैसे संस्कार। हेमंत के पियरा गए पत्ते एक-एक कर झर चले हैं, जीर्ण वसन विहाय प्रकृति नया परिधान धारण कर रही है, वह ललछर नन्हा-मुन्ना किसलय और वह चिकनी रेशमी कोंपलें, जैसे मेरे अपने बेटे और बिटिया। पत्तों की यह हरीतिमा, एक साथ इतनी ढेर-सी हरीतिमा मन प्राणों में उतरती जा रही है, मैं नेत्रों से ही नहीं, वरन रोम-रोम से इस हरीतिमा को पी रहा हूं और मन है कि अघाता ही नहीं। और अब छोटे-छोटे पीले फूलों की बहार है। हवा का एक झोंका उन्हें छेड़ जाता है, सरसों की पतली कमर हजार-हजार बल खा गई, लाजवंती तन्वंगी छुईमुई हो चली, वासंती छवि आंखों में आंज लेता हूं। सारा का सारा पलाश वन दहक उठा है। एक मशाल जुलूस-सा यह पलाश वन। हां, तो यह आया है फूलों का मौसम, रूप का मौसम, रस का मौसम, गंध का मौसम।

प्रतिकूल कठिनतम परिस्थितियों में भी जीवन की इस उत्सवधर्मिता को निस्तेज न होने देना ही कदाचित वास्तविक पुरुषार्थ है। जब हम हंसते हैं, तो वह हंसी वास्तव में परमात्मा द्वारा प्रदत्त प्रसन्नता की हमारी ओर से एक कृतज्ञतापूर्ण स्वीकृति होती है। हम केवल कृतज्ञ होना सीख सकें, तो हमें किसी प्रार्थना या उपासना की आवश्यकता नहीं होगी। कृतज्ञता स्वयं में सर्वोत्तम प्रार्थना और उपासना है।

ढोल और मंजीरे की तान के साथ फगुआ की तान से बार-बार रोमांच हो आता है। राधा-कृष्ण, पार्वती-शंकर, राम-सीता, गोकुल ब्रज के गोप-गोपियों और बाल-गोपालों के माध्यम से भारतीय मानस होली खेलता है। अबीर और गुलाल के बादल उड़ रहे हैं। रंगों का पर्व है यह, मैं सोचता हूं आखिर विष्णु को रंगनाथ क्यों कहा गया है। उनकी सृष्टि की रंगमयता के कारण? रंगों की गुंजाइश 'एकोहं द्वितीयो नास्ति' के अद्वैत में नहीं, वरन 'एकोहं बहुस्यामि' में होती है। सर्वत्र रंगनाथ की रंगमयता ही तो नजर आती है।

होली का इंतजार था। और होली आ भी गई। होली आई और होलिका दहन हुआ, कहते हैं इस अग्नि परीक्षा से सत्याग्रही प्रह्लाद कुंदन की तरह दमकता हुआ निकला था। औरों को क्या कहूं, स्वयं मेरे भीतर अभावों, लोकेष्णा और एक अदद चुपड़ी वासना का अनवरत होलिका दहन हो रहा है और उसमें मेरी ईमानदारी, निष्ठा, आस्था, श्रद्धा, स्वाभिमान का प्रह्लाद नित्यप्रति भस्म होता जा रहा है। नृसिंह के प्रकट होने में तो अभी विलंब है। कौन है, जो इस होलिका दहन से मेरे भीतर के प्रह्लाद को बचाएगा। त्राण बाहर खोजना स्वयं में एक नादानी है। त्राण तो मेरे भीतर है, उसे टेरना होगा। इस टेरने और हेरने के क्रम में स्वयं में एक टेर हो जाना होगा। हेरते-हेरते हेरा जाना होगा।

और अंत में प्रार्थना...

सूत्र

होली के रंगारंग अबीर-गुलाल और पकवानों के दौर में पसली के नीचे कहीं कुछ चिलक उठा है और यह चिलकन देश के उस बहुमत के लिए है, जो दैनिक अभावों के कारण इसमें शामिल नहीं हो पाता। सुना है, प्रार्थना अनुत्तरित नहीं होती। इस विश्वास से मैं प्रार्थना करता हूं कि उन सबको भी इस रंगारंग आनंद में शामिल होने का आमंत्रण और अवसर दो मेरे प्रभु!

दूसरा पहलू

वर्ष 1906 में ग्वालियर के राजा माधव राव सिंधिया ने अफ्रीका से कुछ शेरों को मंगवाया था, ताकि इनकी संख्या बढ़े।

कभी चीतों की तरह शेरों को भी बसाया गया था

भूपेंद्र कुमार

मध्य प्रदेश के कुनो नेशनल पार्क में अफ्रीका के नामीबिया से चीतों को लाने के बारे में तो सभी जानते हैं, पर कम लोगों को पता होगा कि लगभग सवा सौ साल पहले अफ्रीका से शेरों को भी लाकर मध्य भारत में बसाया गया था। यह वह दौर था, जब राजा-महाराजा शेर और बाघों का जमकर शिकार कर रहे थे, और अपने अंग्रेज आकाओं को खुश करने के लिए उन्हें भी शिकार का न्योता देते थे।

वर्ष 1873 में अंग्रेज फौजी कर्नल हाल ने ग्वालियर के पास गुना में मध्य भारत के आखिरी एशियाई शेर का शिकार कर इस प्रजाति का खात्मा कर दिया था। भारत में केवल गिर वन में ही शेर बचे थे। वर्ष 1900 के आसपास लॉर्ड कर्जन ने जूनागढ़ रियासत के गिर वन क्षेत्र में जब शिकार करने का इरादा जताया, तो लोगों ने इसका भारी विरोध किया। आखिरकार कर्जन को अपना इरादा छोड़ना पड़ा, पर शेर के शिकार की ख्वाहिश बनी रही। कर्जन ने ग्वालियर के राजा सर माधव राव सिंधिया से कहा कि अगर वे तैयार हों, तो ग्वालियर के जंगलों में शेरों को छोड़ा जाए। इससे यहां शेर हो जाएंगे और शिकार आसानी से हो सकेगा।

वर्ष 1901 में राजकोट के ब्रिटिश एजेंट माधव राव ने जूनागढ़ के शासक को आठ शेर भेजने के लिए पत्र लिखा। पर जूनागढ़ के नवाब ने मना कर दिया। अब सिंधिया ने अफ्रीका से शेरों को लाने की योजना बनाई। कर्जन की मदद से सिंधिया ने केन्या, सूडान और सोमालीलैंड से शेरों को मंगवाया। 1906 में ये शेर भारत लाए गए, दो साल तक कुनो के डोबघाट में रखने के बाद दो जोड़ों को जंगल में छोड़ा गया। फिर 1910 में चार और जोड़ों को छोड़ा गया। पर जल्द ही ये शेर आदमखोर बन गए। इनमें से कुछ को ग्वालियर रिसायत के शिकारियों ने मार दिया, तो कुछ दूर-दूर तक चले गए। ग्वालियर रियासत के शिकार विभाग के प्रमुख कर्नल केसरी सिंह ने अपनी किताब में विस्तार से इस बारे में लिखा है। वर्ष 1920 तक आठ शेर पकड़कर वापस डोबघाट में पत्थर की 20 फीट ऊंची दीवार से घिरे वन क्षेत्र में रखे गए, जहां उन्होंने कुछ शावकों को जन्म भी दिया। बाद में उन्हें फिर से छोड़ दिया गया, जो कोटा और झांसी तक देखे गए। 1928 में एक अफ्रीकी शेर ने पचवारा में 20 लोगों को मार डाला था। अफ्रीकी शेर पीले रंग के होते हैं, इसलिए स्थानीय लोग इन्हें ऊंटिया (ऊंट जैसे रंग के) शेर कहते थे। 17 मई, 1937 को कोटा के महाराजा ने अफ्रीकी शेर का शिकार किया। इसके बाद अफ्रीकी शेरों की थर्रा देने वाली दहाड़ फिर किसी ने नहीं सुनी।

अफ्रीका से मंगवाए गए इन शेरों को जब जंगल में छोड़ दिया गया, तो जल्द ही ये आदमखोर बन गए। नतीजतन इनमें से कुछ को शिकारियों ने मार दिया, तो कुछ दूर-दूर तक चले गए।

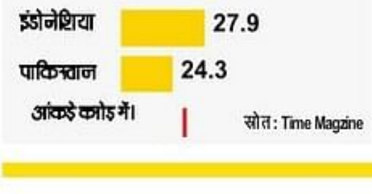

17 मई, 1937 को कोटा के महाराजा ने अफ्रीकी शेर का शिकार किया। इसके बाद अफ्रीकी शेरों की थर्रा देने वाली दहाड़ फिर किसी ने नहीं सुनी।

आंकड़े

चुनावी देश की आबादी

इस वर्ष करीब 64 देशों में राष्ट्रीय चुनाव हुए या होने वाले हैं, जहां दुनिया की आधी आबादी रहती है। इनमें सबसे ज्यादा आबादी हमारे ही देश में है।

देश	आबादी
भारत	144
यूरोपीय संघ	44.8
अमेरिका	34.1
इंडोनेशिया	27.9
पाकिस्तान	24.3

आंकड़े करोड़ में। स्रोत : Time Magazine

जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, कुसंग के कारण उसका मन चंचल होने लगता है। सभी दुर्गुण हमारे मन के असंयमित और चंचल होने के कारण अंदर से उपजते हैं।

मन की पवित्रता

अंतर्यात्रा
शिव कुमार गोयल

किसी भी प्रकार की साधना की सफलता के लिए शास्त्रों में मन को शुद्ध, पवित्र, छल-छद्म से रहित बनाने पर जोर दिया गया है। महर्षि पतंजलि कहते हैं, अपने मन को राग-द्वेषों से, तेरा-मेरा की भावना से मुक्त कर उसे परमात्मा की ओर उन्मुख करना चाहिए। मन को भगवान से जोड़ने का नाम ही योग है।

परमहंस बाबा मुक्तानंद कहते हैं, बालक का मन सर्वथा दोषरहित व निश्छल होता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, कुसंग के कारण उसका मन चंचल होने लगता है तथा उसमें अनेक दोष आ जाते हैं। सभी दुर्गुण हमारे मन के असंयमित और चंचल होने के कारण अंदर से उपजते हैं। इसलिए प्रतिदिन सत्संग, स्वाध्याय, साधना की आवश्यकता होती है। निरंतर सत्संग, स्वाध्याय से मन पवित्र बना रहता है। यदि मन में परमात्मा को रमाए रखने का अभ्यास हो जाए, तो वह हर पल, हर क्षण निश्छल बना रहता है।

संत रविदास अपना काम करते समय भी अपने मन को एकाग्र कर भगवान की ओर लगाए रखते थे। वह हाथों से कार्य करते हुए मुंह से भगवान का नाम जपने की प्रेरणा दिया करते थे। इसलिए उन्होंने कठौती में गंगा के दर्शन कराकर सबको चमत्कृत कर दिया था- *मन चंगा तो कठौती में गंगा।*

(अमर उजाला आर्काइव से)

अमर उजाला पुराने पन्नों से — 26 जनवरी, 1987

खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता के लिए अनुसंधान जरूरी

खाद्य पदार्थों का अनुसंधान जरूरी: जैल

राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने कहा कि खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता बेहतर बनाने के लिए अनुसंधान अत्यंत जरूरी है। कृषि और उद्योगों में काफी घनिष्ठ संबंध है और कृषि उत्पादों में वृद्धि से देश की अर्थव्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद मिली है।

बारूद के मुहाने पर बैठा पाकिस्तान

ग्वादर पर यह हमला बलूच समूहों की बढ़ती हुई आक्रामक क्षमता को ही इंगित करता है। ग्वादर बंदरगाह में चीन का अच्छा खासा निवेश भी है।

रवींद्र दुबे — पड़ोस

हाल ही में पाकिस्तानी सुरक्षा बलों को ग्वादर पोर्ट अथॉरिटी काम्प्लेक्स पर हुए एक जटिल हमले का मुकाबला करने में दो घंटे तक काफी परेशानियों से जूझना पड़ा। इस जंग में आठ हमलावर और दो सिपाही मारे गए। बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी की मजीद ब्रिगेड ने इस हमले की जिम्मेदारी ली। उन्होंने जोर देकर यह दावा किया कि पाकिस्तान की इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस और मिलिटरी इंटेलिजेंस के ठिकाने उनके लड़ाकों के निशाने पर थे।

अभी दो हफ्ते पहले ही बलूच लिबरेशन फ्रंट ने केच इलाके के कोल्वा कस्बे में भी दस सैन्य वाहनों के काफिले पर घात लगाकर हमला किया था। पिछले दो वर्षों से पाकिस्तान में बलूच घुसपैठ बढ़ती जा रही है। घुसपैठिए हिम्मत के साथ सामने से हमला कर पाकिस्तानी सैन्य और पारा सैन्य संस्थानों की सुरक्षा की धज्जियां उड़ा रहे हैं। ग्वादर का यह हमला बलूच समूहों की बढ़ती हुई आक्रामक क्षमता को ही इंगित करता है। यह हमला इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि

ग्वादर बंदरगाह में चीन का अच्छा-खासा निवेश है, और यह चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। वस्तुतः इसे महज एक आतंकवादी हमला कह कर खारिज नहीं किया जा सकता। इस हमले ने पाकिस्तान के, खुद अपने देश में चीनी हितों की सुरक्षा के प्रयासों पर सवालिया निशान लगा दिए हैं।

बीजिंग ने बारंबार अपने नागरिकों और निवेश की सुरक्षा के प्रयास बढ़ाए जाने पर जोर दिया है। कंगाल हो चुके पाकिस्तान को इस चीनी निवेश की जबर्दस्त जरूरत है। भू-राजनीति के विशेषज्ञों का मानना है कि बलूचिस्तान में अलगाववाद की आग इस कदर पनप चुकी है कि बारूद के मुहाने पर बैठा पाकिस्तान का यह प्रांत कभी भी विस्फोट कर सकता है। यह प्रदेश तेल, कोयला सोना, तांबा और गैस भंडारों सहित प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद पकिस्तान का सबसे गरीब और सबसे कम आबादी वाला इलाका है। इसका क्षेत्रफल भी सर्वाधिक है।

यह हमला प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के कुर्सी संभालने के चंद हफ्तों के भीतर हुआ है। पाकिस्तान में उग्रवाद के विशेषज्ञ और स्वतंत्र विश्लेषक फाखर ककाखेल के अनुसार, प्रतीकात्मक रूप से उक्त हमला महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार, इस हमले से अखबारी सुर्खियां बनीं और यही बलूच घुसपैठिए चाहते भी थे। वे यह संदेश देना चाहते थे कि खासे सुरक्षा इंतजामों के बावजूद वे अपने मकसद में कामयाब रहे।

एक अन्य स्वतंत्र विश्लेषक किया बलोच का कहना है कि हमला पाकिस्तान के पुख्ता सुरक्षा इंतजामों से लैस शहर के हाई सिक्योरिटी जोन में हुआ है। इस हमले से बलूच अलगाववादियों ने पूरी दुनिया को संदेश दिया है कि चीन या किसी अन्य विदेशी दल के लिए निवेश के लिए ग्वादर बंदरगाह सुरक्षित नहीं है।

बात केवल पाकिस्तान द्वारा चीनी हितों की सुरक्षा बढ़ाने तक सीमित नहीं है। बलूच घुसपैठिए और पाकिस्तानी तालिबान उस इलाके को निशाना बना रहे हैं, जहां से चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा गुजर रहा है। विश्लेषकों के अनुसार, इस क्षेत्र की शांति उक्त गलियारे के पूरा होने की दिशा में एकमात्र हल है और यह तभी हो सकता है, जब सरकार बलूचिस्तान की जरूरतें पूरी करने के लिए बातचीत की शुरुआत करे, बजाय कड़ा रुख अख्तियार कर तनाव बढ़ाने के। यह संवाद बलूच युवकों के साथ शुरू किया जाना चाहिए। विश्लेषकों का यह भी मानना है कि चीन अब खुद के सुरक्षाकर्मी रखने का प्रस्ताव दे सकता है, जिसे पाकिस्तान ने दो साल पहले खारिज कर दिया था। शुरुआती तौर पर बलूच लिबरेशन आर्मी जैसे बलूच अलगाववादी समूह प्रांतीय संसाधनों में अपना हिस्सा मांग रहे थे, लेकिन बाद में उन्होंने पूरी आजादी के लिए आंदोलन छेड़ दिया। ईरान और अफगानिस्तान की सीमा पर स्थित बलूचिस्तान में उपेक्षा का इतिहास रहा है। वर्ष 1948 में पाकिस्तान ने भारत से अलग होते ही इस प्रांत पर कब्जा कर लिया था और अलगाववादी आंदोलन तभी से चला आ रहा है।

इसके अलावा, पाकिस्तान में आतंकवाद की घटनाएं काबुल में तालिबान सरकार बनने के बाद बढ़ गई हैं। इससे पाकिस्तान की यह उम्मीद भी खत्म हो गई है कि अफगानिस्तान में दोस्ताना सरकार बनने से आतंकवाद से निपटने में मदद मिलेगी। पाकिस्तान के सेंटर फॉर रिसर्च ऐंड सिक्योरिटी स्टडीज की सालाना रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2023 में पाकिस्तान में हुए 789 आतंकवादी हमलों और आतंकवाद विरोधी अभियानों में 1,524 लोग मारे गए और 1,463 लोग घायल हुए।

राजस्थान पत्रिका
संस्थापक
कर्पूर चन्द्र कुलिश

जल संकट से निपटने को बने दीर्घकालिक नीति

देसी सिलिकॉन वैली के नाम से विश्रुत बेंगलूरु में जल संकट गंभीर समस्या बनी हुई है। बेंगलूरु और देश के अन्य महानगरों में ही नहीं, पूरी दुनिया में जल संकट गहराता जा रहा है। जल संकट पर संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट भी चौंकाने वाली है।

दरअसल, पिछले कुछ दशकों में शहरीकरण पर काफी जोर दिया गया जबकि जल स्रोतों के संरक्षण और बेहतर जल प्रबंधन को लेकर उदासीनता बनी रही। शहरीकरण से आर्थिक गतिविधियों को तो बढ़ावा मिला मगर पानी जैसी मूलभूत जरूरत को पूरा करने के लिए कोई दीर्घकालिक और दूरदर्शी नीति नहीं अपनाई गई। विकास की राह पर सरपट दौड़ते बेंगलूरु जैसे महानगरों के जल संकट के पीछे शहरों के विकास और विस्तार को लेकर दीर्घकालिक नीतियों का अभाव सबसे बड़ा कारण है। विकास के साथ शहरों में गगनचुंबी इमारतों की संख्या बढ़ने के साथ ही रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी समस्याएं भी बढ़ती गईं। पहले शहरों का विकास क्षैतिज होता था मगर अब ऊर्ध्वाधर होता है। उर्ध्वाधर विकास में छोटी जगह में बड़ी-बड़ी इमारतें बनती हैं और वहां काफी संख्या में लोगों के रहने की व्यवस्था होती है जबकि क्षैतिज विकास में बड़ी जगह में छोटे मकान बनते थे यानी ज्यादा जगह में कम लोग रहते थे। किसी भी जगह जमीन में पानी जैसे संसाधनों की सीमा सीमित होती है मगर शहरी विकास की योजना तैयार करते समय इन बिंदुओं पर ध्यान नहीं दिया जाता कि वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों से कितनी आबादी की आवश्यकता पूरी हो सकती है। शहरों ही नहीं, अब गांवों में भी पोखर, तालाब जैसे स्रोतों की संख्या दिन-ब-दिन घटती जा रही है। विकास की दौड़ में सूख चुके जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने के बजाय वहां इमारतें बनाई जा रही हैं। सरकार और नीति-नियंता इससे अनजान नहीं हैं मगर जब भी जल संकट होता है तब सिर्फ कुछ तात्कालिक उपायों की घोषणा कर अपने दायित्वों की इतिश्री कर लेते हैं और हर साल समस्या गंभीर होती जाती है।

वर्षा जल संरक्षण और पुनर्जलभरण जैसी योजनाएं भी पूरी तरह से कार्यान्वित नहीं हो पा रही हैं। पानी के भंडार असीमित नहीं हैं। अगर पानी नहीं बचाएंगे तो एक दिन बूंद-बूंद के लिए तरसना ही पड़ेगा। बेंगलूरु जैसा संकट सिर्फ झलक है। पानी के विवेकपूर्ण उपयोग को लेकर भी लोगों को जागरूक करने की जरूरत है। मकान निर्माण सहित गैर पेयजल कार्यों में रीसाइकिल किए गए पानी का उपयोग किया जाना चाहिए, अन्यथा पानी का संकट विकराल होता जाएगा।

होली पर विशेष

नीरसता के खिलाफ शंखनाद करता है रंगों का त्योहार

रंगोत्सव या होली का पर्व हर्ष और उल्लास के साथ बड़े, बूढ़े, बच्चे हर किसी को अनूठे ढंग से जीवंत कर देता है।

भारत की प्रकृति विश्व के अनेक देशों की तुलना में इस अर्थ में अनोखी और उदार है कि छह ऋतुओं के साथ साल भर यहां का पूरा परिवेश बदलता रहता है। बदलाव का संदेश जल (वर्षा), वायु और अग्नि (तापमान) आदि प्राकृतिक तत्वों के खास किस्म के संयोजन के द्वारा मुखर होकर हम तक पहुंचता रहता है। इसमें वृक्ष, लता, और पशु-पक्षी भी सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। ऐसा लगता है जैसे कोई नृत्य-नाटिका चल रही हो और इसकी निर्देशिका प्रकृति नेपथ्य से सबको अपनी भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित कर रही हो। परम्परा की मानें तो भारत की ऋतुओं में मुख्य वसंत है जिसे ऋतुराज भी कहते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में महीनों में मार्गशीर्ष और ऋतुओं में 'कुसुमाकर' अर्थात वसंत के रूप में अपनी पहचान कराई है - मासानां मार्गशीर्षो हमृतूनां कुसुमाकरः। माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को वसंत की सुनगुन मिलने लगती है। मान्यता के अनुसार वसंत कामदेव का पुत्र है। इसलिए उसके जन्म के साथ ही सृष्टि में इच्छाओं और कामनाओं का संसार करवट लेने लगता है। परम्परा के हिसाब से वसंत ऋतु का विस्तार फागुन और चैत दो महीने का होता है। वसंत की उपस्थिति खेतों में पीली सरसों, नीले रंग के तीसी के फूल, आम के पेड़ों पर मंजरी, कोयल की कूक आदि में देखी-सुनी जा सकती है और फागुनी बयार से स्पर्श भी की जा सकती है पर वसंत का आग्रह बलवान होता है। वह प्रकृति के सौंदर्य के साथ मानव हृदय को भी उद्दीप्त करता है। होली या रंगोत्सव इसी का प्रतिफलन है। होली का पर्व जल, वायु, और वनस्पति से सजी-संवरी प्रकृति के क्रोड़ में मानवीय हर्षोल्लास का स्पंदन है।

गिरीश्वर मिश्र
पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
@patrika.com

होली का पर्व अपने सीमित अस्तित्व का अतिक्रमण करते हुए लघु से विराट की ओर आगे बढ़ने का आह्वान करता है।

रंगोत्सव या होली का पर्व हर्ष और उल्लास के साथ बड़े, बूढ़े, बच्चे हर किसी को अनूठे ढंग से जीवंत कर उठता है। पूर्णिमा की रात को होलिका-दहन से जो शुरुआत होती है, वह सुबह के साथ रंगों की वर्षा के एक ऐसे अनोखे त्योहार में बदल जाती है जिसमें अपना-पराया, छोटा-बड़ा, ऊंच-नीच आदि का भेद मिटा कर, अपने दायरों को पार करते हुए अपने आवरणों से मुक्त हो कर लोग एक दूसरे के निकट आते हैं। पारस्परिकता के इस उत्सव में हमारा अहंकार विगलित होता है और हम समग्र अस्तित्व का अंश बनने लगते हैं। रंग, गुलाल और अबीर से एक दूसरे को सराबोर करते लोग अपनी अलग-अलग पहचान से मुक्त हो कर एक दूसरे से हंसी-ठिठोली करने की छूट ले लेते हैं। अपने घरौंदों से बाहर निकल कर लोग परिचित-अपरिचित सबसे प्रसन्नता के साथ मिलते-जुलते हैं। गर्मजोशी के साथ लोग स्वयं का अतिक्रमण करते हुए अहंकार त्याग कर आत्म-विस्तार की ओर आगे बढ़ते हैं। नीरसता के खिलाफ शंखनाद जैसा यह उत्सव सबको साथ लिए चलने के लिए प्रेरित करता है। होली के केंद्र में रास-रचैया, छैल-छबीले, नटखट, बनवारी श्रीकृष्ण बहुत याद आते हैं। लोक जीवन में इस अवसर पर रसिया, फाग और बिहू के गान गाए जाते हैं। भक्तों और कवियों ने गोपियों संग राधा और कृष्ण की मधुर-लीला को केंद्र में रख अनेक सरस पद रचे हैं। कृष्ण की सुबास से अब भी गोकुल और बरसाने की होली भीगी रहती है और लोगों को आनंदित करती है। अवध, काशी और वृंदावन में होली मनाने की अपनी-अपनी खासियत हैं। सांस्कृतिक स्मृति में होली, फागुन और उल्लास पर्यायवाची बन चुके हैं। होली का उत्सव वसंत के भाव का मूर्तिमान रूप है।

आज के दौर में आपाधापी बढ़ गई है। तीव्र नगरीकरण और बाजार अब सब कुछ बदलने पर उतारू है। भूमण्डलीकरण का आकर्षण स्थानीयता और सांस्कृतिक वैशिष्ट्य को ढहाता जा रहा है। इसे संजोना जरूरी है। समाज, प्रकृति और व्यक्ति के बीच पारस्परिकता और समरसता को नजर लग गई है। प्रतिस्पर्धा, लोभ और हिंसा के बढ़ते अवसर मानवीय मूल्यों को धराशायी कर रहे हैं। हम भूलते जा रहे हैं कि प्रकृति के साथ जीने में ही आनंद है। प्रकृति हमें बंधुत्व और उदारता का ही संदेश देती है।

शान्ति का महामंत्र: कृष्ण कहते हैं कि मन-मस्तिष्क सही तरह से वश में न किए जाएं तो ये हमारे सबसे बड़े शत्रु

दौड़भाग भरी जिंदगी का सही स्पीड ब्रेकर है प्रार्थना

मैं अपनी बात आपसे एक सवाल से शुरू करता हूं – अगर हम एक बंद कमरे में एक छोटे-से पौधे के गमले को रख दें तो क्या होगा, क्या वह पौधा फलीभूत हो पाएगा, क्या उसमें नई पत्तियां या नए फूल आएंगे? नहीं। क्योंकि उसे पनपने-खिलने के लिए ताजी हवा, सूर्य की रोशनी और सही माहौल चाहिए, यदि उसे यह सब न मिले तो वह मुरझा जाएगा।

ठीक वैसे ही अगर हम अपने दिमाग की बात करें तो हमारे दिमाग में हर सेकण्ड न जाने कितने विचारों के तूफान उठते हैं और ये प्रक्रिया लगातार चलती रहती है। तेज गति से बिना रुके हमारा मस्तिष्क चलता रहता है। पर क्या आपको नहीं लगता कि इस तेज गति का कोई स्पीड ब्रेकर होना चाहिए जो हमारे जीवन रूपी गाड़ी को सही दिशा में ले जाए? वह ब्रेकर है – प्रार्थना। प्रार्थना ही हमें वह सही माहौल देती है जिससे हमारे दिमाग रूपी पौधे में शांति के फूल खिलते हैं। अगर हम अपने भागते हुए जीवन में से कुछ पल निकाल कर भगवान के नाम का जाप करें तो इसका हमारे मन और मस्तिष्क पर बड़ा ही चमत्कारी प्रभाव पड़ता है।

भगवान के नाम का स्मरण करने के या प्रार्थना करने के अनेक तरीके हो सकते हैं। उनमें से एक है महामंत्र 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे' का जाप। इस महामंत्र के जाप से हमारे जीवन में शान्ति, स्थिरता और खुशी की बढ़ोतरी होती है। यह मंत्र सीधा हमें भगवान से जोड़ता है और उनके करीब ले जाता है। आप भी अपनी व्यस्त दिनचर्या में से थोड़ा समय निकाल कर इस महामंत्र का जाप करने के प्रभावों को अनुभव कर सकते हैं। सबसे खास बात यह कि इस मंत्र का जाप करते हुए इसे सुनने की कोशिश करें जिससे आपका मन एकाग्र होगा, आपके आसपास का माहौल पवित्र होगा और आप असीम शांति का अनुभव करेंगे।

मनुष्य के दिमाग को शान्ति और ऊर्जा देने के लिए भी एक माहौल चाहिए। भगवद्गीता में भी अर्जुन भगवान कृष्ण से अपनी दुविधा कहते हैं – 'चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्। तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।' अर्थात – हे कृष्ण, ये मन बड़ा ही चंचल है, इसे वश में लाना तो वायु को वश में लाने से भी दुष्कर है। जब अर्जुन इस दुविधा से 5000 साल पहले जूझ रहे थे तो फिर आज का तो कहना ही क्या? आज शायद ही कोई ऐसा मीडिया प्लेटफार्म होगा, जहां आत्महत्या, अवसाद, हत्या के समाचार न हों।

कृष्ण भगवद्गीता में कहते हैं – 'अगर मन और दिमाग को सही तरह से वश में न किया जाए तो यह हमारा सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है,' इसलिए दिमाग में विचारों के बवंडर को थामने के लिए हमे इसे शांत करना होगा और यह भी एक कला है जिसमें धीरे-धीरे अभ्यास करने से हम एक दिन निपुण हो ही जाते हैं। अब सवाल यह है कि ऐसी क्या रामबाण दवा है जिसे लेकर हम अपने दिमाग को शांत और स्थिर कर सकते हैं। यह रामबाण दवा है इच्छाओं को काबू में करना। हम किसी वस्तु को पाने की इच्छा करते हैं, यदि वह मिल जाती है तो हम खुश हो जाते हैं। फिर कुछ समय बाद दूसरी इच्छा, फिर तीसरी और चौथी इच्छा और इस तरह यह क्रम जारी रहता है। यदि इच्छा पूरी न हो तो हमारे अंदर चिंता, गुस्सा और उदासी छा जाती है। हम कभी संतुष्ट नहीं होते, तुलना करते हैं और सोचते हैं कि मुझे भी यह करना है, मुझे भी यह पाना है।

दरअसल, इच्छाओं का कोई अंत नहीं है तो सबसे पहले हमें अपनी अनावश्यक इच्छाओं को रोकना है। प्रार्थना से दिमाग शांत होता है। प्रार्थना हमें ईश्वर के करीब ले जाती है। यह संवाद होता है हमारे और भगवान के बीच। प्रार्थना से वह माहौल बनता है जिससे हमारे मस्तिष्क रूपी बाग में शान्ति के फूल खिलते हैं। भगवान के नाम का जाप करना, धार्मिक पुस्तकें जैसे भगवद्गीता, रामायण आदि पढ़ने से दिमाग में नकारात्मक विचारों का आवेग कम हो जाता है। हमें अपने जीवन के असली उद्देश्य के बारे में पता चलता है और जो शिक्षाएं इन महान ग्रंथों में छिपी हैं अगर उन्हें हम जीवन में गंभीरता से आत्मसात करते हैं तो फिर अनावश्यक इच्छाएं, चिंता, गुस्सा, तुलना, लालच – ये सारे भाव धीरे-धीरे स्वतः विलुप्त हो जाते हैं और आप अपने अंदर असीम शांति, नई ऊर्जा और सकारात्मकता का अनुभव करते हैं। यही है प्रार्थना की ताकत।

अमितासन दास
अध्यक्ष, हरे कृष्ण मूवमेंट, जयपुर एवं मुंबई
@patrika.com

प्रार्थना से अनावश्यक इच्छाएं, चिंता, गुस्सा, तुलना, लालच – ये सारे भाव धीरे-धीरे स्वतः विलुप्त हो जाते हैं और आप असीम शांति व नई ऊर्जा का अनुभव करते हैं।

क्यूब हाउस डिजाइन शहर में साकार हुई गांव की अवधारणा

नीदरलैंड्स के रॉटरडैम में ये 'क्यूब हाउस' ओवरब्लाक स्ट्रीट पर ब्लाक मेट्रो स्टेशन के ठीक ऊपर स्थित हैं। मूल रूप से 1977 की एक परियोजना के तहत यहां 55 घर तैयार किए जाने थे, लेकिन उनमें से 38 छोटे क्यूब और दो 'सुपर-क्यूब' ही तैयार किए गए। ये सभी क्यूब हाउस एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। ये 'क्यूब हाउस'वास्तुकार पीट ब्लॉम ने डिजाइन किए थे। ये 'शहर की छत पर रहने' की अवधारणा पर आधारित हैं। इसका अर्थ है जमीन पर पर्याप्त जगह के साथ उच्च घनत्व वाले आवास। इसका मुख्य उद्देश्य घरों के अंदर की जगह को अधिकतम अनुकूलित करना है। ब्लॉम ने एक पारंपरिक घर के कोने के क्यूब यानी घन को ऊपर की ओर झुकाया, और इसे षट्भुज के आकार के तोरण पर रख दिया। उनका डिजाइन एक शहर के भीतर एक गांव का प्रतिनिधित्व करता है, जहां हर घर एक पेड़ का प्रतिनिधित्व करता है, और सभी घर एक साथ एक जंगल का प्रतिनिधित्व करते हैं। दुनिया भर में 'क्यूब हाउस' का केंद्रीय विचार मुख्य रूप से एक घर के रूप में, अंदर के कमरों के बेहतर वितरण के लिए जगह को अनुकूलित करना है।

समाज : देरी से संतान को जन्म देने या इससे बचने की प्रवृत्ति आर्थिक विकास में बाधक

चाइल्ड केयर नीतियों पर दिया जाए खास ध्यान

युवा वर्ग में देर से संतान को जन्म देने या 'कोई संतान नहीं' की मानसिकता बढ़ती जा रही है। यह सबसे गंभीर आर्थिक चुनौतियों में एक है। कम बच्चों के जन्म लेने का मतलब है-आने वाले दशकों में श्रमबल में कमी और युवाओं का अनुपात कम होना। अंततः इस प्रवृत्ति से आर्थिक विकास को नुकसान पहुंचेगा और बड़ी संख्या में वृद्ध होने वाली बड़ी आबादी का भरण-पोषण मुश्किल हो जाएगा, स्वास्थ्य सेवाओं पर बोझ पड़ेगा।

शिशु जन्मदर का कम होना केवल अमरीका की ही समस्या नहीं है। पिछली आधी सदी से ज्यादा समय में वैश्विक प्रजनन दर आधी हो गई है। विशेषकर उच्च आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में जहां आबादी पहले से ही कम हो रही है या जल्द ही कम होने की राह पर है, परिवार को कम रखने की सोच बढ़ी हुई है।

इसका सकारात्मक पहलू भी है। प्रजनन दर में गिरावट का सीधा अर्थ इस मजबूत तथ्य से भी जुड़ा है कि पिछली आधी सदी में कॉलेज जाने और सफल करियर शुरू करने वाली महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। उदाहरण के तौर पर, नोबेल विजेता क्लाउडिया गोल्डिन और लॉरेंस एफ. काट्ज के एक शोध के अनुसार, 1970 के दशक में जब जन्म दर को नियंत्रित करने वाली गोलियां व्यापक रूप से सुलभ हो गईं तो इससे स्वतः ही ज्यादा महिलाओं में प्रोफेशनल शिक्षा हासिल करने ख्वाहिश बढ़ी। इसका परिणाम यह रहा कि 1970 के दशक में कानून के क्षेत्र में महिला वकील और महिला न्यायाधीश का जो प्रतिशत पांच था, वह 1980 में बढ़कर 13 फीसदी से ज्यादा हो गया। महिला चिकित्सकों का प्रतिशत भी 9 से बढ़कर 14 हो गया। और यह रुझान लगातार जारी है। कानून और चिकित्सीय पेशे में महिलाओं का प्रतिशत बढ़कर क्रमशः 39 और 36 हो गया है। पढ़ी-लिखी महिलाओं में प्रजनन दर में तेजी से गिरावट आ रही है। दूसरे शब्दों में कहें तो उनमें बच्चे पैदा करने में खास दिलचस्पी नहीं होती है।

अर्थशास्त्री मेलिसा एस किर्नी और उनके सहयोगी कहते हैं कि यह गिरावट विशेषकर सर्वाधिक शिक्षित और सबसे कम शिक्षित महिलाओं के मामले में देखी गई है। आर्थिक महामंदी ने भी कम शिक्षित महिलाओं पर असर छोड़ा। वे मजबूती से यह तर्क देने को प्रेरित हुईं कि वित्तीय असुरक्षा के चलते उन्हें संतान को जन्म देने में देरी करनी पड़ी। कई ऐसी महिलाएं भी हैं जो संतान को जन्म देना चाहती हैं, लेकिन शारीरिक दिक्कत के कारण संतान को जन्म देने में समर्थ नहीं हो पा रहीं। वे अपना उपचार भी नहीं करवा पा रहीं, क्योंकि इस तरह के इलाज में काफी अधिक खर्च आता है। इतना खर्च उनकी पहुंच से बाहर है। उच्च शिक्षित प्रोफेशनल की मजबूरियों को भी समझना होगा। ऐसे लोगों को करियर के शुरुआती चरण में अधिक समय और निवेश की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए लोग कॉलेज से ग्रेजुएशन करने के बाद सीधे लॉ स्कूल में जाते हैं। लॉ स्कूल में प्रवेश के लिए इच्छुक छात्रों की उम्र समय के साथ बढ़ रही है। कुछ सालों तक काम करने या फैलोशिप के बाद युवा अब 25 या अधिक उम्र में कानून के पेशे में जा रहे हैं। इसी तरह, पीएचडी में पहले की तुलना में ज्यादा समय लग रहा है।

निःसंतान युवाओं में से करीब पचास प्रतिशत का कहना है कि वे भविष्य में संतान चाहते हैं। दिक्कत यह है कि 30 की उम्र पार कर चुके युवा अब भी अपने करियर के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस हालत में बच्चे पैदा करने की उम्र बढ़ रही है। ऐसे नीतिगत समाधान पेश करना बड़ी चुनौती लिए हैं, जो जनसांख्यिकीय संकट का समाधान कर सकें। बहुत से देश ज्यादा बच्चों को जन्म देने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित कर रहे हैं, पर उनके उपाय काम नहीं आ पा रहे हैं। डेनमार्क में विज्ञापन अभियानों के जरिए ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए प्रेरित किया गया है। इसमें नए माता-पिता बनने के लिए वन-टाइम कैश बोनस, पेरेंटल लीव आदि शामिल हैं। इसमें कुछ नीतियां अविश्वसनीय तरीके से सार्थक हैं और परिवारों तथा बच्चों के लिए लाभकारी हैं। यह शर्मनाक है कि अमरीका दुनिया के केवल उन छह देशों में एक है जहां सवैतनिक फैमिली अवकाश की गारंटी देने वाला कोई संघीय कानून नहीं है। घटती प्रजनन दर की समस्या से निपटने के लिए अधिक रचनात्मक चिंतन की जरूरत होगी। कार्यबल में महिलाओं के आर्थिक लाभ को कैसे संरक्षित किया जाए, इस पर भी विचार करना होगा। साथ ही यदि वे संतान को जन्म देना चाहती हैं तो परिवार शुरू करने के लिए उनको कुछ सुविधाएं भी दी जाएं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि निःसंतान युवा महिलाओं की तुलना में युवा पुरुषों में बच्चे की चाहत ज्यादा है। असल में बच्चे को जन्म देने और पालन-पोषण में महिलाओं का ज्यादा समय और शक्ति खर्च होती है। करियर में भी बाधा पैदा होती है। यही वजह है कि महिलाओं में देरी से संतान पैदा करने या नहीं करने की मानसिकता ज्यादा गहरी है।

महामारी ने बहुत नुकसान पहुंचाया, बड़ी संख्या में लोग काल-कवलित हो गए। लोग अब भी इसका दुष्प्रभाव झेल रहे हैं। लेकिन, एक अच्छी बात यह रही कि इसने घर से काम करने या काम के घंटों के लिए अधिक लचीलापन दिया जो माता-पिता बनने के इच्छुक लोगों के अनुकूल रहा। वास्तव में, सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली चाइल्ड केयर व्यवस्था बनाने के लिए नीतियां भी आवश्यक हैं। नए माता-पिता के लिए एकमुश्त बोनस की तुलना में यह कहीं अधिक सार्थकता वाला हो सकेगा। नियमित चिकित्सा जांच और सुविधाएं भी व्यापक रूप से किफायती दर पर सुलभ कराई जानी चाहिए।

नताशा सरीन
येल लॉ स्कूल में कानून की एसोसिएट प्रोफेसर हैं
द वाशिंगटन पोस्ट से विशेष अनुबंध के तहत

बच्चे को जन्म देने और पालन-पोषण में महिलाओं का ज्यादा समय और शक्ति खर्च होती है। यही वजह है कि महिलाओं में देरी से संतान पैदा करने या नहीं करने की मानसिकता ज्यादा गहरी है।

आपकी बात

कानून में बदलाव जरूरी

दलबदल करने वाले नेताओं को टिकट नहीं मिलना चाहिए। इसके लिए दल-बदल विरोधी कानून में कुछ बदलाव होना चाहिए। जैसे कोई सांसद या विधायक दल बदलता है तो उसे वह सीट तो गंवानी पड़ेगी ही, साथ ही भविष्य में कई सालों तक वह किसी भी पार्टी से या निर्दलीय चुनाव नहीं लड़ सकेगा। जुर्माना भी लगाया जाए।

-कैलाश कुमार, दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़

चुनाव और धन का प्रभाव

धन से मीडिया को प्रभावित किया जा सकता है, धन से जन समूह को जन सैलाब में बदला जा सकता है। धन से खुश करके लोगों को खास पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष में किया जा सकता है। अधिक धन खर्च करने से चुनाव का प्रबंधन सही किया जा सकता है और चुनाव का प्रबंधन सही होते ही चुनाव जीता जा सकता है

-माधव सिंह, श्रीमाधोपुर

स्वार्थ के लिए होता है दलबदल

दल बदल करने वाले नेताओं को नैतिक दृष्टि से टिकट नहीं मिलना चाहिए। इससे मूल पार्टी के समर्पित नेताओं और कार्यकर्ताओं में असंतोष की भावना जागृत हो सकती है। मुश्किल यह है कि पद, प्रतिष्ठा, पैसे एवं राजनीतिक करियर की सलामती के लालच में ही नेता दल बदलते हैं। प्रभावशाली नेता टिकट हथिया लेते हैं।

-ललित महालकरी, इंदौर

गति सीमा का रहे ध्यान

हादसों पर अंकुश के लिए यह सुनिश्चित करना अवश्यक है कि वाहन चालक निर्धारित गति से ही वाहन चलाएं। साथ ही ओवरलोड वाहनों को रोका जाए और चालक के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। यातायात नियमों का पालन करना आवश्यक है। पशुओं को सड़क पर आने से रोकने की खास व्यवस्था भी जरूरी है।

-परिका रायजादा, जोधपुर

राजनीति बन चुकी व्यवसाय

सभी दलों को चुनाव लड़ने के लिए धन की जरूरत होती है। पिछले कुछ वर्षों में चुनावों में धन का प्रभाव बहुत बढ़ गया है। चुनाव जीतने के लिए बहुत धन खर्च करते हैं। इसलिए राजनीति धीरे-धीरे सेवा से व्यवसाय बनी है। संपत्ति बचाने और बनाने के लिए राजनीति का सहारा लिया जाता है।

-अमीषा स्वामी, नीम का थाना

कल्पमेधा

मेरे दोस्त किसी चीज को कुरूप न कहो, सिवाय उस भय के, जिसकी मारी कोई आत्मा स्वयं अपनी स्मृतियों से डरने लगे।

– खलील जिब्रान

नशे का कारोबार

पंजाब में नशे के कारोबार पर नकेल कसना लंबे समय से चुनौती बना हुआ है। पिछले विधानसभा चुनाव में यह सबसे बड़ा मुद्दा था। आम आदमी पार्टी ने वादा किया था कि अगर वह सरकार में आएगी, तो इस धंधे पर पूरी तरह रोक लगा देगी। मगर अभी तक इस दिशा में कोई कामयाबी नजर नहीं आ रही। ताजा मामला यह है कि मुख्यमंत्री के जिले संगरूर में जहरीली शराब पीने से इक्कीस लोगों की मौत हो चुकी है। कई लोगों का इलाज चल रहा है। इसे लेकर यह प्रश्न लोगों की जेहन में अटक गया है कि जब मुख्यमंत्री के जिले में जहरीली शराब के धंधे और मादक पदार्थों की पहुंच पर रोक नहीं लग पाई है, तो बाकी जगहों पर क्या स्थिति होगी। पंजाब में काफी समय से नशे की वजह से हो रही नौजवानों की मौतों को लेकर चिंता जताई जाती रही है। सीमावर्ती राज्य होने के कारण वहां पाकिस्तान के रास्ते मादक पदार्थों की पहुंच पर रोक लगाना भी कठिन बना हुआ है। ऐसे में अगर जहरीली शराब से मौतों का नया मामला आया है, तो उसे लेकर स्वाभाविक ही नए सवाल उठने शुरू हो गए हैं। हालांकि प्रशासन ने छह लोगों को गिरफ्तार कर इस मामले में कार्रवाई शुरू कर दी है।

नकली शराब का कारोबार कमोबेश हर राज्य की समस्या है। चोरी-छिपे शराब बनाने और बेचने वाले हर कहीं मौजूद हैं, मगर जो सरकारें सचमुच इस समस्या से पार पाने को लेकर संजीदा होती हैं, वे ऐसे कारोबारियों पर नकेल कसने में कामयाब ही देखी जाती हैं। पंजाब की तुलना दूसरे राज्यों से फिलहाल इसलिए नहीं की जा सकती, क्योंकि वहां नशे पर काबू पाना सरकार की प्राथमिकता है। वहां नशे के कारोबार के फलने-फूलने की वजहें भी अब काफी हद तक साफ हैं। उसमें अनेक रसूखदार लोगों और बड़े अधिकारियों की गिरफ्तारियां भी हो चुकी हैं। इस तरह माना जा सकता है कि वहां का प्रशासन इस समस्या को लेकर सतर्क है। फिर यह समझना मुश्किल है कि संगरूर में किस तरह नकली शराब बनाई जा रही थी और प्रशासन को इसकी भनक तब मिल सकी, जब जहरीली शराब पीकर लोग मरने लगे। इस तरह के धंधे स्थानीय लोगों की जानकारी से बाहर नहीं होते। फिर स्थानीय लोगों से पुलिस का तालमेल ठीक हो, तो उसे भी इस तरह के धंधे की जानकारी मिल ही जाती है। मगर नकली शराब के धंधे में अक्सर देखा जाता है कि इसे चलाने वालों की पुलिस से सांठगांठ होती है। संगरूर में भी ऐसी किसी गठजोड़ से इनकार नहीं किया जा सकता।

नकली शराब पीकर मरने वाले ज्यादातर गरीब लोग होते हैं, जो कम पैसे में नशे के लिए ऐसी शराब खरीदते हैं। इनमें से ज्यादातर अपने परिवार के लिए रोटी कमाने वाले होते हैं। उनके मरने से पूरे परिवार के सामने संकट खड़ा हो जाता है। उनका संकट कुछ मुआवजा देकर दूर नहीं किया जा सकता। इसलिए हमेशा से नकली शराब बनाने वालों के खिलाफ कठोर कदम उठाने की सिफारिश की जाती रही है। मगर सरकारों और प्रशासन की लापरवाही का नतीजा यह निकलता है कि हर घटना के बाद कुछ लोगों को गिरफ्तार तो कर लिया जाता है, पर उन्हें ऐसी कोई सजा नहीं मिल पाती, जो दूसरों के लिए नजीर बने। इसलिए भी जहरीली शराब के कारोबारियों पर शिकंजा कसना मुश्किल बना हुआ है। पंजाब सरकार इस सच्चाई से अनजान नहीं है।

आतंक का दायरा

मास्को में हुए आतंकी हमले से एक बार फिर यही रेखांकित हुआ है कि तमाम दावों और उपायों के बावजूद आतंकवाद दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती बना हुआ है। दरअसल, आतंकियों ने रूस की राजधानी में हमला कर अपनी मौजूदगी जाहिर की है। गौरतलब है कि शुक्रवार रात मास्को के क्राकस सिटी हाल में एक समारोह की शुरुआत के ठीक पहले कुछ आतंकियों ने अंधाधुंध गोलीबारी की, जिसमें कम से कम एक सौ पंद्रह लोगों की जान चली गई और भारी संख्या में लोग घायल हो गए। मरने वालों में कई बच्चे भी हैं। अभी यूक्रेन और रूस के बीच पिछले करीब दो वर्ष से युद्ध चल रहा है, इसलिए एक स्वाभाविक आशंका है कि यह हमला इसी की कड़ी हो सकता है। मगर यूक्रेन ने इस हमले में अपना हाथ होने से इनकार किया, वहीं खबरों के मुताबिक वैश्विक स्तर पर एक खौफनाक आतंकी संगठन माने जाने वाले इस्लामिक स्टेट ने इस गोलीबारी की जिम्मेदारी ली। अब आगे की व्यापक पड़ताल के बाद ही पता लगाया जा सकेगा कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है और उसका मकसद क्या था।

हैरानी है कि रूस के जिन इलाकों को सबसे सुरक्षित माना जाता रहा है, वहां भी आतंकियों ने बर्बर हमला करके एक तरह से बड़ी चुनौती पेश की है। इस संदर्भ में अमेरिका का कहना है कि उसने रूस में ऐसे हमले की आशंका जताई थी, लेकिन लगता है कि रूस ने उस पर गौर नहीं किया। पिछले कुछ दशकों में दुनिया ने जिस तरह का आतंकवाद देखा है, उसके मद्देनजर अगर कहीं से केवल आशंका ही जाहिर की जाती या खुफिया सूचना मिलती है तो उसके बाद सावधानी बरतने की जरूरत है, ताकि शायद किसी आतंकी हमले को रोका जा सके। आतंकवादी संगठनों की कार्यशैली से दुनिया परिचित है कि उनका मकसद सिर्फ मानवता के विरुद्ध आतंक फैलाना है, भले इसके लिए अनगिनत निर्दोष लोगों, यहां तक कि मासूम बच्चों का भी कत्लेआम करना पड़े। असली चुनौती सरकारों के लिए है कि वे तमाम संसाधनों और सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद ऐसे आतंकी हमलों को रोक पाने में कैसे चूक जाती हैं। आतंकवाद को खत्म करने के लिए वैश्विक स्तर पर ठोस और साझा प्रयास की जरूरत है।

मच्छरजनित बीमारियों पर नकेल

जलवायु परिवर्तन की वजह से मच्छरों के लिए अनुकूल वातावरण मिल रहा है, जिससे उनके प्रसार में वृद्धि हो रही है।

रंजना मिश्रा

चिकनगुनिया के लिए अब तक कोई प्रभावशाली उपचार या टीका नहीं था। हालांकि, मच्छरों के काटने से बचाव के उपाय करके चिकनगुनिया के जोखिम को कम किया जाता रहा है। यह तेजी से फैलने वाली बीमारी है और अब तक दुनिया भर के सौ से अधिक देशों में फैल चुकी है। पिछले पंद्रह वर्षों में चिकनगुनिया के मामलों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। 2008 से अब तक चिकनगुनिया के कम से कम पचास लाख मामले सामने आए हैं। जलवायु परिवर्तन की वजह से मच्छरों के लिए अनुकूल वातावरण मिल रहा है, जिससे उनके प्रसार में वृद्धि हो रही है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय यात्रा में बढ़ोतरी होने से चिकनगुनिया के वायरस के एक देश से दूसरे देश में पहुंचने का खतरा भी बढ़ गया है। यह चिकित्सकों के लिए गंभीर चिंता का विषय बनता जा रहा है।

चिकनगुनिया, डेंगू और जीका विषाणु एडीज मच्छरों के काटने से फैलते हैं। तीनों बीमारियों के लक्षण इतने समान होते हैं कि डाक्टरों के लिए इनमें अंतर करना मुश्किल हो जाता है। इस वजह से चिकनगुनिया का गलत निदान भी हो सकता है। इसके कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख कारण हैं- रोगी के लक्षणों का सही ढंग से वर्णन न करना, डाक्टर द्वारा सही परीक्षण न करना, रोगी के यात्रा इतिहास या अन्य जोखिम कारकों की अनदेखी करना। चिकनगुनिया का गलत निदान होने से मरीजों को सही उपचार नहीं मिल पाता।

चिकनगुनिया का प्रसार रोकने के लिए मच्छरों के काटने से बचाव के उपायों के साथ-साथ इसका टीका यानी वैक्सीन विकसित करना भी अत्यंत आवश्यक माना जाता रहा है। इसी क्रम में 9 नवंबर, 2023 को अमेरिका के खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) ने चिकनगुनिया के लिए दुनिया की पहले टीके को मंजूरी दे दी। यह टीका अठारह वर्ष और उससे अधिक उम्र के लोगों में चिकनगुनिया के खिलाफ 98 फीसद प्रभावी है। इसका नाम है, 'इक्सचिक'। यह एक जीवित, कमजोर चिकनगुनिया विषाणु से बना है और इसकी एकल खुराक को इंजेक्शन के माध्यम से मांसपेशियों में दिया जाएगा। इक्सचिक को अठारह वर्ष और उससे अधिक उम्र के लोगों के लिए अनुमोदित किया गया है। इसे त्वरित प्रभाव से अनुमोदित किया गया। त्वरित अनुमोदन का उपयोग ऐसी दवाओं या टीकों के लिए किया जाता है, जो गंभीर बीमारियों के इलाज या रोकथाम के लिए आवश्यक हैं और जिनके बारे में पर्याप्त सबूत हैं कि वे प्रभावी और सुरक्षित हैं।

चिकनगुनिया पर काबू पाने के लिए यह टीका एक महत्त्वपूर्ण खोज है। इससे चिकनगुनिया के प्रसार को नियंत्रित करने तथा उससे पैदा होने वाली जटिलताओं को रोकने में मदद मिल सकती है। हालांकि इस टीके को अब भी बड़े पैमाने पर उपयोग के लिए अनुमोदित नहीं किया गया है, पर आशा है कि यह जल्दी ही उपलब्ध हो जाएगी।

इक्सचिक टीके की सुरक्षा का मूल्यांकन करने के लिए उत्तरी अमेरिका में दो नैदानिक अध्ययन किए गए। ये अध्ययन साढ़े तीन हजार और एक हजार लोगों के दो समूहों पर किए गए। एक अध्ययन में

अठारह वर्ष और उससे अधिक उम्र के लगभग साढ़े तीन हजार प्रतिभागियों को इस टीके की खुराक मिली थी, जबकि अन्य अध्ययन में लगभग एक हजार प्रतिभागियों को 'प्लेसिबो' दिया गया था। प्लेसिबो एक ऐसा उपचार है, जो वास्तव में कोई उपचार नहीं है। यह एक खाली कैप्सूल, इंजेक्शन या एक गोली हो सकती है। इसमें कोई सक्रिय दवा नहीं होती। प्लेसिबो का इस्तेमाल अक्सर दवाओं या उपचारों की प्रभावशीलता का परीक्षण करने के लिए किया जाता है। प्लेसिबो का मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है, जिसे प्लेसिबो प्रभाव कहा जाता है। इसका अर्थ है कि जब लोग सोचते हैं कि उन्हें एक प्रभावी उपचार मिल रहा है तो वे वास्तव में बेहतर महसूस करने लगते हैं।

> चिकनगुनिया, डेंगू और जीका विषाणु एडीज मच्छरों के काटने से फैलते हैं। तीनों बीमारियों के लक्षण इतने समान होते हैं कि डाक्टरों के लिए इनमें अंतर करना मुश्किल हो जाता है। इस वजह से चिकनगुनिया का गलत निदान भी हो सकता है। इसके कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख कारण हैं- रोगी के लक्षणों का सही ढंग से वर्णन न करना, डाक्टर द्वारा सही परीक्षण न करना, रोगी के यात्रा इतिहास या अन्य जोखिम कारकों की अनदेखी करना।

प्लेसिबो प्रभाव का उपयोग कई तरह से किया जा सकता है। इसे दवाओं या उपचारों की प्रभावशीलता का परीक्षण करने, दर्द या अन्य लक्षणों को कम करने के लिए भी उपयोग किया जा सकता है। जब किसी भी टीके का नैदानिक अध्ययन किया जाता है तो समूह के कुछ लोगों पर वास्तविक उपचार प्रक्रिया को अपनाया जाता है और कुछ लोगों को वास्तविक उपचार की तरह दिखने वाला नकली उपचार दिया जाता है। दरअसल, उस व्यक्ति पर किए गए उपचार के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समझने तथा किसी नई दवा या टीके के वास्तविक प्रभाव को जांचने के लिए ऐसे नकली उपचार का सहारा लिया जाता है, जिसे प्लेसिबो कहा जाता है। इस अध्ययन में जिन प्रतिभागियों को इक्सचिक का टीका दिया गया था, उनमें सिरदर्द, थकान, मांसपेशियों में दर्द, जोड़ों में दर्द, बुखार और मतली जैसे सामान्य दुष्प्रभाव देखे गए। इसके अलावा लगभग 1.6 फीसद टीका लेने वालों में चिकनगुनिया जैसी गंभीर प्रतिकूल प्रतिक्रियाएं भी देखी गईं। कुछ लोगों में ये प्रतिकूल प्रतिक्रियाएं कम से कम तीस दिनों तक रहीं।

इस टीके की प्रभावशीलता की जांच करने के लिए भी अमेरिका में एक नैदानिक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में टीका लेने वाले 266 प्रतिभागियों की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया की तुलना 96 ऐसे प्रतिभागियों की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया से की गई, जिन्हें प्लेसिबो दिया गया था। इस अध्ययन के प्रतिभागियों में प्रतिपिंड (एंटीबाडी) के स्तर का मूल्यांकन गैर-मानव 'प्राइमेट्स' में सुरक्षात्मक दिखाए गए स्तर पर आधारित था। इन गैर-मानव प्राइमेट्स को टीका लगाए गए लोगों से रक्त प्रदान किया गया था। इस अध्ययन में लगभग सभी टीका प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों ने इस प्रतिपिंड (एंटीबाडी) स्तर को हासिल किया था। प्रतिपिंड (एंटीबाडी) अंग्रेजी वाई आकार के अणुओं का एक प्रकार का प्रोटीन होता है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा बनाया जाता है। ये शरीर को हानिकारक पदार्थों जैसे बैक्टीरिया और विषाणुओं से बचाने में मदद करते हैं। टीका शरीर में एंटीबाडी उत्पन्न करने में बहुत प्रभावी होता है।

कुछ टीके जीवित, लेकिन निष्क्रिय रोगजनक से बने होते हैं। ये रोगजनक शरीर में प्रवेश करते और प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय करते हैं। इसके अलावा कुछ टीके रोगजनकों के हिस्सों से बने होते हैं। ये भी शरीर में प्रवेश करके प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय करते हैं। इस प्रकार टीका संक्रमण से बचाने में मदद और गंभीर बीमारी या मृत्यु के जोखिम को कम कर सकता है।

इक्सचिक टीके पर अमेरिका में किए गए इन नैदानिक अध्ययनों का डेटा मेडिकल जर्नल 'लैंसेट' में प्रकाशित किया गया है। चिकनगुनिया की रोकथाम में यह टीका एक महत्त्वपूर्ण प्रगति है। उम्मीद है कि इससे उन देशों को बहुत राहत मिलेगी, जहां चिकनगुनिया बहुत तेजी से फैल रहा है। ब्राजील, पैराग्वे, पश्चिमी अफ्रीका के कुछ हिस्सों और भारत में चिकनगुनिया का अधिक प्रकोप है। 'वेक्टर' जनित बीमारियों के राष्ट्रीय डेटा के अनुसार, भारत में सितंबर 2023 तक चिकनगुनिया के 93,455 संदिग्ध मामले सामने आए। ऐसे टीके की जरूरत महसूस की जा रही थी, इसलिए भारत जैसे देशों के संदर्भ में इस टीके का विशेष महत्त्व है।

अंतर्मन में रंगोत्सव

मयंक मुरारी

हमारी चेतना में अहर्निश होली चल रही है। रंगों का उत्सव जारी है। सांसारिक रूप से होली का उत्सव अंतर्मन पर लगातार चलने वाली तन, मन और चिंतन के सरस की ओर इंगित करता है। यह प्रेम के आरोहण और उसके प्रकटीकरण का पर्व है। हमारी चेतना में प्रवाहित विविध रंगों का उत्सव है। इसमें रंग ही रंग है। यह अंतर्मन में रिसता रहता है और तन के कोर-कोर को भिगोता रहता है। होली का तात्पर्य है- रस के साथ रंग। अस्तित्व में सदैव उत्सव है। इस विराट में प्रतिदिन होली मनाई जाती है। प्रकृति में, आकाश में, सूर्य की किरणों में रंगों का उत्सव सुबह से शाम तक चलता रहता है। रोजाना ही प्रकृति में रंग छिटकते हैं। प्रतिदिन बहुरंगी फूल खिलते हैं। हर नए कोंपल और झरते पत्ते के साथ रंगों का रस हमारे मन पर चढ़ता है। रंगों का यह प्रवाह ही होली है। हम मानव के लिए साल में एक होली, एक दिवाली है। मगर प्रकृति सदैव उत्सव मनाती है। इस विराट में जंगल, पौधे, पशु, नदियों का कोई अलग से होली का दिन नहीं है। उनका पूरा जीवन ही होली है, हर दिन उत्सव है। प्रकृति स्वतंत्र है, इस विराट में मानव को छोड़कर सब खुद स्वावलंबी है, इसलिए उनके जीवन में सदैव ऊर्जा है। ऊर्जा से परिपूर्ण अस्तित्व को अलग से उत्सव की जरूरत नहीं है।

स्वाभाविक मानव जीवन ही फागुन है। जीवन में संगीत का संचार हो, गीत की धुन बजे और नृत्य का भाव हो, इसलिए उत्सव है। उत्सव हमारे जीवन में पुलक लाने के लिए है। इससे जीवन प्रसन्न हो, मुदित बने और थिरकन आए। होली केवल बाहर की नहीं, अंदर की भी होली है। जिस प्रकार मन के सभी विकारों और आसक्तियों को जलाना ही होलिका दहन है, उसी प्रकार चेतना को रस रंग में सराबोर करना ही होली है। कृष्ण के साथ वृंदावन में होली का महारास है तो राम के साथ मर्यादा का आरोहण है। यह भी चेतना को शाश्वत रंगीन बनाने की यात्रा है। फिर महादेव के साथ अनंत होली है। शिव होली है। होली में शिव ही रंग हैं। यानी जो शुभ है, श्रेष्ठ है, उससे अपनी चेतना का आरोहण कराना। अंतर्मन को रंगीन करना। इसमें शांति का सफेद, प्रेम का लाल, करुणा का नारंगी और उल्लास का हरा समावेशित है।

प्रेम के रंग से परम की प्राप्ति होती है, तो होली के साथ सब रंग का संयोजन निश्चित ही व्यक्ति को प्रेम के विविध सोपान तक पहुंचाता है। होली के रंग उत्सव रचते हैं। दिल में उमंग बढ़ाते हैं। कुंठा से मुक्त करते हैं। भेद मिटाकर सभी को अभेद रूप से अभिन्न कर देते हैं। भारतीय संस्कृति में मुक्ति के लिए मन, वचन, कर्म और ध्यान को माध्यम बताया गया है। होली ही ऐसा उत्सव है, जिसमें प्रेम रस में मन सराबोर रहता है। इसकी सप्तरंगी छटा में विचारा निमग्न होता है और उसके सांस्कृतिक और सामाजिक धारा के साथ कर्मयोग की साधना चलती है। होली जीवन कर्म है, तो उसकी अंतर्यात्रा से मन और वचन की वर्जनाओं को नया अर्थ देने का माध्यम है। होली देह को नहीं, बल्कि अंतस को भिगोता है। देह पर रंग की बरसात को इंद्रियां अनुभव करती हैं और मन तथा वचन पर होली का सुवास हमारी आत्मा का आस्वाद बनता है। सच है कि कुछ अवांछित गतिविधियों की वजह से होली जैसे त्योहार को फीका करने की कोशिश की जाती है। जिन्हें असुविधा है, उन्हें दुख पहुंचा कर तो खुशी के रंग नहीं चुने जा सकते। हां, उनकी खुशियों के साथ खड़े होकर खुशी के नए रंगों की खोज कर सकते हैं।

ईश्वर की ओर गमन का सरल मार्ग प्रेम और भक्ति का मार्ग है। इसमें होली का रंग अद्भुत है। इसमें प्रेम है, उमंग है और भक्ति भी है। होली की अपनी मस्ती है। इसका अपना ठाठ है। इसका अपना फाग है। सब ओर रस, रंग और लास्य का महा उत्सव है। सूरदास की पंक्तियां हैं- 'हरि संग खेलत हैं सब फाग। इहिं मिस करति प्रगट गोपी, उर अंतर को अनुराग।'

यह धरती का उत्सव है और धरती अपने सप्तरंगी आभा और छंटा से पूरी वसुधा को रंगीन बनाए हुए है। होली गोपियों के वृंदावन से प्रेमरस के साथ चलती है और अवध के लोक में चिंतन रस को पसारती है। फिर काशी में गंगा के किनारे मसाने पर पूरे अंतर्मन को रंगीन कर देती है। यह संसार रंग से परिपूर्ण है, इसलिए जीवन को भी रंगों से भरा होना चाहिए। हरेक व्यक्ति भी रंगों का समुच्चय है। हमारी चेतना का स्वभाव ही उत्सव का है। उत्सव के साथ रंग को जोड़ दिया जाए, तो वह पूर्ण हो जाता है। वसंत का मौसम रंगों के उत्सव का है। इसमें रंग पंचमी है, रंग एकादशी है, तो वसंत पंचमी और होली है। प्रकृति और मानव मन में फगुनाहट का रस और रंग समाया रहता है। एक तरफ प्रकृति की सप्तरंगी छटा और दूसरी आर मानवीय जीवन में भौतिक सुख का बहुरंग समाज में उल्लास बिखेरता है। फागुन और चैत को वसंत का माह माना जाता है। इस प्रकार हिंदू कैलेंडर में साल का अंत और नए साल की शुरुआत वसंत से होती है। यह माह सात्विक शक्तियों की विजय का प्रतीक है। प्रह्लाद का होलिका पर विजय इसका सुंदर उदाहरण है। होली में कई रंग सिमटे हैं। यह राधा और कृष्ण के मिलन, बाबा विश्वनाथ और पार्वती के अनन्य प्रेम और समूचे समाज की खुशी और सद्भाव का उत्सव है।

दुनिया मेरे आगे

> हमारी चेतना का स्वभाव ही उत्सव का है। उत्सव के साथ रंग को जोड़ दिया जाए, तो वह पूर्ण हो जाता है। वसंत का मौसम रंगों के उत्सव का है। इसमें रंग पंचमी है, रंग एकादशी है, तो वसंत पंचमी और होली है। प्रकृति और मानव मन में फगुनाहट का रस और रंग समाया रहता है।

जल से जीवन

जैसे ही गर्मी का मौसम शुरू होता है, देश के अलग-अलग शहरों से पानी की कमी की खबरें आने लगती हैं। अभी गर्मी की ठीक से शुरुआत भी नहीं हुई है कि कर्नाटक की राजधानी बंगलुरु में पानी की वजह से बहुत ही चिंताजनक हालात हो गए। इस तरह की खबरें वहां से आ रही हैं। पानी राजनीतिक दलों के लिए कोई मुद्दा नहीं है! यह आम आदमी को सोचना होगा कि हम आने वाली नस्लों के लिए पानी छोड़कर जाना चाहते हैं या नहीं। वैसे भी पानी का कोई विकल्प नहीं है। पानी की एक-एक बूंद को बचाना जरूरी है। हमें ही यह सोचना है कि हम पानी कैसे बचा सकते हैं। कारों की सफाई के लिए देश भर में लाखों लीटर पानी रोज सड़कों पर बहा दिया जाता है। सरकारें पानी मुफ्त में देने के बजाय आम लोगों को पानी बचाने के लिए प्रोत्साहित करें तो इसके अच्छे परिणाम मिलेंगे। मुफ्त तो कुछ और भी दिया जा सकता है। आम आदमी अपने बच्चों के सुरक्षित भविष्य के लिए गंभीरता से विचार करे कि पानी कैसे बचाया जाए। तभी इस धरती को और इस धरती पर रहने वाले जीवों को बचाया जा सकेगा। एक कहावत भी है- जल है तो कल है।

– चरनजीत अरोड़ा, नरेला, दिल्ली

इच्छाशक्ति की जरूरत

भिक्षावृत्ति एक जटिल समस्या है जिसके लिए सरकार और समाज को मिलकर काम करना होगा, एक समग्र योजना बनानी होगी। मगर सवाल है कि ईमानदार इच्छाशक्ति के बिना कैसे इस समस्या से पाया जाएगा। एक जानकारी के मुताबिक, भारत में चार लाख तेरह हजार छह सौ सत्तर भिखारी हैं। जिस देश का समाज हर दिन सैकड़ों लंगर-भंडारे लगाकर लाखों लोगों को भोजन करवाता हो, विभिन्न अवसरों पर अनेक वस्तुएं बांटता रहता हो, दान करने के बहाने खोजता रहता हो, जेब में छोटे सिक्के रखकर घर से निकलता हो, भिखारियों में बांटने के लिए और यह सब करके गौरवान्वित होता हो, पुण्य कमाता हो, वह समाज भिक्षावृत्ति से मुक्ति के संकल्प के बारे में क्या सोचेगा? जिस दौर में अस्सी करोड़ लोगों को मुफ्त राशन वितरित किए जाने का दावा हो, जनतंत्र में वोट की राजनीति के अंतर्गत कपड़े, साइकिल, मोबाइल, लैपटाप आदि मुफ्त बांटे जाते हों, सक्षम बनाने की नीयत से नहीं, बल्कि आश्रित बनाने की मंशा के साथ, वैसे में किस संकल्प की आशा की जा सकती है?

– अतुल कुमार प्रभाकर, नोएडा

स्वच्छता का चुनाव

'पारदर्शिता का तकाजा' (संपादकीय, 15 मार्च) पढ़ा। लोकतंत्र की मजबूती के लिए चुनाव आयोग का निष्पक्ष तथा पारदर्शी होना नितांत आवश्यक है। चुनाव आयोग तथा चुनाव प्रक्रिया पर देश भर में उठ रहे सवालों का जवाब देना चुनाव आयोग की जिम्मेवारी बनती है। लोगों में विश्वास तथा भरोसा कायम करने के लिए आयोग को उचित निर्णय लेने होंगे। अगर इसके लिए उसे मतपत्र द्वारा भी चुनाव कराने पड़े तो इससे नहीं हिचकना चाहिए। लोकतंत्र की बुनियादी मजबूती के लिए लोगों में व्याप्त भ्रांति को दूर करना होगा। माना कि मतपत्रों से चुनाव कराना धन तथा समय का अपव्यय व सुरक्षा के लिहाज से चुनौतीपूर्ण होगा, लेकिन यह असंभव नहीं। अतीत में चुनाव आयोग ने कई मौकों पर यह साबित किया है कि इस तरह से स्वच्छ और स्वतंत्र चुनाव कराए जा सकते हैं।

– हुकुम सिंह पंवार, इंदौर

पुतिन की राह

राजनीतिक वैज्ञानिकों अन्ना लुहरमन, मार्कस टैनेनबर्ग और स्टाफन लिंडबर्ग द्वारा विकसित विश्व वर्गीकरण प्रणाली के शासन और वी-डेम के डेटा का उपयोग करते हुए यह अनुमान लगाया गया है कि दो अरब तीस करोड़ लोग, यानी कि वैश्विक आबादी के कुल उनतीस फीसद लोग ही लोकतंत्रीय शासन प्रणाली के तहत आजादी भरा जीवन जी रहे हैं। शेष इकहत्तर फीसद आबादी इसके विपरीत या उस शासन के तहत रहते हैं, जिसे निरंकुश शासन माना जा सकता है। यानी एक प्रकार से एकतंत्रवादियों के रहमोकरम पर रहने वाले लोगों की संख्या पिछले तीन दशकों में अपने उच्चतम स्तर पर है। इस तरह के शासक हाल ही में रूस में हुए चुनाव के परिणाम से खुश हो गए होंगे, क्योंकि व्लादिमीर पुतिन ने लगातार पांचवी बार रूस की सत्ता अपने नाम कर ली।

– जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

नई दिल्ली

https://t.me/AllNewsPaperPdf

www.readwhere.com

चिंतन

होली के समरसता संदेश से सीखे देश की राजनीति

इस बार महापर्व होली इस समय है, जब देश भी लोकतंत्र का महापर्व मना रहा है। लोकसभा चुनाव का बिगुल बजा हुआ है, चुनाव प्रक्रिया जारी है, यूं तो इस बार लंबी प्रक्रिया है, लेकिन देश के दलों को, देश की राजनीति को और देश के नेताओं को रंगोत्सव होली के सदभाव, सौहार्द व भाईचारा संदेश पर अमल करने की सबसे अधिक जरूरत है। होली सदभाव व भाईचारे का त्योहार है, सामाजिक प्रेम, पारिवारिक प्रेम की अभिव्यक्ति का त्योहार है। हाल के दशक में भारतीय राजनीति में कटुता, वैमनष्यता और मनभेद जैसी बुराइयां बढ़ती गई है। न संसद में स्वस्थ बहस होती है, न विरोध की सीमा रही है, न नेताओं की भाषा की मर्यादा रही है, न राजनीतिज्ञों के बीच सदभाव व प्रेम रह गए हैं, सभी दल एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद के बजाय मनभेद पाले रहते हैं, अपने भाषणों में नेता अपने प्रतिद्वंद्वियों के लिए अशोभनीय भाषा का इस्तेमाल करते हैं। देश में राजनीतिक माहौल इतने खराब हो गए हैं कि इससे देश के सामाजिक माहौल बिगड़ने लगे हैं। राजनीतिक वैमनष्यता के चलते देश में सामाजिक असहिष्णुता बढ़ती गई है। देश में पहले से ही सामाजिक विसंगतियां हैं, जाति-उपजाति व धार्मिक खांचे में सामाज में विभाजन है, ऐसे में अगर राजनीतिक विभाजन भी बढ़ता जाएगा तो राष्ट्र की एकता, अखंडता, सामाजिक समरसता आदि खतरे में पड़ सकते हैं। होली जैसे त्योहार सभी नागरिकों को आपसी मतभेद मिटाकर प्रेम से जीने के सामाजिक संदेश देते हैं। संयोग की बात है कि अभी रमजान का पाक महीना भी चल रहा है, इस त्योहार का संदेश भी सामाजिक भाईचारा बढ़ाने का है। रमजान की समाप्ति पर देश में ईद मनाई जाएगी, उस दौरान भी देश में लोकसभा चुनाव जारी रहेगा। ऐसे में देश के नेताओं को होली व ईद से सामाजिक सौहार्द व भाईचारा सीखने की जरूरत है। अपनी संकुचित राजनीति के लिए अगर कोई नेता, या दल सामाजिक व धार्मिक विभाजन को बढ़ावा देता है, तो आवाम को ऐसे नेता, ऐसे दल का बहिष्कार करना चाहिए। लोकतंत्र के असली सूत्रधार नागरिक हैं, इसलिए नागरिकों में राष्ट्रीय मूल्यों, सामाजिक मूल्यों व सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति चेतना होनी चाहिए। नागरिकों में यह समझ होनी चाहिए कि नेता व दल अगर गलत बोल रहे हैं, गलत कर रहे हैं, तो ऐसों को किनारा करना जरूरी है। नागरिक अपने क्षेत्र, परिवार, समाज, देश आदि के प्रति जितना अधिक सचेत होंगे, गलत लोग लोकतांत्रिक सिस्टम से उतने बाहर होंगे। इसलिए होली का समाज को जोड़कर रखने का संदेश देश की राजनीतिक, दलों, नेताओं व नागरिकों, सबके लिए अनुकरणीय है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों को रंगों के त्योहार होली की शुभकामनाएं दी हैं, जिसमें उन्होंने कहा है कि स्नेह और सद्भाव के रंगों से सजा यह पारंपरिक पर्व सभी के जीवन में नई ऊर्जा और नया उत्साह लेकर आए। पीएम के संदेश व्यापक अर्थ में है, इस अर्थ के मर्म को सरकार को भी समझना चाहिए, सत्ता पक्ष को भी समझना चाहिए, विपक्ष को भी समझना चाहिए, देश की राजनीति को भी समझना चाहिए और सभी स्वायत्त निकायों को भी समझना चाहिए। आज देश में राजनीतिक सदभाव, राजनीतिक भाईचारा, राजनीतिक समरसता, स्वस्थ राजनीति की अधिक जरूरत है। होली के बहाने देश की राजनीति के रंग को सौहार्दपूर्ण बनाने की जरूरत है और सामाजिक व सांस्कृतिक समरसता बढ़ाने की आवश्यकता है।

होली के बहाने फूहड़ता न हो

होली पर्व
डॉ. विनोद कुमार यादव

होली पर्व का सीधा संबंध मनुष्य-जीवन की जीवंतता से है। होली एकमात्र ऐसा महोत्सव है, जिसमें परंपरागत रीति-रिवाज, पौराणिक मान्यताएं, फाग की मस्ती और होरी-गायन सब रंग मौजूद हैं। दुनिया के तमाम मुल्कों में जितने पर्व मनाए जाते हैं, उनमें होली जैसा निराला उत्सव ढूंढने से भी नहीं मिलता। ब्रजमंडल के बरसाना व नंदगांव को होली-सेलिब्रेशन का कुंभ माना जाता है। गिले-शिकवे त्यागकर निश्छल अपनापन और मैत्री को विस्तार देने वाला त्योहार और दूसरा नहीं है। हमें मिलकर गंभीरता से सोचना चाहिए कि होली के सुअवसर पर किसी न किसी बहाने फूहड़ता और अश्लीलता फैलाने वालों पर लगाम कैसे कसी जाए।

होली पर्व का सीधा संबंध मनुष्य-जीवन की जीवंतता से है। असलियत में होली के सेलिब्रेशन में इतनी समग्रता मौजूद है कि इसके रंगों में तमाम तरह के भेदभाव, पुरानी कटुता, वर्जनाएं व पूर्वाग्रह घुलकर मस्ती भरे मैत्री-अनुराग में तब्दील हो जाते हैं। होली के रंग शरीर के अलावा आत्मा को भी भिगोते हैं। होली एकमात्र ऐसा महोत्सव है, जिसमें परंपरागत रीति-रिवाज, पौराणिक मान्यताएं, फाग की मस्ती और होरी-गायन सब रंग मौजूद हैं। दुनिया के तमाम मुल्कों में जितने पर्व मनाए जाते हैं, उनमें होली जैसा निराला उत्सव ढूंढने से भी नहीं मिलता। दरअसल, राग-रंग, प्रेम और सौहार्द का यह पर्व वसंत ऋतु का संदेशवाहक भी है। वसंत ऋतु के फागुन मास में जब पूरा प्राकृतिक परिवेश नए सृजन से सज धजकर, रंग-बिरंगे फूलों की छटा बिखेरता हुआ मदमासी बयार से स्त्री-पुरुषों के चित्त को स्पर्श करता है तो यह एहसास होने लगता है कि होली के उत्सव का आगाज हो चुका है।

गौरतलब है कि ब्रजमंडल के बरसाना व नंदगांव को होली-सेलिब्रेशन का कुंभ माना जाता है। असल में कृष्ण का व्यक्तित्व बहुआयामी है। उनका पूरा जीवन संघर्षों से भरा पड़ा है, इसके बावजूद भी वह जिंदगी के हरेक पड़ाव का पूरा लुफ्त उठाते हैं, और पूरे फागुन महीने तक नंदगाव से बरसाना राधा व उसकी सखियों से हास-परिहास करने, रास-रंग खेलने व फागुनी मस्ती करने आते हैं। आज भी नंदगांव के पुरुष हुरियारे बनकर कृष्ण के प्रतिनिधि के तौर पर बरसाने की महिलाओं से पानी की बाल्टी में घुली हुई पीली मिट्टी से व लट्ठमार होली खेलने आते हैं, और तमाम तरह के जातिगत व लिंग आधारित भेदभावों को दरकिनार करते हुए होली के रस-रंग में डूबे रहते हैं, और खुशी-खुशी ब्रजनारियों की लाठियों के प्रहारों को सहते हुए यह लोकगीत गाते हैं- 'फाग खेलने बरसाने आए नटवर नंदकिशोर। छाय रही छवि घटा रंगीली, ढोल-मृदंग बजाए हैं बंशी की घनघोर। बरसाने की लट्ठमार होली का आयोजन एक तरह से पुरुष-प्रधान समाज में पुरुषों के वर्चस्व को तोड़ते हुए समाज में महिलाओं की मजबूत स्थिति का परिचायक है। दरअसल, कृष्ण पहले समाज-सुधारक हैं, जो इस उत्सव के आयोजन के बहाने नारी जाति को उन सामाजिक बंधनों से मुक्ति दिलाने का अवसर प्रदान कर रहे हैं, जिनकी वजह से नारीशक्ति अबला बनकर बेचारगी की जिंदगी बसर कर रही थी। कृष्ण ऐसे प्रखर मनोचिकित्सक भी हैं, जो यह भली भांति समझते हैं यदि स्त्री-पुरुषों के अवचेतन में वर्षभर के दौरान संग्रहीत होने वाले कामजनित भावों को विरेचन का पर्याप्त अवसर न मिले तो समाज में कदाचार फैलता है, लोगों के पथभ्रष्ट होने का खतरा बढ़ जाता है, इसलिए ब्रजमंडल की महिलाओं और पुरुषों ने फागुनी मस्ती में तमाम वर्जनाओं को दरकिनार कर, स्वच्छंद होकर 'गालियों' को भी इस पर्व की परंपरा से जोड़ा है। कृष्ण गोपियों के साथ उधम मचाकर उन्हें गालियां देने के लिए विवश करते हैं, गोपियां गीत गाती हुई कहती हैं-'मत मार श्याम पिचकारी, अब देऊंगी तोय गारी'। होली की ऐतिहासिकता यह दर्शाती है कि इसकी मदहोशी के रंगों

से सिर्फ वही तरबतर होता है जिसने खोखली धर्मांधता और अतिवादी सोच को तिलांजलि दे दी है। जीवन के रंग और जीने के ढंग के लिए जरूरी है होली जैसी उत्सवधर्मिता। होली के इस निराले स्वरूप का भरपूर मजा मुगल बादशाहों ने भी लिया।

इतिहास में भी दर्ज है कि अकबर फागुन का महीना शुरू होते ही रंगोत्सव की तैयारी प्रारंभ करवा देता था। होली के दिन अकबर के दरबान सोने- चांदी के बड़े- बड़े कलशों को केसर और टेसू का रंग घोलकर भर देते, और दिनभर बादशाह महल के परिसर में अपनी बेगमों व सगे-संबंधियों से रंगों की होली खेलने में व्यस्त रहता, तमाम हिंदू-मुस्लिम मेहमानों का स्वागत उम्दा ठंडाई व मिठाइयों से किया जाता। जहांगीर भी अपने महल में होली के अवसर पर महफिल-ए-होली उत्सव का आयोजन करता था, इस मौके पर मुशायरा और कव्वालियों की महफिल सजती थी। इतना ही नहीं मुगल शासक शाहजहां होली को ईद-ए-गुलाबी यानी रंगों की बौछार के रूप में धूमधाम से मनाता था। मुगलकालीन इतिहास से ज्ञात होता है कि होली के अवसर पर लाल किले के पिछवाड़े यमुना नदी के किनारे होली के अवसर पर पारस्परिक सौहार्द के प्रतीक के रूप होली-मिलन मेले का आयोजन होता था। दरअसल, अतीत की परंपरागत व पुरातनपंथी मान्यताओं से हटकर, होली हर्षोल्लास, हास-परिहास व मदमस्त होकर नर्तन करता हुआ एक ऐसा सतरंगी उत्सव है जो मथुरा के ब्रजमंडल तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह पर्व भारत के सुदूर पूर्वी प्रांतों-मणिपुर, असम, नगालैंड व मेघालय से लेकर कैरीबियन देशों-गुआना, सूरीनाम, ट्रिनिडाड व टोबैगो में बड़ी धूमधाम और मौज मस्ती के साथ मनाया जाता है।

गौरतलब है कि कैरिबियन देशों में सूरीनाम की 37 फीसदी आबादी और गुआना की 33 फीसदी आबादी हिंदू है। असलियत में होली का त्योहार अपने भीतर इतनी जीवंतता लिए हुए है कि इसकी उत्सवधर्मिता को किसी विशेष जाति, धर्म या राष्ट्र की परिधि में बांधना बेहद मुश्किल है। होली के दिन गुआना में नेशनल होलिडे रहता है, और उत्तर प्रदेश व बिहार की शैली में गुआना के शहरी क्षेत्र से लेकर गांवों तक यहां के निवासी अबीर-गुलाल, रंग- पिचकारी, नृत्य और संगीत के जरिये 'फगुआ' मनाते हैं। दरअसल, गुआना व सूरीनाम के प्रवासी हिंदुस्तानियों के वंशज 19वीं सदी में गिरमिटिया मजदूर के तौर पर उत्तर प्रदेश व बिहार से वहां जाकर बसे थे। ट्रिनिडाड व टोबैगो में भी होली का आयोजन भारतीय अंदाज में होता है। होली की मस्ती का आलम कैरिबियाई देशों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि नेपाल व श्रीलंका में में लोग अबीर-गुलाल, व पिचकारी में रंग भरकर फाग खेलते हैं।

थाईलैंड के बौद्ध समाज में होली मनाने का ढंग बिल्कुल हिंदुस्तानी है, बस यहां की बौद्ध सोसायटी मंक होली पालि में एक अलग नाम 'सांग्क्रान' के रूप में पॉपुलर है। इस अवसर पर थाईलैंड के निवासी एक-दूसरे पर रंगों की बौछार करते हैं और मठों में जाकर भिक्षुओं को दान देते हैं। नेपाल की तराई में होली फाल्गुन पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है, नेपाल में होली मनाने का तरीका ठीक उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा और राजस्थान जैसा ही है, जिस तरह से भारत के इन प्रांतों में होली का आगाज फाल्गुन पूर्णिमा से आठ दिन पहले गांव के बीच में एक स्थान विशेष पर लकड़ी का डंडा गाड़कर होता है, जिसे स्थानीय भाषा में होली का डंडा कहा जाता है। वैसे ही नेपाल में एक तालाब के किनारे होली से आठ दिन पहले होली का डंडा गाड़ कर इस उत्सव की तैयारी शुरू हो जाती है। गिले-शिकवे त्यागकर निश्छल अपनापन और मैत्री को विस्तार देने वाला त्योहार और दूसरा नहीं है। हमें मिलकर गंभीरता से सोचना चाहिए कि होली के सुअवसर पर किसी न किसी बहाने फूहड़ता और अश्लीलता फैलाने वालों पर लगाम कैसे कसी जाए।

(लेखक सामाजिक चिंतक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

विशेष

डॉ. घनश्याम बादल

बचाने होंगे मर्यादा के रंग

अपनत्व और खुशी के रंगों से सराबोर करने की परम्परा का नाम है होली। सही मायनों में समझें तो होली केवल रंग बिखेरने या गुलाल लगा देने भर का त्यौहार नहीं वरन वैर भाव को धो डालने वाला जश्न है। ऐसा जश्न जो ऊंच-नीच, बड़े-छोटे, अपने-पराए के अंतर को मिटा देता है। यदि ऐसे हम होली मनाते हैं तो वह अंग्रजी का 'होली ' यानी पावन पर्व बन जाता वरना तो बस परंपरा निवर्हण मात्र है। यह कैसी होली! एक निगाह डालिए अपने चारों तरफ क्या सच में हम अनुराग और प्रेम की होली मना रहे हैं ? क्या किसी भी तरह से हम मिथकों में वर्णित प्रहलाद रूपी भक्ति व भलाई को जला देने के लिए अपने वरदान का दुरुपयोग करने वाली होलिका का दहन अपने मन से कर पा रहे हैं? क्या हम चाहते हैं कोई पड़ोसी या अजनबी हमारे घर होली पर आए? हमारी बहनों, भाभियों या बहू बेटियों के साथ रंग खेले? शायद नहीं। अब नहीं क्यों? इसका जवाब भी हम जानते ही हैं। अगर होली को सच में 'होली भाव' से मनाने की मानसिकता हम विकसित कर लें तो बहुत सी अनैतिकता की बीमारियां तो स्वयमेव ही जल जाएंगी। अब होली जैसे रंग, मस्ती और प्रेम के पर्व यूं ही नहीं बनाए गए थे। हमारी संस्कृति में पर्व हमें अपनों और प्रकृति के समीप लाने का मौका देते थे। एक समय था जब होली के पर्व से करीब सवा महीने पहले वसंत पंचमी को होली का उपला रख दिया जाता था। फिर गांव गलियों में मस्तों की टोलियां 'फगवा' 'कामण' या 'धमाल' गाते हुए घर-घर जाती और होली का ईंधन इकट्ठा करती थी। इसका भी एक सबब था सबका सहयोग लेना सबका योगदान पाना और इकट्ठे होकर मन के सारे पापों, गिले शिकवों को होली की आग में जला डालना होता था तब होली का मतलब। आज क्या है सोचिए। चलिए चालीस, पचास या साठ के दशक की होली की एक झलक की कल्पना करें। फगवा के गीतों के नाम पर कितनी गालियां बरसती थी तब पर कोई बुरा नहीं मानता था, क्योंकि तब ये गालियां प्रेम पगी होती थी। मन के साफ गंगाजल से नहा कर आती थी। उनमें खुन्नस या किसी के अपमान का भाव नहीं, अपनापन था। अलग प्रदेशों में अलग अलग ढंग से होली आधार की स्थापना की जाती है पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पांच उपले रख कर तो राजस्थान के जयपुर, सीकर, चुरु व झुंझुनूं सहित शेखावाटी में एक मोटा डंडा गाड़ कर प्रहलाद के रूप में होलिका का आधार रखा जाता है और फिर प्रतिदिन सवा महीने तक प्रतिदिन ईंधन जमा करके लोकगीत व नृत्य 'गींदड़' आयोजित किए जाते हैं डांडिया रास से मिलता जुलता नृत्य और मुंह में दो अलगोजे लेकर जब वातावरण में मधुर स्वर लहरी गूंजती है तो पूरा वातावरण ही सरस हो उठता है। वैसे ऐसा भी नहीं है कि होली के नाम पर बस गंदगी हो आज भी कुछ सांस्कृतिक रूप से समृद्ध इलाकों में वहां के लोग होलिका के पर्व की महत्ता को जानते हैं। यही वजह है कि आज भी बृज की लठ्ठमार होली, बस्तर की पत्थरमार होली, हरियाणा की कोड़ामार होली, राजस्थान की गाढ़े गुलाबी रंग की 'गैर' मथुरा की राधाकृष्ण होली व पंजाब के होलामहला का रंग आज भी सर चढ़कर बोलता है और वातावरण में 'होली आई रे कन्हाई, रंग बरसे बजा दे बांसुरी जैसे सुमधुर गीत सुनाई देते हैं। होली जहां एक और मनोविकारों के दहन का पर्व माना जाता है वहीं ओझा, तांत्रिक व टोने -टोटके वाले भी इस दिन मायाजाल फैलाते हैं, इसलिए इस दिन अपने बच्चों का खास ख्याल रखना जरूरी है। उत्तर भारत के बहुत से गांवो में आज भी उल्लास के साथ न केवल होलीपूजन होता है वरन वहां अब भी रात में होली के गीत की गूंजते हैं। होलिका को सूत की डोर से बांधकर हल्दी, बेर, बताशे आदि से पूजा जाता है और रात्रि में शुभ मुहुर्त में होलिका दहन किया जाता है। वहां आज भी माना जाता है कि होलिका के दहन करने से मनुष्य के सारे पाप उसकी अग्नि में जल जाते हैं। आज के ही दिन नए अनाज की प्रथम आहुति भी अग्निदेव को अर्पित करते हैं, मगर खेद का विषय है कि होलिका के पर्व का असली जश्न अब वाले उन्ही अंचलों में रह गया है जहां अभी भौतिक प्रगति के पांव पूरी तरह से नहीं पड़े हैं। अधिकांश क्षेत्रों में तो होलिका का पर्व हो-हुल्लड़ या फिर धींगा मस्ती का पर्याय बन कर रह गया है। रंगों की जगह कैमिकल्स, गोबर कीचड़ व अन्य हानिकारक पदार्थों ने होली की गरिमा को लगातार कम किया है वहीं बढ़ती शराबखोरी, भांग व ड्रग्स का इस्तेमाल इस पावन पर्व को अपवित्र कर रहा है। होली के बहाने छेड़छाछ.व अश्लीलता पर रोक लगाने का प्रयास अगर नहीं किया गया तो होली का आनंद व पर्व दोनों ही संकट में पड़ जाएंगे। होली के मान, मर्यादा व मस्ती के बीच संतुलन बनाना होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

शांति से सभी दुखों को खत्म किया जा सकता है

संकलित
दर्शन

हम स्वयं शांति के सर्वश्रेष्ठ प्रहरी हैं। हमें कोई दूसरा व्यक्ति या वस्तु या स्थान शांति दे सकता है, यह एक काल्पनिक विचार है। हम स्वयं शांति से रह सकते हैं और दूसरों को भी शांतिपूर्वक रख सकते हैं। शांति एक मानवीय गुण तो है ही, लेकिन यह आत्मिक शक्ति है। शांति सभी सुखों की मूल है। इससे सभी वैभव एवं ऐश्वर्य की पूर्ति संभव है। शांति द्वारा सभी दुखों का शमन किया जा सकता है। इससे हर रोग का निदान होता है। शांति का माध्यम सभी समस्याओं का समाधान तैयार करता है। शांति ही देश का निर्माण करती है, वहीं अशांति से देश का पतन आरंभ होता है। शांति और अशांति के बीच समाज, समुदाय, वर्ग, कौम, जाति और संस्थाएं गतिहीन हो जाती हैं। देश की उन्नति, विकास और पुनर्निर्माण के लिए शांति का वातावरण अनिवार्य है। शांति एक शब्द मात्र नहीं है। शांति को मन मंदिर में बसाने वाले लोग देव तुल्य होते हैं। इसलिए स्वयं भी शांति के प्रहरी बनिए और दूसरों को भी शांति दूत बनाइए। यही संसार के मंगल का भेद है। शांति से बड़ी कोई दौलत नहीं है। परिवार में शांति एक वट वृक्ष की तरह है, जिसकी छाया में आनंद की अनुभूति पाई जा सकती है। अशांति कालांतर में अग्नि के समान जीवन के हर अंग को भस्म कर देती है। मानवता का मूल इसी शांति के गर्भ में स्थिर है। यदि जीवन को सुख और वैभव से संपन्न करना हो तो निश्चित ही शांति की पूजा करनी होगी।

लक्ष्मी जी कहां निवास करतीं हैं

संकलित
प्रेरणा

एक बार की बात है, राजा बलि समय बिताने के लिए एकान्त स्थान पर गधे के रूप में छिपे हुए थे। देवराज इन्द्र उनसे मिलने के लिए उन्हें ढूँढ रहे थे। एक दिन इन्द्र ने उन्हें खोज निकाला और उनके छिपने का कारण जानकर उन्हें काल का महत्व बताया। साथ ही उन्हें तत्वज्ञान का बोध कराया। तभी राजा बलि के शरीर से एक दिव्य रूपात्मा स्त्री निकली। उसे देखकर इन्द्र ने पूछाः दैत्यराज! यह स्त्री कौन है? देवी, मानुषी अथवा आसुरी शक्ति में से कौन-सी शक्ति है? राजा बलि बोलेः देवराज! ये देवी तीनों शक्तियों में से कोई नहीं हैं। आप स्वयं पूछ लें। इन्द्र के पूछने पर वे शक्ति बोलीं: देवेन्द्र! मुझे न तो दैत्यराज बलि जानते हैं और न ही तुम या कोई अन्य देवगण। पृथ्वी लोक पर लोग मुझे अनेक नामों से पुकारते हैं। जैसे- श्री, लक्ष्मी आदि। इन्द्र बोलेः देवी! आप इतने समय से राजा बलि के पास हैं लेकिन ऐसा क्या कारण है कि आप इन्हें छोड़कर मेरी ओर आ रही हैं? लक्ष्मी जी बोलीं: देवेन्द्र! मुझे मेरे स्थान से कोई भी हटा या डिगा नहीं सकता है। मैं सभी के पास काल के अनुसार आती-जाती रहती हूँ। जैसा काल का प्रभाव होता है मैं उतने ही समय तक उसके पास रहती हूँ। अर्थात मैं समयानुसार एक को छोड़कर दूसरे के पास निवास करती हूँ। इन्द्र बोलेः देवी! आप असुरों के यहाँ निवास क्यों नहीं करतीं? लक्ष्मी जी बोलीं: देवेन्द्र! मेरा निवास वहीं होता है जहाँ सत्य हो, धर्म के अनुसार कार्य होते हों, व्रत और दान देने के कार्य होते हों।

अंतर्मन

आज की पाती

वन हैं तो हम हैं

21 मार्च को अंतरराष्ट्रीय वन दिवस मनाया गया। दुनिया भर में इस उपलक्ष्य में प्रोग्राम आयोजित किए गए। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वनों की सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 28 नवंबर 2012 को हर वर्ष 21 मार्च को अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के रूप में मनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया था। तब से हर वर्ष की 21 मार्च को यह दिवस मनाया जाता है। वन हैं तो हम हैं। जो वृक्ष हमें फल नहीं देते हैं, वो भी बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि ये हमें जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन बिना किसी मूल्य के देते हैं। लेकिन बहुत अफसोस है कि अब वनों की संभाल के लिए लापरवाही बरती जा रही है।

- **रमेश त्यागी**, महासमुंद

ट्रेंड

तत्काल रिहाई का समय

गाजा के लोगों पर भय और भुखमरी का संकट मंडरा रहा है। कोई भी और हमला सब कुछ बदतर बना देगा। फ़िलिस्तीनी नागरिकों के लिए, बंधकों के लिएइससे भी बदतर। यह तत्काल मानवीय युद्धविराम और बंधकों की तत्काल रिहाई का समय है।

-एंटोनियो गुतरेस, यूएन महासचिव

ऐसा नहीं होने दूंगा

डोनाल्ड ट्रंप अफोर्डेबल केयर एक्ट को रद करने से सिर्फ एक वोट दूर थे।अब, वह इसे "समाप्त" करने के लिए फिर से प्रयास करने और मेडिकेयर और सामाजिक सुरक्षा में कटौती करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।

-जो बाइडेन, अमेरिकी राष्ट्रपति

हिस्सेदारी न्याय लाई कांग्रेस

कांग्रेस पार्टी हिस्सेदारी न्याय क्यों लाई है? भारत के एक प्रतिशत सबसे अमीर लोग राष्ट्रीय आय का 22.6 प्रतिशत का लुत्फ़ उठाते हैं। ये मोदी सरकार में हुआ है। 2014 और 2022 के बीच अरबपतियों की नेट संपत्ति 280% से अधिक बढ़ी है।

-मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस अध्यक्ष

रामलीला मैदान गवाह बनेगा

इंडिया यानी भारत एकजुट होकर केजरीवाल की राजनीतिक गिरफ्तारी का विरोध करेगा। सभी भारतीय दल 31 मार्च को एक संयुक्त मेगा रैली आयोजित करेंगे। रामलीला मैदान लोकतंत्र को बचाने एकजुटता के साथ खड़े होने के लिए लाखों लोगों को एक साथ आने का गवाह बनेगा।

-राघव चड्ढा, आप सांसद

करंट अफेयर

गाजा में सहायता भेजने की आवश्यकता है : गुतारेस

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने गाजा जाने का इंतजार कर रहे ट्रकों की लंबी कतार के पास खड़े होकर शनिवार को कहा कि यह गाजा को अधिक से अधिक मात्रा में जीवनरक्षक सहायता देने का समय है और उन्होंने इजराइल एवं हमास के बीच तत्काल संघर्ष विराम का आग्रह किया। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने गाजा के रफह शहर के निकट मिस्र की सीमा में यह बात कही। इजराइल तमाम चेतावनियों के बावजूद रफह में जमीनी हमला शुरू करने की योजना पर काम कर रहा है। गाजा की आधी से ज्यादा आबादी ने वहां शरण ले रखी है। गुतारेस ने कहा कि आगे कोई भी हमला हालात को और भी बदतर बना देगा। उन्होंने कहा कि हालात सिर्फ फलस्तीनी नागरिकों के लिए बदतर नहीं होंगे, बल्कि बंधकों और क्षेत्र के सभी लोगों के लिए भी बदतर होंगे। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में तत्काल संघर्ष विराम के लिए अमेरिका प्रयोजित प्रस्ताव पर सहमति नहीं बनने के एक दिन बाद यह बात कही। गुतारेस ने गाजा में सहायता सामग्री पहुंचाने में आ रही दिक्कतों को बार-बार रेखांकित किया जिसके लिए अंतरराष्ट्रीय राहत एजेंसी इजराइल को जिम्मेदार ठहरा रही हैं। उन्होंने कहा, 'हम मायूसी देख रहे हैं.. सीमा के एक ओर रुके हुए ट्रकों की लंबी कतार है और दूसरी तरफ भुखमरी का साया।'

ऑफ बीट

तापमान बढ़ने से दक्षिण की और जा रही प्रजातियां

पारिस्थितिकी विज्ञानियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक यह समझना है कि जलवायु के तेजी से बदलने के साथ पारिस्थितिकी तंत्र कैसे बदलेगा। हम पहले ही देख रहे हैं कि पौधों और पशुओं की कई प्रजातियां बढ़ते तापमान के कारण ऊपरी स्थानों और ध्रुवों की ओर जा रही हैं। इसकी बहुत ज्यादा संभावना है कि ज्यादातर प्रजातियां अपने पसंदीदा तापमान वाले स्थानों की तलाश में निकलेंगी। लेकिन अजीब बात यह है कि कई प्रजातियां मौजूदा तापमान से कहीं अधिक तापमान में भी जीवित रह सकती हैं। हम अभी तक पूरी तरह से नहीं समझ पाए हैं कि तापमान पारिस्थितिकी तंत्र को इतनी दृढ़ता से क्यों प्रभावित करता है। इस पहेली पर प्रकाश डालने के लिए हमारे नए शोध में ऑस्ट्रेलियाई पौधों की नयी श्रृंखला का इस्तेमाल किया गया और प्रत्येक प्रजाति की न्यूनतम व अधिकतम तापमान प्राथमिकताओं की गणना की गयी है। ये आंकड़े हमें बताते हैं कि औसतन वार्षिक तापमान में 15 डिग्री सेल्सियस से 16 डिग्री सेल्सियस तक बदलाव के कारण कितनी प्रजातियां खो चुकी हैं या पैदा हुई हैं। परिणाम आश्चर्यजनक हैं। ऑस्ट्रेलिया के नमी वाले पूर्वी तट में तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होने पर औसतन 19 फीसदी और प्रजातियां मिली और 14 प्रतिशत प्रजातियां लुप्त हो गयीं।

हमारा पता
हरिभूमि कार्यालय
नजदीक इंडस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक-124001 फोन: 9253681019-20
ई-मेल : haribhoomi@gmail.com
वेब-साइट : www.haribhoomi.com

https://t.me/AllNewsPaper

दैनिक जागरण

रंगों के अभाव में जीवन नीरस हो जाता है

रंग और उमंग का पर्व

रंग और उमंग का अनूठा पर्व हमारा स्वागत कर रहा है। वैसे तो हमारे सारे त्योहार जीवन की एकरसता तोड़ते हैं, लेकिन होली यह काम सबसे प्रभावी ढंग से करती है। यह त्योहार केवल ठहरकर मुक्त मन से उल्लासित होने का अवसर ही नहीं प्रदान करता, बल्कि यह भी कहता है कि मानव मात्र में कहीं कोई भेद नहीं। न कोई ऊंचा है और न नीचा। किसी से बैर नहीं और सबसे मैत्री का भाव जगाने वाले इस पर्व को न केवल पूरे उल्लास से मनाना चाहिए, बल्कि यह संदेश भी ग्रहण करना चाहिए कि होली पर हंसी-ठिठोली के साथ सामाजिक सद्भाव का जो वातावरण निर्मित होता है, वह सदैव हमारे जीवन का हिस्सा बना रहे। रंग-उमंग के बीच सगे-संबंधियों और यहां तक कि अजनबियों से मिलने-जुलने का अवसर उपलब्ध कराने वाली होली संबंधों को प्रगाढ़ करने का एक सशक्त माध्यम भी है। होली मानव मन के कई बंधन तोड़ती है, लेकिन इसका यह अर्थ बिल्कुल भी नहीं कि किसी के मान-सम्मान की परवाह न की जाए। होली पर हंसी-ठिठोली का हंगामा होता है, लेकिन यह हुड़दंग का पर्याय कदापि नहीं होना चाहिए। होली सबको अपनी-अपनी तरह से उल्लास व्यक्त करने की छूट तो देती है, लेकिन मान-सम्मान के दायरे में।

अन्य पर्वों की तरह होली भी हमारी समृद्ध परंपरा और सदियों पुरानी विरासत का स्मरण कराती है। होली पर फिल्मी गीत ही नहीं, सदियों पुराने लोकगीत भी गुंजायमान होते हैं। इन लोकगीतों को सहेजने की आवश्यकता है। होली के अवसर पर मुक्त कंठ से गाई जाने वाली फाग, उड़ते रंग-गुलाल के बीच जोश भरने वाले आल्हा-ऊदल के गायन के साथ देश के अलग-अलग हिस्सों में प्रचलित पारंपरिक गीतों की परंपरा बनी रहे और समय के साथ और समृद्ध हो, इसके लिए सबको अपने-अपने स्तर पर जतन करने होंगे। ऐसे ही जतन हमें उन पारंपरिक व्यंजनों को सहेजने के भी करने होंगे, जो होली पर खास तौर पर बनते हैं। पारंपरिक व्यंजन बाजार की भेंट नहीं चढ़ने चाहिए। आधुनिकता के साथ कदम मिलाने के इस डिजिटल युग में न केवल यह याद रहना चाहिए कि हमें अपनी संस्कृति का संरक्षण करना है, बल्कि यह भी कि उस सामाजिकता को पोषित करना है, जो भारत की पहचान है और जिसके तहत सब एक-दूसरे के सुख-दुख में साझीदार बनते हैं। यदि सामाजिकता सुदृढ़ होती रहे तो हमारी अनेक समस्याओं का निदान हो सकता है और देश को जिस सद्भाव की आवश्यकता है, उसकी पूर्ति भी हो सकती है। होली को किसी धार्मिक अनुष्ठान के रूप में देखना उसकी महत्ता सीमित करना है। यह तो हमारी संस्कृति का ऐसा उत्सव है, जो सबको आत्मीयता के रंग में रंगता है। यह विचित्र है कि कुछ लोग इससे आशंकित रहते हैं कि कहीं रंग के कुछ छींटे उन पर न पड़ जाएं। सबके तन-मन में रंग संग उमंग की तरंग दिखे, इस कामना के साथ होली की बधाई।

सकारात्मक संकेत

बिहार बोर्ड के इंटरमीडिएट परीक्षा परिणाम में छात्राओं का बढ़िया प्रदर्शन एक सकारात्मक संकेत है, जहां अभिभावक भी बेटियों की शिक्षा के प्रति निरंतर जागरूक हो रहे हैं। इसी का प्रभाव है कि वे न केवल पढ़ाई, अपितु अच्छा प्रदर्शन भी कर रही हैं। लड़कियों की शिक्षा के प्रति हाल के वर्षों में जागरूकता बढ़ी है। शहरों में तो पहले भी लड़कियों की पढ़ाई को लेकर जागरूकता थी, पर ग्रामीण क्षेत्रों में हर वर्ग के लोगों में बेटियों को अच्छी से अच्छी शिक्षा देने का जो भाव उत्पन्न हुआ है, वह बदलते समाज का द्योतक है। इस वर्ष जारी परीक्षा परिणाम में 88.84 प्रतिशत छात्राएं सफल रही हैं, जबकि छात्रों की सफलता का प्रतिशत 85.69 है। विज्ञान, कला और वाणिज्य संकाय के 24 टापर में छात्राओं की संख्या 13 रही है, जबकि 11 छात्रों ने इस सूची में स्थान बनाया है। यह परिणाम बता रहा है कि छात्राएं न केवल सफलता के आंकड़ों में अव्वल हैं, बल्कि श्रेष्ठ प्रदर्शन में भी आगे रही हैं। छात्र-छात्राओं की सफलता का प्रतिशत ठीक कहा जा सकता है, पर यह शत-प्रतिशत हो, इसकी समीक्षा भी की जानी चाहिए। जिन संस्थानों ने अच्छा प्रदर्शन किया, वहां देखा जाना चाहिए कि पठन-पाठन का क्या तौर-तरीका रहा, विद्यार्थियों को किस तरह प्रोत्साहित करते हुए उनकी अच्छी तैयारी कराई गई। जहां का प्रदर्शन खराब रहा है, उसका भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि यह स्थिति क्यों रही। उद्देश्य सफलता को और अधिक ऊंचाई तक ले जाना और जहां कमियां हैं, उसे ठीक करने का होना चाहिए। बिहार बोर्ड ने उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन शुरू होने के बाद केवल 29 दिनों में परिणाम घोषित कर दिया, यह भी सराहनीय है। शिक्षा व्यवस्था में सुधार एक चुनौती रही है, यह अच्छी बात है कि उस दिशा में राज्य आगे बढ़ रहा है। कई वर्ष पहले तक जिस बिहार बोर्ड का परिणाम सवालों के घेरे में होता था, वहां हाल के वर्षों से पारदर्शिता और निष्पक्षता ने परीक्षा की पवित्रता को बल दिया है।

राजनीति की भी आदर्श आचार संहिता बने

हृदयनारायण दीक्षित

राजनीति वस्तुतः लोकमंगल की साधना है। इसलिए दलतंत्र को सदैव किसी आदर्श आचार संहिता के दायरे में होना चाहिए

आदर्श चुनाव आचार संहिता को कानूनी रूप से भी सशक्त बनाना आवश्यक। फाइल

उत्सवधर्मी भारतीय संस्कृति में रंग पर्व होली के साथ ही विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक महोत्सव 'आम चुनाव' की प्रक्रिया भी आरंभ हो गई है। इस चुनाव में करीब 97 करोड़ मतदाता हैं। निर्वाचन आयोग द्वारा चुनावी घोषणा के साथ ही आदर्श चुनाव आचार संहिता भी लागू हो गई है। स्वतंत्र, निष्पक्ष और निर्भीक चुनाव निर्वाचन आयोग का संवैधानिक कर्तव्य है। निष्पक्ष, निर्भीक और स्वतंत्र चुनाव में धनबल एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। वोट के बदले नोट की घटनाएं सामने आती रहती हैं। प्रशासन अवैध धन और शराब आदि की धरपकड़ की चुनौती से जूझता है। इसमें कई बार निर्दोष भी उत्पीड़न का शिकार होते हैं। निष्पक्ष चुनाव के लिए आदर्श चुनाव आचार संहिता ही एकमात्र उपाय है, लेकिन संहिता का उल्लंघन करने वालों को दंडित करने की कानूनी शक्ति का अभाव है। बेशक आचार संहिता के पालनीय नियम लोक प्रतिनिधित्व कानून, चुनाव नियम और अन्य अधिनियमों का सार हैं, लेकिन राजनीति के खिलाड़ी प्रायः खेल के नियम नहीं मानते। आचार संहिता के उल्लंघन की घटनाएं लगातार बढ़ी हैं।

आचार संहिता का उल्लंघन करने वालों पर भारतीय दंड विधान, दंड प्रक्रिया संहिता या लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रविधानों के अंतर्गत कार्रवाई होती है। आचार संहिता में संहिता उल्लंघन पर दंडात्मक विधिक कार्रवाई का कोई प्रविधान नहीं है। निष्पक्ष चुनाव साधारण कर्तव्य नहीं है। चुनाव लोकतंत्र का प्राण है। चुनाव से ही सरकार बनती है तो जिम्मेदार विपक्ष भी मिलता है। ब्रिटिश राज में भारत शासन अधिनियम, 1935 बना था। इसकी धारा 201 में चुनाव संबंधी सामान्य प्रविधान थे। संविधान निर्माताओं की दृष्टि में सामान्य प्रविधान अपर्याप्त थे। उन्होंने निष्पक्ष चुनावों के लिए स्वतंत्र चुनाव संस्था गठित करने पर विचार किया। संविधान सभा में डा. आंबेडकर ने स्वतंत्र निर्वाचन आयोग का प्रस्ताव रखा। यह कनाडा के निर्वाचन कानून 1920 जैसा था। चुनाव में धांधली और अनुचित साधनों के दुरुपयोग की चर्चा संविधान सभा में भी हुई। डा. आंबेडकर ने मताधिकार को पवित्र बताया और उससे वंचित करने को निंदनीय। हृदयनाथ कुंजरू ने सारगर्भित टिप्पणी में कहा कि, 'दोषपूर्ण चुनाव से जनतंत्र विषाक्त होगा। लोग चुनाव से यही सीखेंगे कि षड्यंत्र आधारित दलों का निर्माण कैसे होता है।' सभा ने स्वतंत्र निर्वाचन आयोग संबंधी प्रस्ताव पारित किया। इसके बाद लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम बना।

देश में हुए पहले चुनाव के दौरान कोई आचार संहिता नहीं थी। 1961 में चुनाव के नियम बने। आयोग ने 1968 में 'चुनाव चिह्न आरक्षण एवं आवंटन आदेश' जारी किया। यह एक साधारण आदेश था, लेकिन कानूनी शक्ति संविधान, लोक प्रतिनिधित्व कानून एवं चुनाव नियम, 1961 में निहित थी। आदर्श चुनाव संहिता तब अस्तित्व में नहीं थी। चुनाव धांधलियां जारी रहीं। धांधली भी केवल चुनावों के समय ही चर्चा में रहती है। चुनाव सुधार की मांग भी महत्वपूर्ण नहीं बन पाई। आयोग लगभग असहाय था। जब टीएन शेषन मुख्य चुनाव आयुक्त बने तब उन्होंने चुनाव को निष्पक्ष बनाने के लिए अनेक आदेश जारी किए। उन्होंने ही पहली बार 'आदर्श चुनाव आचार संहिता' शीर्षक से एक प्रशासनिक पत्र जारी किया। आचार संहिता में दलीय विचार नीति एवं कार्यक्रम को लेकर आलोचना की अनुमति है। व्यक्तिगत आरोपों और प्रत्यारोपों पर सख्त रोक है, लेकिन व्यवहार में दलों की विचारधारा साम्यवाद, राष्ट्रवाद और पूंजीवाद पर बहस नहीं होती। आचार संहिता की धारा एक उपशीर्षक 'सामान्य आचरण' में 'जाति, संप्रदाय, पंथ या भाषाई समूहों के मध्य अलगाव बढ़ाने वाले कृत्यों का निषेध है।' यह स्वागतयोग्य है, लेकिन चुनाव अभियान में जाति और मजहबी तुष्टीकरण की बातें खुल्लमखुल्ला चलती हैं। आदर्श आचरण अल्पकालिक नहीं होते। सदाचरण सहस्त्रों वर्षों के सांस्कृतिक विकास का परिणाम होते हैं। भारत के दलतंत्र की कोई आचार संहिता नहीं है। केवल चुनावों के दौरान आचार संहिता की बात व्यर्थ है। चुनावी आचार संहिता केवल चुनाव के समय ही चर्चा में आती है। शेष समय दलों पर किसी आचार संहिता का अनुशासन नहीं होता। वे संविधान के नीति निदेशक तत्वों एवं संवैधानिक कर्तव्यों पर भी ध्यान नहीं देते। दल अपने कार्य संचालन में किसी आचार संहिता के बंधन में नहीं होते। बेशक आदर्श चुनाव आचार संहिता के सभी तत्व प्रशंसनीय हैं, लेकिन इन कर्तव्यों के पालन की अपेक्षा केवल चुनाव के दिनों में ही की जाती है। राजनीतिक व्यवस्था में व्यापक सुधार जरूरी है।

राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाएं एक दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। सामाजिक सांस्कृतिक उत्थान से जुड़े महानुभाव सामाजिक आदर्श आचार संहिता का विकास करते हैं। समाज की आदर्श आचार संहिता का पालन प्रायः सब लोग करते हैं, लेकिन राजनीति इससे मुक्त रहती है। आदर्श चुनाव आचार संहिता या ऐसी कोई अन्य संहिता प्रत्येक समय दलों पर क्यों लागू नहीं हो सकती? चुनाव के ही आदर्श आचरण की जरूरत और शेष समय सदाचरण मुक्त होने का औचित्य क्या है? कुछेक दल अपने राजनीतिक अभियानों में अलगाववाद, तुष्टीकरण एवं जातिभेद की चर्चा करते हैं। जबकि कुछ दल हर समय राष्ट्रीय संप्रभुता एवं अखंडता को चुनौती देते रहते हैं। ऐसे दलों से केवल चुनाव के समय आदर्श आचरण की उम्मीद कैसे की जा सकती है? आदर्श दलतंत्र से ही आदर्श आचार चुनाव संहिता के पालन की उम्मीद की जा सकती है। दलतंत्र का बड़ा हिस्सा नियमविहीन है। औसत दल राष्ट्रीय जीवन मूल्य नहीं मानते। अधिकांश दलों के अपने संविधान नहीं हैं। अधिकांश में आजीवन अध्यक्ष हैं। वे दल प्राइवेट प्रापर्टी बन गए हैं।

राजनीति वस्तुतः लोकमंगल की साधना है। दलतंत्र को सदैव आदर्श आचार संहिता के दायरे में होना चाहिए। चुनाव को निर्भीक-निष्पक्ष बनाने के लिए आदर्श चुनाव आचार संहिता जरूरी है, मगर आचार संहिता का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कड़े कानूनों पर भी विचार किया जाए। राजनीतिक दल चुनाव के अलावा शेष समय में भी पार्टी संचालन और जनअभियानों के दौरान राजनीतिक आचार संहिता का पालन करें तो शुभ होगा। आदर्श चुनाव आचार संहिता पर्याप्त नहीं है, इसे कानून की शक्ति चाहिए। देश को प्रत्येक समय प्रवर्तित आदर्श राजनीतिक आचार संहिता की आवश्यकता है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

अपनत्व और उल्लास का उत्सव

गिरीश्वर मिश्र

रंगों और प्रेम भाव से सुवासित होली कात्योहार बिना किसी भेदभाव के हर किसी को आमंत्रित करता है

रंग संग उमंग का संदेश देती होली। प्रेट्र

भारतीय पर्व और उत्सव अक्सर प्रकृति के जीवन क्रम से जुड़े होते हैं। ऋतुओं के आने-जाने के साथ ही वे भी उपस्थित होते रहते हैं। इसलिए भारत का लोकमानस उसके साथ विलक्षण संगति बैठाता चलता है, जिसकी झलक गीत, नृत्य और संगीत की लोक-कलाओं और रीति-रिवाजों सबमें दिखती है। साझे की जिंदगी में आनंद की तलाश करने वाले समाज में ऐसा होना स्वाभाविक भी है। हमारा मूल स्वभाव तो यही सुझाता है कि हम प्रकृति में अवस्थित हैं और प्रकृति हममें स्पंदित है। हमारा अस्तित्ववान होना प्रकृति की ही देन है। जीवन की संभावना अंततः प्रकृति का ही एक दिव्य उपहार है, एक अनोखा उपहार, क्योंकि सारी तकनीकी प्रगति के बावजूद अभी तक जीवन का कोई विकल्प नहीं मिल सका है। यह अलग बात है कि प्रकृति या दूसरे मनुष्यों के साथ रिश्तों को लेकर कृतज्ञता का भाव अब दुर्लभ होता जा रहा है। फाल्गुन के महीने की पूर्णिमा में यह उत्सव पूरे भारत में शुरू होता है और बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। होली का सामुदायिक उत्सव हमें अपने समग्र अस्तित्व को जागृत करने वाला होता है। वह हमें हमारे व्यापक अस्तित्व की याद दिलाता है। आज इस तरह की बातें आसानी से हमारे ध्यान-पटल पर नहीं उतरतीं। वहां जिन विचारों, अनुभवों और भावनाओं की आपाधापी है, उनकी भीड़ में आज न प्रकृति को आंख भर निहारने की फुरसत मिल रही है और न यह सच्चाई ही महसूस हो पा रही है कि हम मूलतः प्रकृतिजीवी हैं, पर इस सच को नहीं झुठलाया जा सकता कि जीवन निरपेक्ष नहीं होता। प्रकृति है तो ही जीवन है। जल, पृथ्वी, आकाश, अग्नि और वायु जैसे तत्व जीवन के अनिवार्य प्राणदायी आधार-स्रोत हैं और आगे भी बने रहेंगे। प्रकृति माता है और हम सब पर प्रकृति का अकूत ऋण है। इस प्रकृति को चुनौती देती और मानवनिर्मित तकनीकी सब पर हावी हो रही है।

नित्य बढ़ते जा रहे तमाम दबावों के बीच डूबता-उतराता आज का आदमी अपने जीवन में तकनीकी के प्रवेश के साथ खुद अपनी प्रकृति या स्वभाव को बेगाना बनाता जा रहा है। उसका तकनीकजीवी बनता जा रहा मानस जीवन और प्रकृति के साथ अपने अटूट रिश्ते को भूलता-बिसराता जा रहा है। अब उसे पग-पग पर तकनीक की जरूरत पड़ रही है। अब दुख-सुख, प्रेम-मोहब्बत और मान-मनौवल जैसी भावनाओं का इजहार-इकरार सब कुछ मानवीय संवेदना से दूर तकनीक के सुपुर्द होता जा रहा है। जीवन की गाड़ी उसी के भरोसे चल रही है। तकनीकजीवी का जीवन आदमी का अपना जीवन नहीं होता है। वह टिका हुआ है सूचना के अनवरत प्रवाह पर। इसमें आगत से अधिक अनागत या कहें तो जो आने वाला है या आ सकता है उसकी चिंता और भय वर्तमान को डसे जा रहे हैं। इसलिए कुछ करने से अधिक जो हो रहा है उसकी पल-पल निगरानी और हिसाब-किताब करते रहने की जरूरत बढ़ती जा रही है। लोग लगातार ई-मेल या वाट्सएप देखने को बेताब रहते हैं और मोबाइल पर उनकी अंगुली लगातार चलती ही रहती है। श्वास-प्रश्वास की तरह मोबाइल-संचालन हमारे जीवन का एक अहर्निश चलने वाला व्यापार होता जा रहा है।

मनुष्य समाज में पैदा होता है और उसी में पलता-बढ़ता भी है। होली के दौरान उत्फुल्लता मन और वन, दोनों में एक साथ निखर कर सामने आते हैं। वसंत का चरम उत्कर्ष तब होता है, जब शीत काल की ठिठुरन बीतने के बाद परिवेश में ऊष्मा का संचार होता है। खिलखिलाते रंग-बिरंगे फूलों के गहनों से लदी-सजी प्रकृति सबके स्वागत के लिए सजीव हो उठती है। तब खुद को जीवन-कार्य में जोड़ने की तैयारी का अवसर मिलता है। खेती-किसानी के लिए भी होली एक प्रस्थान बिंदु जैसा होता है। चैत के महीने में वासंतिक नवरात्र के साथ भारतीय नववर्ष शुरू होता है। नए की भावना द्वंद्वों और संघर्षों से उबरते हुए नए समारंभ करने की प्रेरणा वाली होती है। रंगों और प्रेम भाव से सुवासित समानता और समता की गारंटी देने वाला होली का उत्सव आवाज देता है कि अपने-अपने अहं का विसर्जन कर आगे आओ। यह बैर का दहन कर उल्लास का प्रसाद बांटने का अवसर होता है। रंगों में भीगने-भिगोने के बाद होली के दिन रुचिकर व्यंजन भी बनते हैं और परिजनों के साथ खान-पान का आनंद लेते हैं। संगीत और काव्य की दृष्टि से होली का अवसर सृजनशीलता को आमंत्रित करता रहा है।

होली पर सभी सबको एक रंग में रंगने को आतुर रहते हैं। सबको एक-सा बनाने का प्रयोजन सौहार्द और निकटता की भावना को जगाना होता है। इसका एक अभिप्राय यह भी है कि हम उस अविभक्त अव्यय भाव को महसूस करें, जो अव्यक्त होकर सबके अंतर्मन में व्याप्त रहता है। अपनी-अपनी अस्मिताओं को बचाने और बनाने का उत्सव तो सब करते हैं, पर उसे छोड़कर व्यापक समष्टि की अस्मिता अपनाने का साहस दिलाना होली का प्रयोजन है। अपनी अस्मिता को छोड़ या उसका विस्तार कर बड़ी अस्मिता को अंगीकार करना सामाजिक परिवर्तन की शक्ति होती है। इसके साथ समानताओं की पहचान भी जरूरी है। हम सिर्फ एक दूसरे से भिन्न हैं, यह कहना अधूरी बात होगी और असत्य भी, क्योंकि हम सबमें व्यापक समानताएं भी हैं। मनुष्य होने के लक्षण सबमें हैं और मनुष्यता भी इसीलिए जीवित है, क्योंकि सभी किसी न किसी सीमा तक मनुष्यता से जुड़े हैं। होली का संदेश यही है कि संकुचित और क्षुद्र अस्मिताओं से ऊपर उठकर देश और समाज की अस्मिता का अंग बनते हुए ही हम उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।

(लेखक शिक्षाविद् हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

रंग

जीवन में रंग है इसीलिए वह जीवन है। उसका समस्त आकर्षण रंगों में ही छिपा है। यदि यह प्रकृति रंगों से भारी न होती तो बहुत बेनूर होती। उसका सारा सौंदर्य इन्हीं रंगों में समाया है। रंग हैं तो जीवन में उल्लास है, बेरंग जीवन नीरसता का पर्याय है। हर रंग की एक भिन्न प्रकृति होती है और इस तरह हर रंग कुछ कहता है।

रंगों का भी अपना दर्शन है। रंग की दृश्यात्मक अनुभूति के लिए प्रकाश का होना आवश्यक है। रात के गहन अंधकार में तो सारे रंग सिर्फ कालिमा में बदल जाते हैं। ऐसे ही जीवन के सच्चे रंगों के लिए चेतना और ज्ञान का प्रकाश होना आवश्यक है। अज्ञानता की कालिमा में तो सारे रंग होते हुए भी उनकी अनुपस्थिति हो जाती है। विज्ञान कहता है कि रंग वस्तु में नहीं होता, बल्कि वह सूर्य के प्रकाश में होता है। सूर्य के प्रकाश में मौजूद सात रंगों वाली किरण जब किसी वस्तु पर पड़ती है तो उस वस्तु द्वारा कुछ रंगों का कोई अवशोषण कर लिया जाता है। शेष वापस लौटे रंग, उस वस्तु के रंग को प्रदर्शित करते हैं।

श्वेत रंग, जो कि शुभ्रता का प्रतीक है, प्रकाश की अधिकांश मात्रा को वापस लौटा देता है। पूर्ण प्रकाश का परावर्तन कर देने वाली वास्तु पारदर्शी होती है। जबकि कालिमा का प्रतीक काला रंग, पूरे प्रकाश का अवशोषण कर लेता है। मनुष्य का जीवन भी तो कुछ ऐसा ही है। कोई व्यक्ति यदि खुद को प्राप्त होने वाली हर एक वस्तु का बस स्वयं ही संपूर्ण उपभोग कर ले तो सामाजिक दृष्टि से उसे सम्मान प्राप्त नहीं हो सकता। इसके विपरीत जो स्वयं के लिए कुछ रखकर शेष समाज को लौटा देता है, समाज में उसका व्यक्तित्व उतना ही शुभ्र और श्रेष्ठ माना जाता है। रंग मौन होकर भी जो कुछ कहते हैं, उसे हम जितना अधिक समझ पाते हैं, जीवन में रंगों की उपस्थिति उतनी ही अधिक होती है।

डा. प्रशांत अग्निहोत्री

परंपरा में रचा बसा राग-रंग

डा. मोनिका शर्मा

होली में खानपान से लेकर मेलजोल तक हर आयु वर्ग के लोग एक साझे सुख को जीते हैं

औपचारिकता से परे होली का पर्व आमजन को साथ और स्नेह की डोर से बांधता है। उड़ते गुलाल और फगुनाहट की धुन में बदला हालचाल भारतीय जनमानस को एक दूजे से जोड़ता रहा है। नेह के भाव-चाव का यह उत्सव रिश्तों पर रीझने का प्यारा अवसर होता है। लोकगीतों में ध्वनित होते जमीनी जुड़ाव की धुन सुनने-सुनाने का मौका बन जाता है। भारत की पावन धरा पर तो ईश्वरीय अवतारों ने भी उत्सव की इस रंगीन छटा को आम मनुष्यों के समान ही जीया है। पौराणिक कथाएं हमारे आराध्य भगवान श्रीकृष्ण, शिवजी और श्रीराम सभी के होली खेलने का वर्णन लिए हैं। ब्रजभूमि पर राधा-कृष्ण और गोपियों की ठिठोली संग होली खेलने और काशी के मणिकर्णिका घाट पर शिवजी के श्मशान में होली खेलने की बात भी शामिल है। वहीं अवध में प्रभु श्रीराम और सीता माता के होली खेलने का भी उल्लेख है। नेह के इसी भाव-चाव को तब से अब तक भारत का जनमानस हर वर्ष साझी संस्कृति के जीवंत भाव संग जीता आया है। आदिम उल्लास का यह पर्व असल में आत्मीय जुड़ाव की अनौपचारिक खनक साथ लाता है। गांव की चौपाल से जुड़ी स्मृतियां आज महानगरों में बसी बड़ी पीढ़ी के मन में दस्तक देने लगती हैं। पूरी प्रकृति इस उत्सवीय छटा को जीती नजर आती है। होली के पर्व पर इंसानों के भाव-चाव भी बहुत मुखर होते हैं। इस सतरंगी उत्सव पर जीवन से जुड़े रंग और रंगों में रचा-बसा जीवन का ताना-बाना स्मरण हो आता है। मेलमिलाप और सामाजिकता का भाव सतरंगी आभा से जीवन को सजा देता है।

होली की उत्सवीय उमंग में खानपान से लेकर मेलजोल तक हर आयु वर्ग के लोग एक साझे सुख को जीते हैं। रिश्तों पर रीझने और अनजान लोगों को भी रंग डालने के अक्खड़पन का मानवीय मेल इसको साझी संस्कृति का पर्व बनाता है। कहीं कोई औपचारिकता नहीं। अपनेपन से भरा राग-रंग और सामुदायिक जुड़ाव की धुन ही मुखर होते हैं। आध्यात्मिक-सामाजिक भावों से जुड़ी खुशियों संग उदारता और सहिष्णुता सिखाते इस पर्व पर गूंजते स्थानीय गीतों में लोक का स्वर मुखर होता है। कहीं कृष्ण भक्ति के रस में डूबे लोग तो कहीं अपने आराध्य के चरणों में गुलाल लगाने की परंपरा। होली पर ब्रजभूमि की गोपियां भी याद आती हैं और राधा-कृष्ण भी। होली पर अबीर उड़ाते रघुवीर भी स्मरण हो आते हैं। यह पर्व हर उम्र, हर समुदाय के लोगों को ऊर्जावान और जीवंत बने रहने का भी संदेश देता है। जीवन को सरस-सुंदर बनाने वाला रंगपर्व भारतीय संस्कृति की सबसे प्यारी उत्सवीय परंपराओं में से एक है। गहरे रंगों से रंगे-पुते चेहरों का आपसी मेलजोल मानवीय संवेदनाओं को और उजला बना जाता है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

चुनाव की बिसात पर भाजपा और कांग्रेस

'कौन कितने पानी में' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में संजय गुप्त ने 2024 की चुनावी बिसात पर अपना-अपना दमखम दिखाने वाले सत्ता पक्ष और विपक्ष की जमीनी मजबूती का जो आकलन किया है, वह विपक्ष के लिए चिंता का विषय बनना चाहिए। लोकतंत्र में मतदाता का रुझान ही महत्वपूर्ण होता है और वर्तमान में यह रुझान मोदी सरकार द्वारा लोकहित और देशहित में किए गए विकास कार्यों की तरफ है। जाति, संप्रदाय, परिवार और भाई-भतीजावाद की दूषित राजनीति से बंधा रहने वाला आम मतदाता जब से मोदी सरकार की आयुष्मान, उज्ज्वला, प्रधानमंत्री आवास जैसी अनेक जनहितकारी योजनाओं से लाभान्वित हुआ है तभी से उसे बहुमत की मजबूत सरकार और उसकी ताकत का अहसास होने लगा है। अब केंद्र सरकार द्वारा भेजी गई धनराशि बिचौलियों द्वारा बीच में ही खुर्द-बुर्द न होकर बैंक खाते के माध्यम से शत-प्रतिशत रूप से लाभार्थी को प्राप्त हो रही है। सरकार की विकास योजनाओं से मिलने वाला लाभ देश की आम जनता के जीवन स्तर को ऊपर उठाने वाला सिद्ध हो रहा है। ठीक इसके विपरीत जब डा. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस देश की सत्ता पर विराजमान थी तब अरबों रुपये के घोटालों ने देश को आर्थिक रूप से कमजोर किया। 9/11 के मुंबई हमले के रूप में देश ने पाकिस्तान पोषित आतंकवाद का दंश झेला। तुष्टीकरण को संपुष्ट करने के लिए प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह द्वारा देश के संसाधनों पर पहला हक अल्पसंख्यक समुदाय का बताया गया। आज देश की जनता केंद्रीय सत्ता के इन दो ध्रुवों को ठीक से परख रही है। 2024 में राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा और कांग्रेस ही एक दूसरे के आमने-सामने हैं। बाकी क्षेत्रीय दल या तो स्वतंत्र होकर चुनाव लड़ने जा रहे हैं अथवा अपनी निष्ठा के अनुरूप भाजपा और कांग्रेस के साथ खड़े हो गए हैं। ऐसे में इस चुनावी बिसात पर कौन कितना दमखम दिखा पाता है, यह भविष्य के गर्त में है।

pandeyvp1960@gmail.com

नशे की मार

पंजाब में इन दिनों अव्यवस्था का आलम नजर आता है। पंजाब में लाखों लोग नशे का शिकार हो गए हैं। ड्रग्स का कारोबार फलफूल रहा है। एक फिर पंजाब में जहरीली शराब से कई लोगों की मौत हो गई है। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार पंजाब में 30 लाख लोग नशा करने के आदी हो गए है। खालिस्तान समर्थक तत्वों के बढ़ते प्रभाव और ड्रग्स का कारोबार बढ़ने से राज्य सरकार की कमजोरी साबित हो रही है। देश में मादक पदार्थों के उपयोग और तस्करी के मामले में पंजाब तीसरे स्थान पर है। लोगों की सुरक्षा और सुरक्षित जीवन सरकार की पहली प्राथमिकता होना चाहिए। खालिस्तान समर्थक तत्वों का उपद्रव, जमीनों पर अतिक्रमण, जहरीली शराब से मौतें और नशे का बढ़ता कारोबार जैसे अपराध पंजाब की धरती पर फलफूल रहे हैं। अव्यवस्था के दौर से गुजर रहे पंजाब को बचाया जाए।

कांतिलाल मांडोत, नई दिल्ली

संवेदनशील हो सरकार

मीडिया और तकनीकी उन्नति के साथ भारतीय चुनावी प्रक्रिया में बदलाव की धारा शुरू हो रही है। चुनावी प्रक्रिया के शुरू होने से पहले ही केंद्र सरकार ने विकास के लक्ष्यों को साकार करने के लिए कई आर्थिक योजनाओं को शुरू किया है। इनमें से एक अहम योजना है वैश्विक प्रौद्योगिकी उत्पादन में भारत की उपलब्धता, जो नई नौकरियों और व्यापार के अवसरों को उत्पन्न करेगी। चुनाव की प्रक्रिया में भी बड़ा बदलाव आ रहा है। पंजीकृत मतदाताओं की संख्या में वृद्धि हुई है। ये नए मतदाता राजनीतिक प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं और अपनी आवाज को सुनाने का साहस दिखा रहे हैं। इससे निर्वाचन क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण आ रहा है, जिसमें गैर पारंपरिक राजनीतिक दलों के बाहर से भी उम्मीदवारों को मौका मिल रहा है। यह दिखाता है कि भारत नई दिशा में बढ़ रहा है। सरकार की संवेदनशीलता ने देश में उत्साह भरा है और लोगों की आशाएं बढ़ी हैं।

अवनीश कुमार गुप्ता, नई दिल्ली

मेलबाक्स

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए; नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****